(1)

उत्तरीय पूर्वीय पहाड़ों का सबसे अधिक सुंदर शहर रीगम बाला था।

एक और यह आधुनिक नगर था और दूसरी और प्राचीन गुरुकुलों और मठो का संसार था। आधुनिक आबादी उन प्राचीन मठों के सामने ऐसी ही लगती थी जैसे किसी नइ नस्ल ने पिछलों से नाता तोड़ कर अपनी दुनिया अलग बसा ली हो।

आधुनिक आबादी में वह सब कुछ था जो एक मार्डन नगर में होना चाहिये - और सच्ची बात तो यह है कि आधुनिक आबादी उन यात्रियों पर ही निर्भर करती थी जो रीगम बाला की प्राचीन दुनिया का दर्शन करने के लिये आते है।

आधुनिक आबादी में एक ऐसी पाठशाला भी थी जिसमें देशीय और विदेशीय विध्यार्थीयों को पुरातत्व संबंधी शिक्षा दी जाती थी। विदेशीय विध्यार्थीयों के लिये एक उत्तम बोर्डिंग हाउस भी बनाया गया था - मगर उसमें देशीय विध्यार्थी भी ठहरते थे।

निलनी कारमाउन्ट वेलजियम से आई थी और बौध्ध दीक्षा पर रिसर्च कर रही थी। वेलाजियम के पुरातत्व विभाग ने उसे यहाँ स्कालर शिप पर भेजा था। अपने साथ वह कई परिचय पत्र भी लाई थी और उन तमाम लोगों से मिली थी जिनके नाम पत्र लिखे गये थे। विलियम लेकरास नाम के आदमी ने उसे बहुत प्रभावित किया था। वह बहुत ही हमदर्द और निर्मल स्वाभाव का आदमी साबित हुआ था - उसका संबंध फ़्रांस के पुरातत्व विभाग से था और वह भी यहाँ बौध्ध मूर्तियों पर रिसर्च कर रहा था, मगर उसका संबंध पाठशाला से नहीं था। अपने रिसर्च में उसे किसी की सहायता लेनी थी - इस सहायता के लिये उसने निलनी ही को चुना था।

और इस सहायता के लिये वह निलनी को एक उचित रक़म हर महीने दिया करता था।

सप्ताह में दो बार दोनों एक जगह बैठ कर काम लिया करते थे।

आज भी पाठशाला की पुस्तकालय में निलनी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी, मगर नियत समय से आधा घंटा बीत गया मगर वह नहीं आया। यह पहला अवसर था जब उससे इस प्रकार की गलती हुई थी, वर्ना साधारण स्थिति में उससे अधिक समय का पालन करने वाला कोई दूसरा निलनी की नजरों से नहीं गुजरा था।

आधा घंटा बाद वह पुस्तकालय से उठ गई - बोर्डिंग हाउस में पहुँची और जैसे ही अपने कमरे का दरवाज़ा खोला - अंदर एक लिफ़ाफ़ा पड़ा हुआ मिला जिस पर उसी का नाम लिखा हुआ था।

लिफ़ाफे से लेफरास का टाइप किया हुआ पत्र बरामद हुआ।

"मिस कारमाउन्ट !

मुझे अत्यंत दुख है कि आज मैं न आ सकूंगा और कदाचित दो महीने तक न मिल सकूं - सुदूर पूर्व की यात्रा पर रवाना हो रहा हूँ - इन दो महीनों की रक़म तुम्हें दो तीन दिन के अंदर चेक द्वारा मिल जायेगी। तुम कहोगी कि जब काम ही नहीं तो फिर पारिश्रमिक कैसा। इसलिये काम भी बता रहा हूँ। आज कल एक आदमी मेरे पीछे पड़ गया है, वह मेरे रिसर्च में रोड़े अटका रहा है, अगर तुम संबंध में मेरी सहायता कर सकीं तो उसे नीचा देखना पडेगा। तुम्हें इस संबंध में केवल इतना करना है कि दो स्थानीय आदमी से मिल बैठो। यह काम तुम इसलिये अच्छी तरह कर सकती हो कि हिंदुस्तानी अच्छी तरह बोल और समझ सकती हो। तुम्हें उनसे मित्रता करके उनके मिलने जुलने वालों पर नजर रखनी है। मेरा आसिस्टेंट मैथून तुमसे बराबर संबंध स्थापित रखेगा। जिन दोनों आदमियों से मित्रता करने के लिये मैं कह रहा हूँ वह मेरे उन प्रतिद्वंदी के नौकर है और एडल्फी के कमरा नंबर २७ में ठहरे हुये है। मर्द का नाम कासिम है और उसके साथ जो लड़की है उसका नाम सुमन नागरकर है। तुम बहुत विवेकी हो - इसलिये मुझे पूरा विश्वास है कि यह काम तुम बहुत ही उत्तम ढंग से कर सकोगी। अगर तुम यह काम करना चाहो तो मैथून को बता देना। न करना हो तब भी उसे सूचित कर देना।"

निलनी ने कागज़ तह करके फिर लिफ़ाफे में रख दिया और लम्बी साँस लेकर आगे बढ़ गई। यह काम अपनी नवैयत के विचार से दिलचस्प भी था और संदिग्ध भी। निलनी सीधा साधा जीवन व्यतीत करती आई थी।

वह बड़ी देर तक इसके बारे में सोचती रही, फिर इसने निर्णय किया कि मैथून से संबंध स्थापित करके कम से कम स्थिति तो समझनी ही चाहिये - अगर मामिला खतरनाक नहीं है तो फिर इस रक़म को क्यों गंवाया जाये।

इस निर्णय के बाद वह अपने कमरे से निकल कर कामन रूम में आई। यहाँ टेली फोन भी था और वह लेफरास का फोन नंबर भी जानती थी - उसे यह भी मालूम था कि मैथून लेफरास ही के साथ रहता है।

उसने उस पत्र के बारे में फोन पर मैथून को बताया।

"हाँ मिस कारमाउन्ट।" दूसरी ओर से आवाज आई "मोसियो लेफरास ने इस संबंध में मुझे बताया है। कल आपको चेक मिल जायेगा।"

"मगर मामिला क्या है - मेरा साहस तो नहीं पड़ता।"

"कोई खास बात नहीं है - मैं यह काम ख़ुद इसलिये नहीं कर सकता कि मांसियो लेफरास का प्रतिद्वंदी मुझे जानता पहचानता है?"

“मैं वास्तव में यह जानना चाहती कि मामिले की नवैयत क्या है।”

“मिस्टर लेफरास को प्रतिद्वंदी का विषय भी वही है जो मिस्टर लेफरास का है - अर्थात दोनों आदमी एक ही विषय पर रिसर्च कर रहे है- मगर मिस्टर लेफरास उससे काफ़ी आगे बढ़ चुके है - उन्होंने वीरान किले के आस पास एक समाधिस्थ बस्ती का पता लगाया है जो आधुनिक पुरातत्व से भी बहुत पहले की है - उनका अनुमान है कि विद्यामान पुरातत्व का निर्माण - उस बस्ती के मसधिस्थ हो जाने क लगभग एक हजार वर्ष बाद हुआ है - ओ हो - ठहरिये - आप कहीं और मिलिये - फोन पर मैं पूर्ण रूप से न बता सकूंगा।”

“आप पाठशाला के पुस्तकालय में आ जाइये - मैं वहाँ आपकी प्रतीक्षा करूंगी - कितनी देर में आप वहां पहुंच जायेंगे ?”

“अधिक से अधिक बीस मिनिट बाद।”

“अच्छी बात है - मैं पुस्तकालय में चल रही हूँ।” निलनी ने कहा और रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

थोड़ी देर बाद वह अपने कमरे से निकल कर पुस्तकालय की ओर जा रही थी।

ठीक बीस मिनिट बाद मैथून से मुलाक़ात हुई। वह छोटे कद और शक्ति शाली शरीर का आधेड आदमी था। उसने धीरे से कहा।

“बात यह है कि मैं फोन पर पूरी बात नहीं बताना चाहता था।”

“मैं समझ गई थी।”

“मोसियों लेफरास ने उस समाधिस्थ बस्ती का पता तो लगा लिया है, मगर अभी यहाँ की सरकार को उसकी सूचना नहीं दी है।”

“क्यों ?”

“मोसियों लेफरास का प्रतिद्वंदी बड़ा आदमी है। वह निश्चय ही कोई ऐसा चक्कर चला देगा कि मोसियों लेफरास अपनी इस कृति के पुरस्कार से वंचित कर दिये जायेंगे - अर्थात यह उनकी कृति न समझी जायेगी।”

“ओह अच्छा ?”

"अब स्थिति यह है कि अपने अनुसंधान की सच्चाई के लिये वह चोरी छिपे खोदाई करवा रहे है। इसके लये उन्होंने कई स्थानीय आदमियों से सहायता प्राप्त की है।"

"मेरे विचार से उन्होंने यह अच्छा नहीं किया।"

"क्यों मिस कारमाउन्ट ?"

"स्थानीय आदमी अपनी सरकार को सूचित कर देंगे।"

"नहीं....वह ऐसा नहीं कर सकेंगे। मोसियों लेफरास ने बड़ी चतुराई से काम लिया है। उन्होंने बताया है कि वह एक बहुत प्राचीन समाधिस्थ खजाने की खोज में है - और वह स्थान वही है, अगर सरकार को पता चल गया तो हम सब उस खजाने से वंचित रह जायेंगे - वैसे हम सब बराबर के हिस्सेदार रहेंगे।" वह अपनी बाई आँख दबा कर मुस्कुराया। निलनी भी मुस्कुराई। कुछ देर तक सोचती रही, फिर बोली।

"मुझे क्या करना पड़ेगा !"

"वही जो मोसियो लेफरास ने अपने पत्र में लिखा था - हाँ - उन पर आप यह प्रकट नहीं करेंगी कि आप हिंदुस्तानी बोल और समझ सकती है....उनसे सदैव अंग्रेजी में बात कीजियेगा।"

"हूँ.....अच्छा.....और कुछ ?"

"मैं आपको पूरी बात बता रहा हूँ ताकि आप अच्छी तरह समझ जायें - आप यह तो जानती है कि मोसियो लेफरास का संबंध फ्रांस के पुरातत्व विभाग से है - लेकिन उनका प्रतिद्वंदी आरागान सरकारी आदमी नहीं है....बहुत ही धनवान आदमी है और पुरातत्व से दिलचस्पी रखता है। मिश्र में भी खोदाई कर चुका है - यहां भी उसकी बड़ी पहुंच है - इसलिय हर प्रकार से मोसियो लेफरास के मार्ग से रोड़े अटका रहा है - यहाँ का एक प्रसिध्ध आदमी उसकी सहायता कर रहा है - उसका नाम कर्नल विनोद है - और हमें वास्तव में कर्नल विनोद ही के कामों को जानते रहना है। जिन दो आदमियों के बारे में पत्र में लिखा गया था वह कर्नल विनोद के खास आदमी है, आपको उन दोनों की वह बातें खास तौर से नोट करनी होंगी जो वह हिंदुस्तानी ने करेंगे। उन्हीं बातों से हमें कर्नल विनोद के बारे में जानकारी प्राप्त हो सकेगी।"

"तो सारांश यह है कि मुझे उस आदमी कर्नल विनोद ही के बारे में जानकारी प्राप्त करनी पड़ेगी।"

"जी हाँ ....।" मैथून ने कहा और कासिम तथा सुमन नागरकर की हुलिया बताने लगा।

कैप्टन हमीद वाला काफिला एडलफी में दाखिल हुआ। हमीद को लेरी फरास और उसके साथियों के साथ ही सफ़र करना पड़ा था, क्योंकि उसकी गाड़ी तो गयाब हो चुकी थी।

लेरी फरास की हँसने हँसाने वाली बातों पर हमीद रास्ते पर कुर्बान होता आया था और रीमा उसे टोकती रही थी। कभी कभी यह भी कह देती कि - इतनी जोर से न हँसो - कहीं नाक से स्प्रिंग न निकल जायें, लेकिन वह लेरी फरास में दिलचस्पी लेता रहा था।

एडलफी में उन्हें कमरे मिल गये और संध्या तक वह अपने कमरों में आराम करते रहे। रीमा और हमीद एक ही कमरे में थे और वह बात बात पर हमीद को बोर करती रही थी। अन्त में हमीद थकी थकी सी आवाज़ में कराहा था।

"मुझे तो ऐसा महसूस हो रहा है जैसे चमत्कारिक ढंग से मेरी शादी हो गई हो।"

"नारी बिना नर अपूर्ण है।" रीमा ने कहा।

"हाँ हाँ - अब दुम निकल आई है मेरे....।" हमीदे बोला।

"बच्चों की सी बातें न करो - तुम्हें ऐसा अभिनय करते रहना है जैसे भविष्य निकट में हम विवाह कर लेंगे।"

"इसके लिये मुझे क्या करना पड़ेगा ?"

"मेरी हाँ में हाँ मिलाना होगा - अगर किसी अवसर पर मैं चप्पल भी खींच मारू तो तुम्हें बुरा नहीं मानना होगा।"

"ध्येय ?"

"लेरी फारस को यह विश्वास दिलाना कि तुम पूरी तरह मेरी मुठ्ठी में हो।"

"लाभ !"

"फिर वहीँ मूर्खो जैसा प्रश्न ?"

"चप्पल खींच मरो - शायद समझ में आ जाये।"

"यह बात मैंने मिसाल के तौर पर कही थी।" रीमा झल्ला कर बोली।

"एक बात मेरी समझ में अब तक नहीं आई।"

"कौन सी बात ?"

"तुम उस संध्या से मुक्ति चाहती हो न।"

"हाँ ?"

"तो क्या लेरी फरास या लेफरास की मृत्यु से यह ध्येय पूरा हो सकता है !"

"बिलकुल नहीं।"

"फिर तुम क्या करना चाहती हो ?"

"यही तो समझ में नहीं आता कि अब मुझे क्या करना चाहिये, तुमसे गठ जोड़ कर बैठी हूँ।"

"इस संस्था में किस प्रकार सम्मिलित हुआ जा सकता है।"

"यह संस्था के कर्मचारियों पर निर्भर करता है - वैसे वह ख़ुद जिसे सम्मिलित करना चाहते है उसे जबरदस्ती सम्मिलित कर लेते है।"

"यह किस प्रकार !"

"जबरदस्ती उठा ले जाते हैं, फिर ब्रेन वाशिंग करके एक सप्ताह के अंदर ही अपना बना लेते हैं। आदमी हमेशा के लिये भूल जाता है कि वह कौन था—वह अपना नाम तक भूल जाता है -फिर वह धीरे धीरे उसकी योग्यताओं को उभरते हैं—कभी कभी ऐसा भी होता है कि वह केवल द्रष्टिकोण बदल देते है आदमी का पिछला व्यक्तित्व वही रहेता है -मिसाल के तौर पर - अगर वह चाहे तो तुम्हारे हाथों कर्नल विनोद को क़त्ल करा सकते हैं- तुम पूरी तरह होश में रहोगे -यह जानते रहोगे कि तुम केप्टन हमीद हो और वह तुम्हारा चीफ कर्नल विनोद है—मगर तब तुम्हें कर्नल विनोद वह नजर नहीं आयेगा जो पहले नजर आता रहा था।तुम उसे एक अच्छा आदमी समजने के बजाय बहुत ही बुरा समजने लगोगे - वह एक हिंसक नजर आयेगा—ऐसा हिंसक जिसे मर डालने में तुम्हें मानव और मानवता की भलाई नजर आयेगी।"

part 2

रीगम बाला - 2

★★★★★ (3) 3.5k 6.4k

(2)

“अरे बाप रे ---“ हमीद बौखला कर बोला।

“मगर मैं ऐसा नहीं होने दूँगी!” रीमा ने धीरे से कहा।

हमीद को उसकी आंखों में पूर्ण संकल्प की ज्योति दिखाई दी।वह चुपचाप उसे देखता रहा। वह अत्यंत गंभीर नजर आ रही थीं। होंठ मींचे हुये थे और भवें सिकुड़ गयी थीं।

“सुनो..”थोड़ी देर बाद वह हाथ उठा कर बोली “ किसी प्रकार कर्नल तक सूचना भिजवा दो कि अब अगर विमल हाथ आये तो वह उस पर बिलकुल विश्वास न करे।“

“ क्या मतलब ?”वह संभल कर बैठ गया।

“अब वह कर्नल से दगा करेगा।“

“साफ साफ़ कहो।”

“इस बार तुम दोनों चारों ओर से जकडे जा रहे हो -नातूना से जो भूल हुई थी वह भूल तीसरी नागिन से नहीं होने पाएगी—विमल को प्राप्त करके फिर उसे कर्नल के हाथों में दे देना लेक्रस की योजना में शामिल है—उसकी स्मरण शक्ति वापस आ जायेगी और वह कर्नल विनोद को उस स्थान तक ले जायेगा जहां मैं एक प्राचीन आत्मा के रूप में उससे मिला करती थी - वहाँ पहुंचते ही कर्नल विनोद एक बेबस चूहे के समान फांस लिया जायेगा।“

“ओह !”हमीद ने बिस्तर छोड़ दिया।

“अधिक बौखलाने की आवश्यकता नहीं -बैठ जाओ।“रीमा ने कठोर स्वर में कहा।

“मेरे पास ऐसा कोई साधन नहीं जिससे कर्नल को इस खतरे की सूचना दूं।” हमीद चिन्तित होकर बोला।

“चिंता न करो ?”

“क्या जान बुझ कर विमल कर्नल को फँसाएगा।”

"यही समजो - इस बात का उसे विश्वास दिलाया गया होगा कि कर्नल विनोद ही मेरे और उसके मध्य दिवार बन गया है -उसे मार्ग से हटाये बिना वह मुझे प्राप्त नहीं कर सकेगा।"

"और विमल दिल में यह मैल रखे हुये कर्नल से वफादारी की बातें करता रहेगा—"हमीद बोला।

"हां ?"

"बहुत ही खतरनाक -या खुदा -मैं क्या करूँ!"

"अभी से हिम्मत हार बैठे!" रीमा व्यंगात्मक ढंग से मुस्कुराई।

"नहीं -मुझे कुछ करना चाहिए - हम लोग उसी के उटांग पटांग पथ प्रदर्शन से तो यहाँ तक पहुंचे हैं।"

"इसीलिये कह रही थी कि इस बार शायद उनका वार खाली न जाये।" रीमा ने कहा "और हां सुनो ...वह तुम्हारा मोटा दोस्त भी इस होटल में मौजूद है।"

"नहीं ---" हमीद फिर बौखला गया।

"हां -और उसके साथ वह लड़की भी है जिसके बारे में मैंने कहा था।

"यह तो बहुत बुरा हुआ।"

"क्यों ?"

"मैं अपने आपको उस पर प्रकट नहीं करना चाहता।"

"तुम मेकअप में हो।"

"लेकिन मैं यकीन के साथ यह नहीं कह सकता कि वह मेरे इस मेकअप को नहीं जानता।हो सकता है कि कभी उसके साथ रहकर मैंने यह स्प्रिंग प्रयोग किये हो।"

"तब तो हमें फौरन यह होटल छोड़ देना चाहिए।"

“जैसी तुम्हारी इच्छा ---” हमीद ने लापरवाही से कहा। उसे विनोद की चिंता पड़ गयी थी।

“और तुम्हारा यह मेकअप भी मुझे पसंद नहीं -चलो कहीं और चलते हैं -मेरे मेकअप में भी परिवर्तन कर देना।”

“और वह तुम्हारी पार्टी -लेरी करास इत्यादि ?”

“ मैं अपने तौर पर काम कर रही हूं -उसे केवल अपनी स्कीम बता दूँगी, यह कह दूँगी कि मैं उचित नहीं समजती कि मोटा फिलहाल हमीद को पहचान सके ।”

1.“लेकिन वह दोनों यहाँ क्यों ठहरे हैं।”

“मैं नहीं जानती -और मैं किसी ऐसी बात के बारे में किसी से कुछ पूछ भी नहीं सकती जिसका संबंध मुझसे न हो।”

फिर रीमा उठ कर चली गयी। कदाचित अपने स्कीम के परिवर्तन के बारे में सूचना देने और हमीद चिंता में डूब गया। स्प्रिंग वाला मेकअप भद्दा भी था और कष्ट दायक भी । वह सोचने लगा कि चलो अच्छा ही हुआ-अब इससे पीछा छूट जायेगा।

*****

निलनी कारमाऊँफ़ एडल्फी होटल के डाइनिंग हाल में दाखिल हुई । आज वह उन दोनों को दूर से देखने आयी थी जिनसे मिल बैठने का आदेश मिला था।

लेकरास उसे पसंद था ।उसके लिये वह यह काम अच्छी तरह कर सकती थी -और करना ही क्या था -केवल दो आदमियों से मित्रता -वैसे भी वह स्थानीय आदमियों से मिलना चाहती थी। पाठशाला में अधिकतर ज्यादा उम्र वाले लोग थे जिन्हें केवल पढ़ने की लगन थी । उनमें से किसी ने भी उसकी ओर मित्रता का हाथ नहीं बढाया था।

वह दरवाजे के पास ही रुक कर हाल का निरिक्षण करने लगी और फिर उसे एक मेज पर सुमन नागर कर और कासिम दिखाई पड़ गये। उनको पहचानने में उसे इसलिये कठिनाई नहीं हुई कि मैथुज ने उन दोनों की फोटो भी उसे दिखा दी थी। वह धीरे धीरे चलती हुई उनके पास वाली मेज पर जा बैठी। उसने बचपन में देवों परिओं की कहानियां पढ़ी और सुनी थी -मगर किसी देव को देखने का संयोग आज ही प्राप्त हुआ था। एक विचित्र सा भय उसके दिमाग में समा गया।

और फिर जब उसने उस देव को भोजन करते देखा तो सोचने लगी कि यह अवश्य पैशाचिक शक्तियां रखता होगा।

सुमन उसे सुंदर नजर आयी थी -यह भी महसूस कर रही थी कि हाल के सरे लोग उन्हीं दोनों में दिलचश्पी ले रहे हैं... दोनों अपनी मिसाल आप थे।लड़की अत्यंत सुंदर थी और मर्द ..उसका तो पूछना ही क्या.मांस का पहाड़ मालूम दे रहा था और बकरे की एक पूरी रान ऐसी लग्न और बेदर्दी से उधेड़ रहा था जैसे यह निश्चय कर लिया हो की उसमें एक रेशा भी न लगा रहने देगा।

अब निलनी सोच रही थी कि आखिर वह उनसे मित्रता कैसे करे, उसे उस भीमकाय आदमी से बहुत डर लग रहा था। एक रान समाप्त करने के बाद उसने दूसरी की ओर हाथ बढ़ाया ही था कि लड़की बोली।

“अब मेरी आर्थिक दशा ऐसी नहीं रही कितुम इस तरह जी छोड़ कर खा सको।”

“इसकी परवाह नाही कीजिये मैं अपना एक आध एकाउंट यहाँ ट्रांसफर करा लूंगा - अल्लाह करे -आप भी मेरी ही तरह खाने लगें...।”

“ऐसा शाप मत दो कि जीने के लाले पड़ जायें।“

“लाले पड़ जायें चाहे काले पड़ जायें -अल्ला मियाँ ने आदमी को खाने ही के लिये तो पैदा किया है।”

“अच्छा -चुपचाप खाओ ?”

चु की निलनी बिलकुल उनके पास वाली मेज पर बैठी थी इसलिये उनकी बातें साफ़ सुन रही थी - सोचती भी जा रही थी कि आखिर वह इन दोनों से कैसे मिले -अगर यह देव खतरनाक साबित हुआ तो। अचानक उसने कासिम के साथ वाली लड़की को चीख मार कर कुर्सी से लुढ़कते देखा और ख़ुद भी बौखला कर खाड़ी हो गयी। दुसरे लोग भी दौड़ पड़े। लड़की फर्श पर तड़प रही थी और इसके कराठ से घुटी घुटी सी चीखें निकल रहीं थीं।चीखों के मध्य एक आध शब्द भी उसके मुख से निकल जाता था।

“दर्द .....पेट ...दर्द ..पप...पेट..दर्द।”

इस समय उस होटल में अधिकतर विदेशीय थे -और वहीँ वहाँ एकत्रित भी थे। निलनी भी उसी भीड़ में मिल गयी थी और कासिम के पास ही खाड़ी थी। वेटर देशीय ही थे। उन्हों ने बिदेशियों को इन शब्दों के अर्थ समझाए। निलनी ने सोचा कि जो भी हो -अब इससे अच्छा अवसर हाथ नहीं आयेगा।उसने कासिम की भुजा पकड़ी और अंग्रेजी में बोली।

“तुम्हारी साथी को क्या हुआ ?”

कासिम ने चुंधियाई हुई आंखों से उसकी ओर देखा, फिर अंग्रेजी ही में बोला।

“जरा रुक रुक कर बोलिए तो मैं भी उत्तर दूं। आप लोगों की बोली जल्दी मेरी समज में नहीं आती।”

निलनी ने रुक रुक कर अपना प्रश्न दुहराया।

“पता नहीं खाते खाते किया हो गया -वालेकुल ठीक थीं।“

“मुझे तुमसे हमदर्दी है।”

“होनी ही चाहिए -होनी ही चाहिये -“ कासिम ने बौखला कर कहा । कदाचित अब उसे यह एहसास हुआ था कि वह किसी औरत से बात कर रहा है—और औरत भी ऐसी तारो ताजा कि बस -ऐसी तगड़ी कि “किया कहना” अब वह सुमन की ओर से ध्यान हटा कर उसी से बातें करने पर उतारू हो गया।

“आपकी हमदर्दी का बहुत बहुत शुक्रिया -इनके पेट में दर्द बराबर उठा करता है और यह इसी तरह तड़फने लगती है।”

“तो फिर तुम खड़े खड़े मुंह क्या देख रहे हो—डॉक्टर को फोन करो।”

“हम लोग परदेसी है-आज ही यहाँ आये हैं—किसी डाक्टर को नहीं जानते ।”

लेकिन इतनी देर नें वहाँ स्ट्रेचर लाया जा चुका था। कासिम ने देखा कि दुसरे उसे उठाने जा रहे हैं तो जल्दी से आगे बढ़ा और दूसरों को हटा कर ख़ुद सुमन को उठाने लगा।

फिर सुमन अपने कमरे में पहुंचा दी गयी। होटल के जिम्मेदारों ने डाक्टर को फोन कर दिया।

इस समय कमरे में कासिम और निलनी के अतिरिक्त होटल का असिस्टेंट मैनेजर और एक विदेशीय भी मौजूद था। उसके अंग्रेजी बोलने के अंदाज़ से निलनी ने अनुमान लगाया था कि वह कोई फ्रांसीसी है-

फ्रांसीसी -ओह -कहीं यह लेकरास का वही प्रतिद्वंदी तो नहीं है जिसका उल्लेख मैथुज ने किया था—उसे उसका नाम भी याद आ गया—आरागान -यह नाम उसके व्यक्तित्व से मिलता जुलता भी नजर आया—शारीरिक शक्ति नेत्रों से प्रकट हो रही थी और शरीर तो था ही कसरती ।

“क्या यह तुम्हारी बीबी है ?”निलनी ने मंद स्वर में मुमान की ओर संकेत करते हुए कासिम से पूछा । सुमन बिलकुल मौन थी। नेत्र बंद थे और चेहरे पर पूरी शांति छाई हुई थी।

“नन ..नहीं तो --” कासिम चोंक कर बोला “मेरी तो अभी शादी ही नाही हुई।”

“ओह -तो गर्ल फ्रेंड --।”

“अरे नाही जनाब—मैं इनका नौकर हूं।”

“यह क्या करती हैं ?”

“प्रास्पेक्टर हैं और मैं इनका असिस्टेंट हूं --”

निलनी कुछ और पूछने वाली थी कि डाक्टर आ गया और असिस्टेंट मैनेजर से बातें करने लगा।

कासिम चोंक कर उन दोनों की बातें सुनने लगा—फिर डाक्टर ने कासिम से पूछा।

“क्या पहले की कोई मेडिकल रिपोर्ट भी मौजूद है?”

“जी हां --” कासिम ने कहा और आगे बढ़ कर निलनी का सूट केस खोलने लगा—फिर एक फाइल निकाल कर डाक्टर की ओर बढ़ा दिया और बुरा सा मुंह बनाये हुए फिर निलनी के पास आकर खड़ा हो गया।

“फाइल में क्या है --”

“नकशे !”निलनी ने विस्मय के साथ दुहराया।

“पता नाही किया है -जो कुछ भी है मैं अंग्रेजी भूल गया हूं --” कासिम ने कहा और निलनी मुस्कुरा पड़ी। कासिम कहता रहा “आज तक मैंने कोई औरत ऐसी नाही देखी जो आये दिन बीमार नाही रहती हो -ऐसा लगता है जैसे बीमारियाँ भी उन पर आशिक हो जाती है।”

“तुम बहुत परेशान मालूम होते हो ?”

“ठेंगे से ---” कासिम भन्ना कर बोला।

“क्या?”

“मुझे ठेंगे की अंग्रेजी नहीं आती --”

उधर इन्दिर में डाक्टर फाइल देख कर असिस्टेंट मैनेजर से कह रहा था।

“इन पर ऐसे दौरे पड़ते रहते हैं ...कोई खतरनाक बिमारी नहीं है, इसलिये हास्पिटल में दाखिल करना बिलकुल बेकार होगा -हां - एक नर्स भेजी जा सकती है।”

“ज़रूर ज़रूर--” कासिम बोल उठा “नर्स तो वालेकुल जरुरी होगी। आप खर्चे की फ़िक्र नाही करें।”

विदेशीय आरंभ से ही मौन था। डाक्टर के साथ वह भी बाहर चला गया।

“अभी नर्स आ जाएगी --” असिस्टेंट मैनेजर ने कासिम से कहा “इसके अतिरिक्त और जो सेवा हमारे योग्य हो बिना हिचिक कह दीजिएगा।”

“अच्छा अच्छा -शुक्रिया --” कासिम ने ऐसे भाव में कहा जैसे दिल ही दिल में कह रहा हो कि “आच्छा आच्छा—अब तुम भी चलते फिरते नजर आओ।”

असिस्टेंट मैनेजर चला गया तो निलनी ने पूछा।

“मैं क्या खिदमत कर सकती हूं ?”

“अब किया बताऊँ .यह बेहोश पड़ी हुई है -अगर कोई बातें कहने वाला ना हो तो मेरे पेट में भी दर्द होने लगता है। कासे खेखड में पडा हूं ...” कासिम ने कहा।

“खेखाड क्या ?”

“मुझे खेखाद की अंग्रेजी नाही मालूम--” कासिम में बड़े भोले पण से कहा।

“तुम्हारा कमरा किधर है ?”

“बराबर वाला --” कासिम ने बाईं ओर हाथ उठा कर कहा।

इतनी देर में निलनी ने अनुमान लगा लिया था कि वह एक सीधा साधा और मुर्ख आदमी है, इसलिये उसके दिल डौल का भय भी उसके दिल से निकल गया था और वह सोचने लगी थी कि अब उससेकिस प्रकार की बात करनी चाहिये कि कासिम ख़ुद ही बोल उठा।

“मैं पेट भर खाना भी नहीं खा सका था।”

“फिर खा लेना।”

“कासे खा लूंगा - इनके पेट में तो दर्द हो रहा है।”

“तो क्या तुम इसी के पेट में खा रहे थे ?”

“आप तो मजाख करतीं हैं -ही ही ही ही --”

“बहुत भोले और प्यारे हो।”

part3

रीगम बाला - 3

★★★★★ (2) 2.9k 5.3k

(3)

इस पर कासिम ने शरमा जाने की एक्टिंग आरंभ कर दी।

इतने में नर्स आ गई। उसके साथ असिस्टेंट मैनेजर भी था। उसने कहा।

“अब आप लोग अपने कमरों में जा सकते हैं।”

“जी हां –जी हां --” कासीम भन्ना कर बोला “ मैं अब ख़ुद भी यहाँ नाही रुकना चाहता।”

निलनी उसे आश्चर्य से देखने लगी और सोचने लगी कि आखिर किस बात पर इसे क्रोध आ गया। वह उठा था और दरवाजे कि ओर बढ़ गया था –उसके बाद निलनी और असिस्टेंट मैनेजर भी कमरे से निकले थे।कासिम करीदार में खड़ा मिला।मैनेजर तो उस पर नजर डालता हुआ आगे बढ़ गया।मगर निलनी वहीँ रुक गई।

“आखिर तुम्हें किस बात पर क्रोध आ गया था ?”

“बाद सूरत नर्सों को देख कर मुझे हमेशा गुस्सा आ जाता है।”

“क्यों?”

“बदसूरत थी तो नर्स क्यूं बनी –किसी स्कुल में टीचरी कर ली होती।”

“तुम विचित्र आदमी हो।”

“मैं डाइनिंग हाल में जाना चाहता हूं।”

“तो चलो !”

दोनों डाइनिंग हाल में आये ! यहाँ कासिम वाली मेज अब भी खली थी –और वह उस पर जो कुछ भी छोड़ गया था ज्यों का त्यों मौजूद था। एक वेटर पास ही खड़ा कदाचित उसकी निगरानी कर रहा था।

कासिम ने निलनी के लिये कुर्सी खिसकाई और वह शुक्रिया अदा करके बैठ गई ?

अचानक वह विदेशी फिर दिखाई दिया जिसको उसने सुमन के कमरे में देखा था। वह निकट जा कर सुमन के बारे में कासिम से पूछने लगा।

"नर्स है उसके पास -इस से जियादा मैं कुश नाहीं जानता --" कासिम ने बुरा सा मुंह बना कर कहा और फिर वेटर की ओर मुड़ कर बोला "अमे यह सब ठंडी हो गई है -फिर से गरम कर लाओ।"

"बहुत अच्छा साब --" वेटर ने कहा।

"जरा ठहेरो --" कासिम ने उसे टोका, फिर निलनी ओर देख कर बोला "आप किया खायेंगी।"

"शुक्रिया -सिर्फ़ काफ़ी .." निलनी ने उससे कहा।

"तुम इतने दिलचश्प आदमी हो कि तुम से मित्रता करने को दिल चाहता है!"

"ज़रूर करो ..मुझे खुशी होगी --" कासिम ने चहक कर कहा।

कासिम का शुष्क व्यवहार देख कर वह विदेशी वहाँ से जा चुका था।

"तुम लोग बड़े विचित्र हो .." निलनी ने कहा "यहाँ लड़कियां भी प्रास्पेक्टिंग कराती हैं .मेरे देश की लड़कियां तो केवल आर्टिस्ट बनना चाहती हैं।"

"मुकद्दर है अपने अपने मुलुक का --" कासिम ठंडी सांस ले कर बोला :मेरे मुलुक की लड़कियों का तो जवाब ही नाही है सूखी साखी मरफुल्ली.अब मरीं और तब मरी"

"क्या मतलब?" वह उसे आश्चर्य से देखती हुई बोली।

"अब मतलब किया बताऊँ ..तुम नाही समझ सकोगी।"

"कोशिश करूंगी।"

"यह किया कह डिया मैंने --" कासिम अपनी भाषा में बडबडाया "कहीं भड़क ना जाये।""क्या कह रहे हो?"

“कुश नाही ---कुश नाही --” वह खिसियानी हंसी के साथ बोला।

“कुछ तो -क्या तुम अपनी भाषा में मुझे गालियाँ दे रहे हो।”

“अरे ..नाही तौबा -लाहौल बिला कूबत।”

“इसका क्या मतलब हुआ?”

“मुझे ...तौबा और लाहौल बिला कूबत की अंग्रेजी नाही मालूम” कासिम दयनीय सूरत बनाकर बोला।

“यह तो बड़ी मुसुबत है -मैं तुम्हारी बहुत सारी बातें न समझ सकूंगी।”

“क्या तुम मेरी बातें समझना चाहती हो ?”

“क्यों नहीं ...हम दोस्त बन गये हैं ना।”

“मैं इस खाबिल नाही हूं --” कासिम का कराठ भर आया।

“क्यों ....क्यों ?”

“आज तक किसी लड़की ने मेरी बातें समझने की कोशिश ही नाही की...मैं ऐसा ही उल्लू का पट्ठा हूं।”

“सन ऑफ एन आउल।”

“ओह -तो क्या तुम्हारा गोत्री नाम आउल है?”

“नाही तो !”

“कुछ जातियों में उल्लू को पवित्र समझा जाता है -क्या तुम ऐसी ही जाति से संबंध रखते हो।”

“अरे बाप रे -यह तो जान को आ गई --” कासिम फिर अपनी भाषा में बडबडाया।

“क्या कहा ?”

“कुश नाही -कुश नाही --” कासिम जल्दी से बोला “तुम बहुत अच्छी हो।”

"शुक्रिया -तुम भी बहुत अच्छे हो और मैं यह किसी प्रकार मानने को तैयार नहीं कि तुम उल्लू के बेटे हो।"

"मैं तो यही समझता हूं--" कासिम झल्ला कर बोला।

"यह तुम्हारा अपना मामिला है -तुम समझते रहो।"

"तो किया हम हमेशा दोस्त रहेंगे?" कासिम ठंडी सांस ले कर बोला।

"बिलकुल -हमेशा --" निलनी ने उसके हाथ पर हाथ रखते हुए कहा।

इसके बाद कासिम वेटर की ओर देखने लगा जो उसके लिये बकरे की भी रान गर्म कर के लाया था और मेज पर काफ़ी का सामान लगा रहा था रान हाथ में आयी तो कासिम निलनी के अस्तित्व ही को भूल बैठा। वह भी चुपचाप काफ़ी पीने लगी।

मन ही मन सोच रही थी कि विचित्र आदमी है—इतने डीलडौल का आदमी सचमुच उसने प्रथम बार देखा है—बुद्धि नाम की कोई वस्तु कदाचित उसके समीप से भी नहीं गुजरी—भला यह किसी के लिये क्या काम कर सकेगा-शायद मोसियो लेकरास को भ्रम हुआ है-जो भी हो -समय अच्छा कटेगा....मगर अब उठ ही जाना चाहिये..हो सकता है कि यह जान बुझ कर अपने को मुर्ख प्रकट कर रहा हो।

फिर कासिम रान समाप्त भी नहीं कर पाया था कि वह उठ गई।

"कल --" उसने कहा "कल संध्या को हम फिर मिलेंगे।"

कासिम के मुख में एक बड़ी सी बोटी थी इसलिये वह कुछ न कह सका और निलनी चली गई।

****

हमीद और रीमा एडलफ़ी छोड़ कर टुरेस्ट हेबेन में चले गये थे ..जाने से पहेले हमीद ने अपने साथ साथ रीमा का भी मेकअप बदल दिया था।

अपना मेकअप देख कर रीमा ने बुरा सा मुंह बनाया।

"क्यों -क्या हुआ ?" हमीद उसे घूरता हुआ बोला।

“मैं कोई जापानी लड़की मालूम होती हूं ?”

“एंग्लो जापानी --” हमीद ने कहा “तुम्हारा बाप अंग्रेज था और माँ जापानी ।”

“आखिर इतने ख़राब मेकअप की क्या आवश्यकता थी ?”

“मुझे ऐसे ही चेहरे वाली लड़कियाँ पसंद है -उभरी हुई आंखों और चिपटी नाक वालियां ।

“अब मेरा क्या नाम ?”

“वही जो होटल के रजिस्टर में दर्ज है ।”

“मैं नहीं जानती की तुम ने क्या लिखवाया है ।”

“मायो कू यूकी।”

“मुझे याद नहीं रहेगा ।”

“मैं केवल यूकी कहूँगा ।”

“तुम्हारा नाम क्या है - तुमने अपना मेकअप जापानियों जैसा क्यों नहीं किया?”

“मुझे जापानी नहीं आती ।” रीमा ने कहा।

“तुम्हारी माँ बचपन ही में मर गईं थी और तुम्हारा बाप तुमको इंगलैंड ले गया था।वहीँ तुम पली बढीं -इसलिये अंग्रेजी के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा तुम्हें नहीं आती।”

“और तुम्हारा पालन पोषण किसी रींछ की गुफा में हुवा था -क्यों ?”

“मेरी शक्ल ऐसी तो नहीं --।”

“बकवास बंद करो -मैं तुम्हें किस नाम से पुकारूंगी?”

“होटल के रजिस्टर में मेरा नाम ---” हमीद वाक्य पूरा किये बिना मौन हो गया । उसे अपना सर चकराता हुआ महसूस हुआ था ।

“क्यों क्या बात है।”

रीमा उसे ध्यान पूर्वक देखती हुई बोली।

“मम...मेरा सर --” हमीद ए वाक्य पूरा करने का असफल प्रयास किया। उसकी जबान ऐंठी जा रही थी –और फिर उसने यह महसूस किया कि वह कुर्सी से उठ भी नहीं सकता। अपलक चाय के खली बर्तनों को देखने लगा। कुछ देर पहले उसने रहाइशी कमरे में चाय तलब की थी –तो क्या चाय में कोई नशा लाने वाली वस्तु थी।

और फिर उसने रीना की ओर देखा ...वह कुर्सी पर झूम रही थी और फिर कुर्सी से नीचे लुढ़क गई।

उसने उसे आवाज़ देनी चाही मगर उसके कंठ से स्फुट सी आवाज़ निकल कर रह गई। रीमा फर्श पर शिथिल पड़ी हुई थी –और अब हमीद भी अंधकार में डूबता चला जा रहा था –अंधेरा ---गहरा –अंधेरा। न कुछ दिखाई दे रहा था न कुछ सुनाई दे रहा था।

पता नहीं कितना समय इसी दशा में व्यतीत हुआ था –लेकिन होश में आने के बाद उसे महसूस हुआ कि न तो वह टुरेस्ट हेवेन के डाइनिंग हाल में है और न अपने कमरे नें –और फिर उसे वह स्थिति याद आ गई जो वहाँ थी।“रीमा ...रीमा पर क्या बीती –वह भी तो बेहोश होकर गिरी थी --” वह उठ बैठा। बड़ा आराम दह बिस्तर था और ऐसा महसूस हो रहा था जैसे पूरी नींद लेने के बाद तारो ताजा हो। दिमाग शीशे के समान साफ़ था।

वह सामने वाले दरवाजे की ओर बढ़ा। कुछ क्षण तक रुक कर हैन्डिल घुमाया और धीरे से धक्का दिया।दरवाजा खुलता चला गया –वह बाथरूम था जहां आवश्यकता की सारी वस्तुएं मौजूद थीं।

थोड़ी देर बाद जब बात रूम से बाहर निकाला तो मेज पर नाश्ते की ट्रे भी रखी हुई दिखाई दी। काफ़ी पाट से भाप निकल रही थी। गर्म गर्म अर्ध टेल अंडे –तथा एक गिलास में ताजा फलों का रस भी था। वह बैठ कर नाश्ता करने लगा और सोचने लगा कि यह सामान यहाँ किस प्रकार पहुंचे, क्यूंकि उस बात रूम के अतिरिक्त यहाँ अब कोई दरवाजा नजर नहीं आ रहा था।

फिर वह रीमा के बारे में सोचने लगा। पता नहीं उस पर क्या बीती –वह लोग निश्चय उसके विचारों के परिवर्तन को जान गये थे वरना उस पर भी वहीँ क्यों बीतती जो ख़ुद उस पर बीती थी।

नाश्ता करने के बाद पाइप की इच्छा जाग उठी और उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक ओर तमाखू की पाऊच और पाइप भी मौजूद है और उसी के निकट उसका सूट प्रेस किया हुआ रखा है।

"देखिए...यह अतिथि सत्कार क्या रंग खिलाता है ..."उसने मुस्कुरा कर सोचा फिर पिप भरने लगा, फिर उसे सुलगा कर बिस्तर के निकट पड़ी हुई आराम कुर्सी पर लेट गया और सोचने लगा ..मगर मगर सोचता भी क्या। वह तो विनोद की स्कीमो के बारे में कुछ जानता ही नहीं था -आखिर वह लोग उससे क्या मालूम कर सकेंगे।

कुछ ही देर बाद उसकी आंखें फिर बंद होने लगीं। उसने उन्हें खुले रखने की कोशिश की -मगर सफल न हो सका -आंखें बिलकुल ही बंद हो गईं -वह गहरी नींद सो गया।

आंख खुली थी किसी की चीख सुन कर -कोई औरत लगातार चीखे जा रही थी। उसने उठाना चाहा मगर उठ न सका ...वह तो एक कुर्सी में जकड़ा हुआ था। उसने चीखों की ओर सर झुकाया।

"रीमा --"वह भी जैसे चीख पड़ा।

वह भी थोड़ी ही दूर पर एक दूसरी कुर्सी जकड़ी नजर आई थीज़ दो आदमी उसके निकट खड़े थे और वह भी चीखे जा रही थी...प्रकट में चीखने का कोई कारण नजर नहीं आ रहा था।

दोनों में से एक स्वीच बोर्ड की ओर बढ़ा और एक स्वीच आफ कर दिया -फिर रीमा की चीखें मंद पड़ने लगीं और अन्त में वह बिलकुल ही मौन हो गयीं

। चूं कि उसका चेहरा दूसरी ओर था इसलिये हमीद यह न देख सका कि उसकी आंखें खुली हुई हैं या वह चेतना कहो बैठी है।

वह दोनों आदमी आपस में धीरे धीरे बातें कर रहे थे, फिर उनमें से एक हमीद को घूरने लगा और दूसरा आदमी फिर उसी स्वीच बोर्ड की ओर बढ़ा और उसने एक दूसरा स्वीच आन कर दिया—और एक ट्राली ढकेल कर रीमा के निकट आने लगा। उस पर एक बड़ा सा टेप रेकार्डर रखा हुआ था।

·"ओ हो....तो यह शैतान रीमा की बातों को रेकार्ड करना चाहते है-" -हमीद ने सोचा " कुछ करना चाहिए -अगर यह रीमा से कुछ उगलवाने में सफल हो गये तो दोनों का कुशल नहीं।"

उसने चमड़े के तस्मों पर शक्ति लगाना आरंभ कर दिया और फिर उसे ऐसा लगा कि वह बाईं ओर वाले तस्मों से अपना हाथ आसानी से अब निकाल सकेगा। उसने कनखियों से उन दोनों की ओर देखा। वह टेप रेकार्डर पर झुके हुए थे। उनका पूरा ध्यान उसी ओर था। उसने बांया हाथ तस्मों से निकाल लिया और बायें पैर का तस्मा खोलने लगा जो पाये से कसा हुआ था।

वह दोनों अब भी टेप रेकार्डर ही पर झुके हुए थे -फिर उनमें से एक उसका पाईप टेस्ट करने लगा ...और इतनी देर में हमीद ने अपने आप को पूरी तरह स्वतंत्र कर लिया था।

रीटा की आवाज़ सुन कर हमीद ने उसकी ओर सर धुका दिया ..मगर दोनों हाथ अभी तस्मों के अंदर ही रख छोड़े थे। रीमा बोल रही थी।

part4

रीगम बाला - 4

★★★☆☆ (3) 2.4k 5.6k

(4)

"हां -मैं कैप्टन हमीद को दिलो जान से चाहती हूं -उसके बिना जिन्दा नहीं रह सकतीं। मैंने उसे वह सब कुछ बता दिया है जो मैं जानती थी। मैंने उसे यह भी बता दिया है कि मुझे संस्था से घृणा हो गई है।कल के सुंदर संसार के लियेमैं आज की बरबरता सहन नहीं कर सकती। आज का रक्त कल के फूलों की लालिमा बने -मैं इसे पसंद नहीं करती ..संस्था के बड़ों ने मेरे पंगुल बाप को इसलिये मार डाला कि वह उनके काम का नहीं रह गया था—तुम लोग आदमी को मशीन समजते हो -मैं तुम सब पर धिक्कार भेजती हूं...मैं कर्नल विनोद से मिल कर संस्था को रसातल में मिला दूँगी-"

वह मग्न हो गई और सामने वाली दिवार से आवाज़ आई।

"स्थानीय कार्य अध्यक्ष के बारे नें तुमने कैप्टन हमीद को क्या बताया है? -"

अचानक हमीद अपनी कुर्सी से उठा और उन दोनों पर टूट पड़ा जो रीमा की कुर्सी के निकट खड़े थे। एक के जबड़े पर उसका घूंसा पड़ा था और दुसरे के पेट पर ठोकर लगी थी। पेट पर ठोकर खाने वाला तो फिर उठ ही न सका, मगर घूंसा खाने वाला हमला कर बैठा। हमीद ने महसूस किया कि वह शक्ति शाली भी है। वह उससे लिपट पड़ा थाज़ अचानक फिर दिवार से आवाज आई।

"क्या हो रहा है ...वह मौन क्यों हो गई! -"

हमीद के प्रतिद्वंदी ने कुछ कहना चाहा मगर हमीद ने उसका मुह दबा दिया और पेट पर ठोकर खाने वाला तो फर्श पर शिथिल पड़ा हुवा था। ऐसी चोट तो मौत का कारण भी बन सकती थी और हमीद दुसरे का मुह दबाये उसका गला घुटने की भी कोशिश कर रहा था। दिवारसे फ़िर आवाज आई।

"कमरा नंबर तेरह में क्या हो रहा है? -"

"टेप रेकार्डर ख़राब हो गया है।-" हमीद ने भर्राई हुई आवाज में उत्तर दिया।

"जल्दी करो।" आवाज आई।

"बस एक मिनिट।" हमीद ने कहा।

हमीद के प्रतिद्वंदी की निवारण शक्ति हीन पड़ती जा रही थी। और फिर वह भी गति हीन होकर उसके बंधन से फिसिल गया।

हमीद बड़ी फुर्ती से रीमा की कुर्सी के तस्मे खोलने कल लिये झुका, रीमा ने रवरवार कर उसे अपनी ओर आकृष्ट किया और जब हमीद ने उसकी ओर देखा तो उसने आँखों से संकेत किया कि पहले वह सामने वाली दीवार पर लगे हुये स्विच बोर्ड के सारे स्विच आफ कर दे।

हमीद ने इसमें देर नहीं लगाईं फिर रीमा को आजाद किया और रीमा उससे लिपट कर किसी नन्ही बच्ची के समान रोने लगी।

"ओ हो अरे भाई बस।" हमीद नर्वस होकर बोला "अब यहाँ से निकल भागने की फ़िक्र करो, कहीं फिर न फँस जायें।"

"इस कमरें में इन इन दोनों की आज्ञा के बिना कोई नहीं आ सकता।" रीमा हिचकियाँ लेती हुई बोली।

"तो फिर इनके उठ बैठने की संभावना ही समाप्त कर दी जाये।" हमीद ने कहा और उन दोनों की ओर बढ़ा, फिर पाँच ही मिनिट के अंदर उसने उन दोनों को उन्हीं दोनों कुर्सियों से जकड़ दिया। इतनी देर में रीमा भी संभल चुकी थी। उसने उसके निकट आकर कान में धीरे से कहा।

"अब हमें यहाँ दे निकल चलना चाहिये वर्ना वह....." उसने दीवार की ओर संकेत किया और मौन हो गई फिर हमीद का हाथ पकड़ कर दरवाजे की ओर बढ़ी।

दरवाज़ा खोल कर वह एक कारीडर में दाखिल हुये जिसके दोनों ओर कमरे बने हुये थे। अंतिम कमरे के सामने पहुंच कर रीमा ने कहा।

"इस कमरे में ऊपर जाने के लिये सीढ़ियाँ बनी हुई है।"

"ऊपर जाकर हम क्या करेंगे ?"

"ऊपर दो हेलीकाप्टर हर समय मौजूद रहते है - हम हेलीकाप्टर द्वारा ही कहीं जा सकते है - उसके अतिरिक्त यहाँ से निकल भागने का और कोई साधन यहाँ नहीं है.....।" रीमा ने कहा और दरवाजे का हेंडिल घुमाने ही जा रही थी कि हमीद ने उसे रोका।

“क्या बात है ?” वह चौंक पड़ी।

“यहाँ कितने आदमी होंगे ?” हमीद ने पूछा।

“ऊपर दो सशस्त्र रक्षकों से सामना होने की संभावना है।”

“मेरे पास तो कुछ भी नहीं है कम से कम एक रिवाल्वर ही होता।”

“कोई उपाय किया जायेगा, वैसे पूरी तरह सावधान रहना।”

“क्या उन रक्षकों को इसका ज्ञान होगा कि अब तुम्हारी हैसियत एक कैदी की सी है।”

“हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता।” रीमा ने कहा और हेंडिल घुमा कर दरवाज़े को धक्का दिया, मगर दरवाज़ा थोडा सा खुल कर दूसरी ओर किसी वस्तु से टकराया था, फिर तत्काल ही ऐ आदमी दरवाज़े के पीछे से प्रकट हुआ।

इन दोनों को देखते ही उसका मुँह आश्चर्य से खुल गया, मगर हमीद दुसरे ही क्षण उस पर झपट पड़ा और वह दूसरी और सीढ़ियाँ पर उलट पड़ा। हमीद उसके ऊपर था और उसकी गर्दन उसके बंधन में थी, वह उस पर दबाव डाल रहा था ताकि वह बेहोश हो जाये।

वह शीघ्र ही बेहोश हो गया। हमीद ने होल्स्टर और कारतूसों की पेटी उसके शरीर से अलग कर ली।

“तुम सचमुच जियाले हो।” रीमा ने कहा “अब चुपचाप ऊपर चलो।”

अठ्ठारह सीढ़ियाँ तै करने के बाद वह छत पट पहुँचे। यह इमारत चारों ओर से ऊँची ऊँची चट्टानों के मध्य घिरी हुई थी और उन चट्टानों से भी अधिक उचाई से देखी जा सकती थी।

यहाँ दो हेलीकाप्टर मौजूद थे अगर कोई आदमी नहीं देखाई दे रहा था।

“क्या तुम इन्हें पायलट कर सकोगे ?” रीमा ने पूछा।

“अगर यह साधारण प्रकार के होंगे तो अवश्य.....।”

“साधारण ही है....कोई नवीनता नहीं है।”

“बस यही दो है यहाँ ?”

“हाँ !”

“तो फिर एकको मैं इस योग्य न रहने दूँ कि हमारा पीछा किया जा सके ।”

“क्या तुम ऐसा कर सकोगे ?” रीमा ने उत्साह भरे स्वर में पूछा ।

“क्यों नहीं.....।” हमीद ने कहा और एक हेलीकाप्टर की ओर बढ़ा । फिर दो ही तीन मिनिट में उसके इंजिनों में दोष उत्पन्न कर दिया ।

“तुम सचमुच मुझे आश्चर्य में डालें दे रहे हो ।”

फिर दोनों दुसरे वाले हेलीकाप्टर में जा बैठे और जब वह ऊपर उठने लगा तो रीमा कहकहा लगा कर हँस पड़ी ।

“किधर ?” हमीद ने कम्पास पर नजरें जमाये हुए पूछा।

“पूर्व ओर ..?”

“मगर यह हुआ कैसे था ?” हमीद ने उसे पूर्व ओर मोदते हुए पूछा।

“मैं क्या बताऊँ -मैं तो तुम्हारे साथ ही थी—शायद हमें चाय में बेहोशी की दवा पिला दी गई थी -फिर जब चेतना लौटी थी तो ख़ुद को कनफेशन चेयर पर पाया था । उन कुर्सियों की विचित्र विशेषता है ...यह मानव स्नायु को झूठ बोलने के योग्य ही नहीं रहने देतीं ।”

“तुम एरे बारे में उन्हें बहुत कुछ कह रही थी उसे सुन भी रही थी और यह समज भी रही थी कि मैं जो कुछ कह रही हूं वह हम दोनों के लिये खतरनाक है -मगर मैं सच्ची बात कहने से अपने को रोक नहीं सकती थी -और यह उन कुर्सियों का प्रभाक था। तुमने ठीक समय पर उन दोनों पर हमला कर डिया था—वरना मैं वह बातें भी बता देती जो मैंने तुम्हें बताई थी—फिर जानते हो क्या होता।”

“क्या होता ?”

“वह तुम्हारे द्वारा कर्नल विनोद पर हाथ डालने की योजना बदल देते..”

“क्या मतलब !”

“तुम्हें मार डालते और शायद मुझे भी क़त्ल कर डालते ....मगर अब वह शायद ही मुझ पर हाथ डाल सकें।”

“क्या तुम ऐसी ही हो!” हमीद ने पूछा।

“देख लेना ...” रीमा मुस्कुराई।

“तो तुम मेरे बारें में सच बोल रही थी ?” हमीद ने मुस्कुरा कर पूछा।

“तुम्हें इसमें संदेह न होना चाहिये।”

“आखिर यह औरतें इतनी जल्दी चाहने क्यों लगती है।”

“हर औरत अपने आइडियल की तलाश में रहती है।”

“ओह -तो क्या मैं किसी का आइडियल बनने की योग्यता भी रखता हूं।”

“बहुत अधिक कैप्टन ---” रीमा ने कहा “अच्छा यह बताओ कि तुम्हें अब तक कितनी औरतें चाह चुकी हैं।”

“संख्या तो याद नहीं -मगर यह अवश्य बता सकता हूं कि बड़ी तेजी से चाहने लगती हैं और फिर एक दिन उतनी ही तेजी से बोर हो कर चल देती हैं।”

“मैं विश्वास नहीं कर सकती ...संसार की कोई औरत तुमसे तो नहीं बोर हो सकती।”

“हर औरत आरंभ में मुझे इसी बात पर विश्वास दिलाने की कोशिश करती है।”

“तुम झूठे हो।”

“मत विश्वास करो ..एक दिन ख़ुद ही देख लोगी।”

रीमा मौन हो गई। हमीद भी अब बोलना नहीं चाहता था क्योंकि कराठ फाड़ कर बोलना पड़ रहा था। हेलीकाप्टर की आवाज कान फोड़ डाल रही थी, मगर अभी एक प्रश्न बाकी था इसलिये उसे बोलना ही पड़ा।“

“तुम मुझे अब कहाँ ले जाना चाहती हो ?”

“बस चलते रहो ..कम्पास पर मेरी नजर है -जहां लेंड करने को कहूं उतार देना। इस प्रकार एक हेलीकाप्टर भी हमारे अधिकार में आ जायेगा।

“तो क्या तुम इसे खुल्लम खुल्ला प्रयोग भी कर सकोगी?”

“देखा जायेगा -यह तुम हर बात में बहस क्यों करने लगते हो ?”

“आखिर बोर होना आरंभ हो गई ना --”हमीद हंस कर बोला।“

“ठहरो ...हां ..हमें यहीं उतरना है ।”

“अच्छी तरह इत्मीनान कर लो --”हमीद ने कहा।

हेलीकाप्टर वायु मंडल मीम थम गया था। रीमा ने हंस कर कहा ।

“मैं इतनी अनाडी नहीं हूं ...चलो नीचे उतारो ।”

अन्त में वह एक जगह टिक गया। हमीद डर गया था कि कहीं वह किसी असमतल जगह से टकरा जाये।

“तुम ने देखा --”रीमा उसके चहरे के निकट अंगुली नाचा कर बोली“चलो ..नीचे उतरो ।”

हमीद ने इन्जिन का स्वीच आफ कर दिया और जब नीचे उतारा तो रीमा की योग्यता का क़ायल हो गया।चट्टान का यह भाग इतना सपाट और समतल था जैसे विशेष रूप से इसी काम के लिये तराशा गया हो ।

“मैं ऐसे कई स्थानों को जानती हूं जिनका पता मेरे साथियों को नहीं --”रीमा ने मुस्कुरा कर कहा“मैं समझ रही थी कि कभी न कभी मुझे संस्था से अलग होना पड़ेगा इसलिये मैं ऐसे स्थानों कि तलाश में रहा करती थी।”

“क्या यह समझती हो कि हेली काप्टर यहाँ उनकी नज़रों से बचा रहेगा?”“बिलकुल नहीं... मैं अभी इसको ऐसी जगह ले जाउंगी जहां चिड़िया भी नहीं पहुंच सकती ।”

हमीद लम्बी सांस ले कर चारों ओर देखने लगा ।

“मेरे साथ आओ --”रीमा ने उसका हाथ पकड़ा और उसे उसी समतल चट्टान के सिर पर ले आई, फिर बोली“अब नीचे देखो ।”

हमीद नीचे देखने लगा। एक गहरा गढ़ा था -इतना गहरा कि उसकी तह तक नहीं दिखाई दे रही थी।

“मैं इसे न केवल नीचे उतार ले जाउंगी बल्कि दस मिनिट बाद फिर यहीं तुम्हारे पास मौजूद रहूंगी।”

“अब मेरे चकित होने की बारी आई है --” हमीद ने कहा।

“अच्छा ...तुम भी चलो मेरे साथ ...मगर इस बार मैं पाइलट करूंगी --” रीमा ने कहा और उसे लिये हुए फिर हेली काप्टर की ओर बढीं।

हमीद उस समय उसके अभ्यास पर दांग रह गया था जब वह हेली काप्टर को उसी गधे में उतार रही थी। चुन कि गधे में अंधेरा था इसलिये उसने हेली कापता के सारे बल्ब जला दिये थे। अन्त में हेली काप्टर का निचला भाग धरती से लगा और उसका इन्जिन बंद कर दिया गया।बल्ब अभी भी जल रहे थे।

“अब इसके बाद हम कहाँ जायेंगे ?” हमीद ने पूछा।

“हम यहीं काफ़ी दिनों तक रह सकते हैं --” रीमा ने कहा “यह हेली काप्टर इमर्जन्सी के लिये है। इसमें आवश्यकता की सारी वस्तुएं मौजूद हैं ...डब्बों में सुरक्षित खाद्य पदार्थ...पानी ..शराब और इंधन...काफ़ी .चाय.. दूध के डिब्बे -सभी कुछ।”

“और तुम लोग इन हेली काप्टरों को खुल्लम खुल्ला प्रयोग करते रहे हो ?”

“हां ..दिन के उजाले में भी।”

“आश्चर्य ही कि किसी ने भी इनका नीतिस नहीं लिया।”

“तुम्हें यह सुन कर आश्चर्य होगा कि बहुधा तुम्हारे यहाँ के उच सरकारी आफिसर भी मौजूद होते हैं।”

“यह बात मेरी समझ में नहीं आई ?”

“आखिर हमारी वाह्य पोजीशन भी तो कुछ होगी वर्ना हम यहाँ तुम्हारे देश में ठहरते कैसे ?”

“वाह्य पोज़ीशन का क्या मतलब हुआ ?”

“हम लोग तुम्हारे देश के लिये सम्मानित लोग है.....हम यहाँ धरती के अंदर तेल तलाश कर रहे है। गैस से एक बड़े भण्डार के अनुसंधान का सेहरा भी हमारे ही सर है।”

“ओहो....तो यह बात है ?”

part 5

रीगम बाला - 5

★★★★☆ (1) 2.1k 5.5k

(5)

"लेकिन लेफरास की अध्यक्षता एक रहस्य है। उसे हमारे अध्यक्ष की हैसियत से कोई नहीं जानता। चीफ जियोलोजिस्ट दूसरा आदमी है...और वह हमारे गुप्त कार्यो के बारे में कुछ भी नहीं जानता।"

"और जिस देश की ओर से यहाँ काम कर रहे हो....उस देश के वफादार भी हो या नहीं ?"

"वफादारी केवल पचीस प्रतिशत है।"

"क्या मतलब ?" हमीद ने आंखें फाड़ी।

"खनिज तेल से सम्बंधित प्राप्त होने वालो सूचनाओं का केवल चौथा भाग तुम्हारे या उस देश के हवाले किया जायेगा....पचहत्तर प्रतिशत जीरो लैंड के लिये होगा...इसे इस प्रकार समझो कि हमने चार स्थानों पर गैस के भण्डार तलाश किये थे, मगर केवल एक भण्डार तुम्हारे या उस देश की जानकारी में लाया गया है, शेष तीन से जीरों लैंड लाभ उठायेगा।"

हमीद अपनी कनपट्टियाँ सहलाने लगा और रीमा हँसने लगी।

"तो अब बाहर निकलो ना ?" हमीद ने कहा।

"यहीं क्या बुरे है।"

"क्या मतलब ?

"इस प्रकार ठंड से भी बचे रहेंगे। इस हेलीकाप्टर में एक ऐसी व्यवस्था भी है जिस के द्वारा ऊपर से ताज़ी हवा खींच कर नीचे लाई जा सकती है और गन्दी हवा ऊपर फेंकी जा सकती है...क्या तुम घुटन महसूस कर रहे हो ?"

"नहीं !"

“तो फिर क्या बेचैनी। दो तीन दिन यहीं रुकना हमारे लिये लाभदायक होगा।”

हमीद ठंडी सांस लेकर फिर अपनी कनपटी सहलाने लगा। रीमा बड़ी लगावट की नजरों से उसे देखे जा रही थी।

सुमन नागरकर ने पिछली रात से अब तक बिस्तर नहीं छोड़ा था और कासिम बोर होता फिर रहा था। नर्स से सुमन की दशा मालूम हो जाती थी, वह भी ऐसे भाव में बात करती जैसे सुमन की बीमारी का कारण कासिम ही हो।

संध्या होते ही वह डाइनिंग हाल में आ बैठा, मगर उसे आशा नहीं थी कि निलनी कारमाउन्ट अपना वादा पूरा करेगी। उसका विचार था कि उसके डील डौल ने उसकी ओर आकृष्ट किया था और वह थोड़ी देर के लिये मिल बैठी थी।

वह बैठा बोर होता रहा। निगाहें सदर दरवाजे पर लगी हुई थी। उसने सोचा था कि रीगम बाला पहुँच कर वह सुमन से साथ घूमेगा, तफरीह करेगा, मगर सुमन बीमार पड़ गई थी, यह तो अच्छा ही हुआ था कि होटल वालों ने नर्स का प्रबंध कर दिया था वर्ना उसे ही बोर होना पड़ता, बीमार औरतें उसे एक आँख नहीं भाती थीं, उठते हाय...और बैठते हाय.....।”

“उन्हें तो बस जरा सा नजला जुकाम हो और वह मर जाया करें।” वह बुरा सा मुँह बना कर बोला और फिर बीमार औरतों ही के से भाव में हाय हाय करने लगा। मानसिक धारा बहक गई थी....और अब यह हुलिया थी कि भवें सिकुड़ी हुई...नाक पर शिकनें और होठों में नीचे की ओर खिंचाव और ऐसे दर्द नाक लेह्जे में हाय हाय की आवाज़ें कि निकट से गुजरता हुआ हेड वेटर वहीँ रुक गया।

कासिम अपने डील डौल और भोजन के आधार पर वैसे ही सब की नजरों में आ गया था, फिर सुमन पर पड़ने वाले दौरोने तो उसे पूरे होटल में मशहूर कर दिया था।

“क्यों साहब! आपको कोई तकलीफ है।” हेड वेटर ने बड़ी शिष्टता से पूछा।

कासिम चौंका भी और साथ ही झेंपा भी- ही ही ही आरंभ हुई और फिर उसमें भी अचानक ब्रेंक लगाना पड़ा। इन समस्त दशाओं ने सचमुच उसकी हुलिया ऐसी ही बना दी, जैसे किसी बहुत बड़ी पीड़ा कप हँस खेल कर झेल जाने की कोशिश करता रहा हो।

“क्या मैं आपकी कोई सेवा कर सकता हूं ?” हेड वेटर ने कोमल स्वर में पूछा।

“मेरी बासी बीमार है --मैं वालेकुल तीख हूं,,” कासिम ने कहा।

“बासी ?” हेड वेटर ने आश्चर्य प्रकट किया “मैं नहीं समझा श्रीमान ?”

“बासी नाही समझते – बसी की वह –यह – यानी कि मादा.....नाही नाही .किया कहते है उसे अमे मर्द को बास कहते है और औरत को बासी मैं उसका सेक्रेटरा हूं –लाहोल बिला कुवत मैं इतनी बकवास क्यों कर रहा हूं ..तुम अपना काम देखो जी।”

“बहुत अच्छा श्रीमान जी .व वेटर ने कहा और मुस्कुराता हुआ आगे बढ़ गया।

कासिम फिर सदर दरवाजे की ओर देखने लगा और अचानक उसकी बांछें खिल उठी ! निलनी हाल में दाखिल हो रही थी । वह जल्दी से कुर्सी छोड़ कर उठ गया और उसका स्वागत करता हुआ बोला ।

“आपका बहुत बहुत शुक्रिया ..आप आ गईं ..मैं बहुत बोर हो रहा था ।यहाँ किसी को नाही जानता ।”

“यही हाल मेरा ही है ।”

“यानी कि आप भी ...।”

“हां ..हां मैं भी यहाँ किसी को नहीं जानती ।”

कासिम के चेहरे पर उदासी छा गई। उसने समझा था किवह भी उसके लिये अपनी व्याकुलता प्रकट करेगी...कहेगी कि वह भी उससे मिलने के लिये बहुत बेचैन थी और जुदाई का समय उसने भी बोरियत में ही व्यतीत किया है ।

“अरे यह तुम अचानक उदास क्यों हो गये !” निलनी ने पूछा ।

“बस ऐसे ही ..कभी कभी हो जाता हूं ।”

“कोई खास बात !”

“बहुत छोटी सी बात है ।”

“छोटी सी बात !”

“हां ..साधे चार फिट की बात ।”

“तुम नशे में तो नहीं हो !”

“मैं शराब नाही पीता।”

“यह तो बड़ी अच्छी बात है ..तुम्हारे देश की यही बात मुझे पसंद है। हर आदमी नहीं पीता। नशा को नशा ही रहने दिया है, प्यास नहीं बनाया है।”

“मैं सिगरेट भी नाही पीता।”

“यह तो और अच्छी बात है! मुझे तमाखू की गंध से नफ़रत है।”

“अरे तो किया मैं हर वक्त आपके पास बैठा रहूंगा।”

“मैं तो यही चाहती हूं।”

“सच कह रही है?” कासिम ने हर्षित हो कर पूछा।

“हां ..हां ..विश्वास करो।”

“मैं कितना खुश नसीब हूं।”

“तुम्हें होना चाहिए -इतने लम्बे चौड़े हो।”

“आप मेरा मजाख उड़ा रही है।”

“तुम इतने अच्छे आदमी हो -भला मैं कैसे तुम्हारी हंसी उड़ा सकती हूं. कितना भोलापन है तुम्हारे चेहरे पर ..तुमने कभी किसी को चाहा है?”

“किसे चाहूँ ..काऊन पसंद करेगा मुझे ...गोश्त का पहाड़ जो हूं।”

“आदमी केवल हड्डी और गोश्त ही तो नहीं।”

“फिर किया है?” कासिम ने उत्सुकता के साथ पूछा।

“पता नहीं ..वास्तव में इस तरह की बातें मुझे आती ही नहीं.” निलनी ने झेंपते हुए कहा “वैसे कोशिश करती हूं।”

“यह तो बड़ी अच्छी बात है मुझे भी नाही आती,” कासिम खुश हो कर बोला “मेरी बीबी कहती है ..अरे बाप ..हिप।”

उसने दोनों हाथों से मुंह दबा लिया।

“क्यों ..क्या बात है ..बीबी।”

कासिम दोनों हाथों से मुंह दबाये पटर पटर पलकें झपकाए जा रहा था।

“बोलो ..चुप क्यों हो गये ...क्या तुम ने झूठ कहा था की अभी तुम्हारी शादी नहीं हुई ?”

कासिम दिल ही दिल में ख़ुद को गालियाँ देता रहा फिर उसने सोचा कि वह तो हिन्दुस्तानी जानती ही नहीं ..फिर वह खुल कर अपने को गालियाँ दे सकता है।”

“आखिर मैं इतना उल्लू का पट्ठा क्यूं होता जा रहा हूं ..”उसने अपने आप से पूछा।

“क्या कहा तुमने ..इंग्लिश में दुहराओ ..” निलनी बोली।

“मैं सोच रहा था की मुझे सब कुश आपको बता देना चाहिए।”

“तो बताओ ना ?”

“मेरी शादी हो गई है ..” कासिम ने कहा।

निलनी के चहरे पर निराशा के लक्षण दिखाई दिए। नेत्रों में आतंरिक पीड़ा उभर आई।

“मैं बड़ा बादनसीब हूं ..” कासिम भर्राई हुई आवाज़ में बोला।सचमुच अपनी बेबसी पर उसका दिल भर आया था। आंखों से आंसू की बड़ी बड़ी बूंदें निकल कर गालों पर ढलक गई और फिर वह दोनों हाथों से अपना चेहरा ढांप कर सिसकियाँ लेने लगा।

“तुम विचित्र आदमी हो ..” निलनी खिसिया कर बोली।

मगर कासिम रोता रहा।

“मैं उठ कर चली जाऊँगी ...क्या अपने साथ मुझे भी तमाशा बनाना छः रहे हो।”

“नाही ..नाही मै अभी ठीख हो जाऊँगा ..आप मत जाइए ..खुदा के लिये मत जाइए मैं आपको अपनी दर्द भरी कहानी सुनाऊंगा।”कासिम ने कहते हुए चेहरे से हाथ हटा लिये।

“अच्छा तो चुप हो जाओ”

कासिम बड़ी कठिनाई के बाद अपनी दशा पर अधिकार पा सका। उसकी आंखें लाल हो गईं थीं। कुछ देर बाद वह भर्राई हुई आवाज़ में बोला।

“हां ...मैंने आप से झूठ बोला था वह मेरी बीबी ज़रूर है लेकिन फिर भी मेरी बीबी नाही है।”

“अब मैं आपसे किया बताऊँ, शर्म लगती है, बस समझ जाइये।”

“नहीं...तुम्ही बताओ ?”

“साढ़े चार फीट की है....वजन पचास पौंड से जियादा न होगा....एक टांग ठीख है.....दूसरी सिर्फ़ साढ़े आठ इन्च की है।”

“ओह....पैदाइशी ?”

“जी हाँ - पैदाइशी के बख्त दो ढाई इंच की रही होगी।”

“मुझे यह सुन कर दुख हुआ, मगर तुमने उससे शादी क्यों कर ली ?”

“बस किया बताऊ, एक यतीम खाना में चंदा देने गया था। वहाँ के मैनेजर ने कहा कि अगर सवाब कमाना चाहते हो तो किसी यतीम लड़की से शादी कर लो.....मैंने कहा अच्छी बात है।”

“बड़े बेवकूफ हो तुम।” निलनी ने क्रोधित होकर कहा।

“बस किया बताऊँ.....घपला हो गया।”

“घपला क्या ?”

“घपली का अंग्रेजी मुझे नाही मालूम !”

“तुम सचमुच बड़े भले आदमी हो।”

“मेरी हर भलाई मेरे गले में फाँसी का फंदा बन जाती है।”

“फिर अब तुमने क्या सोचा है ?”

“किसी दिन समुन्दर में कूद कर जान दे दूँगा।”

“यह आखिरी और सबसे बड़ी बेवकूफी होगी....तुम दूसरी शादी क्यों नहीं कर लेते, तुम लोग तो चार चार शादियाँ कर सकते हो।”

“अब नहीं कर सकते.....फेमली प्लानिंग वालों ने घपला कर दिया है।”

“अच्छा तो फिर दूसरी बात करो।”

“खाने पीने की बात करूँ ?” कासिम ने लहक कर पूछा।

“क्या यहाँ तुम्हारा कोई दोस्त नहीं ?”

“मुझे काउन दोस्त बनाना पसंद करेगा।”

“क्यों ?”

“इतने लम्बे और बेडौल आदमी से काउन दोस्ती करेगा।”

“मैं करूंगी मेरे अच्छे दोस्त।” निलनी ने उसके हाथ पर हाथ रखते हुये बड़े प्यार से कहा।

और कासिम रो पड़ा। इस बार बनावट नहीं थी। सचमुच रो रहा था और साथ ही यह भी सोच रहा था कि वह सचमुच उल्लू का पठ्ठा ही है।

अभी सूर्य अस्त नहीं हुआ था।

कर्नल विनोद ने रायफल उठाई और उस गुब्बारे पर फायर कर दिया जो चट्टानों की ओट से उभर कर वायु मंडल में ऊपर उठ रहा था। फायर बे आवाज था, मगर गोली लगते ही गुब्बारा ऐसे धमाके के साथ फटा कि आस पास की चट्टानें हिल उठी।

इसके बाद विनोद बड़ी फुर्ती से दो चट्टानों की एक पतली सी दराड़ में दाखिल हो गया था, फिर उसने जेबी ट्रान्समीटर निकाला और जैसे ही उसका स्विच आन किया, आवाज आई।

"हेलो.....हार्ड स्टोन सर...हेलो, वी एट कालिंग सर।"

"हेलो बी एट.....स्टोन...ओवर।" विनोद ने कहा।

"परिणाम वही रहा जिसकी आशा की गई थी.....खोदी करने वालों में बेचैनी फैल गई है....अब दूसरा गुब्बारा हम इस्पाट थरी से छोड़ने जा रहे है - ओवर।"

"मैं ई पाट टू पर पहुँच कर तुम्हें सूचित कर दूँगा.....। ओवर ऐंड आउट।" विनोद ने कहा और स्विच आन करके ट्रांसमीटर जेब में डाल कर विपरीत दिशा में तेजी से दौड़ने लगा।

"यह दराड़ इतनी चौड़ी नहीं थी कि दो आदमी बराबर से चल सकते। कुछ दूर तक चलने के बाद वह फिर खुले में निकल आया। जेब से ट्रांसमीटर निकाला और स्विच आन करके बोला।

"हेली..बी एट - स्टोन कालिंग।"

"येस सर।" आवाज आई।

"ठीक है।"

"इस्पाट थरी सर...?"

"राईट....ओवर ऐंड आल।"

स्वीच आफ करके उसने ट्रांसमीटर जेब में डाला और रायफल सीधी ही करने जा रहा था कि किसी हेली काप्टर की गरजदार आवाज़ सुनाई दी—और फिर जैसे ही सामने वाली चट्टानों से एक गुब्बारा ऊपर उठा वैसे ही हेलीकाप्टर भी नजर आने लगा।

फिर विनोद ने गुब्बारे के चारों ओर हेलीकाप्टर को चक्कर काटते हुये देखा। वह चट्टानों की ओट लेता हुआ धीरे धीरे चलने लगा। हेलीकाप्टर समान गति से गुब्बारे के चारों ओर चक्कर लगा रहा था, विनोद एक ऐसी जगह रुक गया जहां से हेलीकाप्टर वाले उसे नहीं देख सकते थे -फिर उसने रायफल सीधी की और गुब्बारे का निशाना लेकर फायर कर दिया।

part 6

रीगम बाला - 6

★★★★☆ (2) 2k 5.1k

(6)

यह गुब्बारा भी पहेले ही के समान ज़ोरदार धमाके के साथ फटा और हेलीकाप्टर चक्कर पूरा किये बिना पश्चिम की ओर उडाता चला गया –उसकी आवाज़ अब भी सुनाई दी रही थी –लेकिन ख़ुद नज़रों से ग़ायब हो चुका था।

विनोद उन्ही चट्टानों की ओट लेता हुआ फिर पहली वाली दराड़ में दाखिल हुआ और हेलीकाप्टर की आवाज़ निकट आती हुई महसूस हुई और फिर वह उसके सर पर से गुजर गया –मगर उड़ान ऊँची थी –अगर नीची भी होती तब भी कोई अंतर नहीं पड़ता क्योंकि काफ़ी ऊंचाई पर दराड़ के दोनों ओर वाली चट्टानें एक दुसरे से इतनी निकट हो गई थी सूरज की रोशनी भी अंदर नहीं पहुंच सकती थी –फिर विनोद कैसे देखा जा सकता था।

दराड़ के सिरे पर पहुंच कर विनोद रुक गया। हेलीकाप्टर की आवाज़ से प्रकट हो रहा था कि वह अब नीची उड़ान कर रहा है – फिर एकदम उसकी आवाज़ बहुत तेज हो कर एक दम बंद हो गई –वह वहीँ पास ही उतारा गया था।विनोद ने रायफल वहीँ छोड़ दी और फिर उस सिरे की ओर चल पड़ा जिधर से दाखिल हुआ था। आवाज़ के आधार पर अनुमान था कि वह उसी ओर उतारा गया होगा

लैंड करने वाली हेलीकाप्टर से तीन आदमी उतारे थे । उनमें पाइलट भी सम्मिलित था। पाइलट विदेशी था। शेष दोनों स्थानीय आदमी उसके पीछे इस प्रकार हाथ बांधे खड़े थे जैसे पुश्तैनी नौकर हो। अचानक विदेशी गुर्राया।

“गुब्बार्रा अपने आप नहीं फटा था –कोई दूसरा कारण था।”

“कुछ भी हो –हमें अति शीघ्र पता लगाना होगा वर्ना–” एक स्थानीय आदमी बोला।

“वर्ना क्या ?” विदेशी गुर्राया ।

“उस जगह के मजदूर पहले ही भाग गये थे और अब इधर के भी भाग खड़े हुए होंगे।”

“हां –तुम ठीक कहते हो –” विदेशी ने कहा “तुम यहीं ठहेरो –और जिन खां –तुम मेरे साथ आओ।”

फिर एक आदमी हेलीकाप्टर के पास ही खड़ा रहा और दूसरा विदेशी के साथ एक ओर चल पड़ा।

दोनों ढलान में उतर रहे थे और अंधेरा फैलता जा रहा था। चलते चलते एक जगह विदेशी रुक गया और बोला।

“तुम ठीक कह रहे थे जिन खां—मगर मजदूर गये कहाँ?”

“आस पास की गुफाओं में जा छिपे होगे।”

“कहाँ है वह गुफायें -मुझे वहाँ ले चलो -मैं किसी बात से भी अनभिज्ञ नहीं रहना चाहता।”

“आपने कभी इसकी इच्छा प्रकट नहीं की थी मिस्टर लेकरास।” जिन खां ने कहा।

“ठीक है -चलो अब दिखाओ?”

जिन खां सीधा रास्ता छोड़ कर बाँई ओर मुड़ गया। यह भी ढलान ही थी। इस प्रकार अचानक मुड़ कर संतुलन बनाए रखना उन्ही के वश का काम था जो इसके आदी हो -लेकरास लडखडा उठा—जिन खां ने उसे लपक कर संभाल लिया।

फिर चार छोटी छोटी गुफाओं से उन्हों ने अट्ठाईस आदमी बरामद किये और उन्हें एक जगह एकत्रित करके जिन खां ने उन्ही आवाज़ में कहना आरंभ किया।

“तुम लोग दरो नहीं -इस प्रकार के धमाके तुम्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचा सकते ..तेल तलाश करने वालो ने कोई परिक्षण किये थे।अब हम कोशिश करेंगे कि उन्हें किसी ऐसे स्थान पर इस प्रकार के परिक्षण न करने दें जहां हमारा काम हो रहा हो।”

“हमें कुछ बताया भी तो नहीं जाता..” एक आदमी ने कहा।

“तुम चिंता न करो -ऐसी कोई बात अब नहीं हो सकती--” जिन खां ने कहा फी विदेशी की ओर मुड़ कर बोला ;मोसियो लेकरास, इस समय तो मैंने इन्हें समझा बुझा कर काम करने पर तैयार कर लिया है -लेकिन अगर दुबारा इस तरह की कोई घटना हुई तो फिर यह नहीं कर सकेंगे—छोड़ छाड़ कर भाग ही जायेंगे।”

“मैं देखूंगा.. मैं देखूंगा ..” लेकरास ने चिंता जनक स्वर में कहा।

“आखिर इस संबंध में हम किसे तलाश कर रहे थे।” जिन खां ने पूछा।

“हमारा कोई भी शत्रु हो सकता है।”

“किस लिये -क्या किसी दुसरे को भी हमारे अतिरिक्त यह मालूम है कि वास्तव में हम यहाँ क्या कर रहे हैं।”

“हां -एक खतरनाक आदमी है।”

“कौन है वह?”

“क्या करोगे पूछ कर –मैं नहीं चाहता कि तुम उसका नाम सुन कर घबडा जाओ।”

“मोसियो लेकरास –तुम जिन खां को क्या समजते हो।”

‘फिर भी नहीं चाहता की तुममें आंतक फैले।”

“बस मोसियो –” जिन खान ने आवेश में कहा “अब कुछ न कहना।”

“अच्छा चलो ...” लेकरास दूसरी ओर मुड़ता हुआ बोला।जिन खां उसके पीछे था और टार्च से रास्ता दिखाता जा रहा था।

“क्या तुम्हें मालूम है कि आज हमारा एक हेली काप्टर ग़ायब हो गया?” केकरास ने चलते चलते पूछा।

‘नहीं ..मैं नहीं जानता ..मगर यह हुआ कैसे?”

“शत्रुओं में एक हमारे हाथ आ गया था –मगर वह फरार हो गया –हेली काप्टर भी ले गया।”

‘अब मैं उसके बारे में कुछ नहीं पूछूँगा मोसियो लेकरास ..”जिन खां ने मुंह बना कर कहा।

“वह कर्नल विनोद का असिस्टेंट था।”

“कौन !” जिन चलते चलते रुक गया “कर्नल विनोद।”

“हो सकता है कि तुमने उसका नाम न सूना हो।”

“केवल एक ही कर्नल विनोद पूरे देश में शैतान के समान प्रसिद्द है।” जिन भर्राई हुई आवाज़ में बोला।

“और मैं उसी कर्नल विनोद की बात कर रहा था।” लेकरास ने चुभते हुए स्वर में कहा।

“मैं जानता हूं –उसके बारे में सब कुछ जानता हूं –मगर उसे कैसे मालूम हुआ –हम तो सरकार की आज्ञा से खोदाई कर रहे हैं।” जिन ने पूछा।

“सरकार की आज्ञा से हम पुरातत्व के लिये खोदाई कर रहे हैं, लेकिन क्या हमारी खोदाई का ध्येय भी यही है।”

“हम जिस ध्येय के लिये खोदाई कर रहे है उसका पता किसी दुसरे को कैसे चला।”

"कहानी बहुत लम्बी है . मैं संक्षिप्त में बता रहा हूं -ध्यान से सुनो -फ्रांस से एक लड़की आयी थी। उसके पास चमड़े पर एक प्राचीन लिखावट थी—वह इबारत उसी खजाने से संबंध रखती थी जिसे हम तलाश कर रहे हैं -बर्खा में दो भिक्षुओ ने उस लिखावट को पढ़ा और लड़की सहित रीगम बाला की ओर चल पड़े। मार्ग में किसी प्रकार कर्नल विनोद के हाथ लगे -उस तहरीर के लिये हममें और कर्नल विनोद में संघर्ष आरंभ हो गया -कैप्टन हमीद उस लड़की को ले भागा।वह तहरीर मानिक लाल कोठारी के मोटेल में जाल कर राख हो गई -दोनों भिक्षु भी जाल मरे।"

"ओह -तो यह कहानी थी मानिक लाल के मोटेल की --" जिन खां ने कहा।"हां फिर हमीद उस लड़की सहित मेरे हाथ लगा मगर फिर निकल भागा और हेलीकाप्टर भी ले गया।"

"तो वह कहीं भी पकडे जा सकते हैं ...आखिर हेलीकाप्टर कहाँ छिपाएंगे।"

"देखे -क्या होता है -लड़की भी उसी के साथ है—हां तो मैं यह कह रहा था कि गुब्बारों वाली हरकत विनोद के अतिरिक्त किसी की नहीं हो सकती -इसीलिये मैं तुम्हारे साथी को हेलीकाप्टर के पास छोड़ आया था।"

"अगर वह हरकत कर्नल विनोद की थी तो आपको पहले ही बता देना चाहिये था।" जिन व्याकुलता के साथ बोला।

"क्या सचमुच तुम डर रहे हो जिन खां?"

"सुनो मोसियो लेकरास ..." जिन गुर्राया "मैं एक पढ़ा लिखा आदमी हूं -अगर तुमने डरने वाली यही बात मेरे कबीले के किसी दुसरे आदमी के बारे में कही होती तो वह तुम्हें ज़िंदा न छोड़ता।"

"ओ हो --तुम नाराज हो गये मेरे दोस्त!"

"हम अपने बचन का सम्मान करना जानते है मोसियो -इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं -सिलसिले में उन्हें केसेदबदख़ ज पार्टी लीडर मान चुके हैं—और खजाने के सिलसिले में तुम जो भी करने को कहोगे, वह हम करते रहेंगे—बस --?"

"मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं कि तुम एकदम से नाराज क्यों हो गये?"

"कर्नल विनोद के कारण?" जिन ने कहा।

"क्यों ?"

"अगर उसको खजाने की सुन गुण मित्म्गाई है तो वह उसे हमारे हाथ कभी न लगने देग।"

"मैंने गलत तो नहीं कहा था --" लेकरास हंस पड़ा।

"नहीं ---" जिन पैर पटक कर बोला "बल्कि इसलिये कि तुम उससे खुल्लम खुल्ला टकराव से हमें रोकोगे। तुम चाहोगे कि सारा कम खामोशी से होता रहे -मगर यह सुन लो -अगर हमारे कबीले को यह मालूम हो गया कि सामना कर्नल विनोद से है तो फिर कबीले का एक भी आदमी इस प्रकार चूहों के समान काम करना पसंद नहीं करेगा ..जिस तरह तुम काम ले रहे हो।"

"आखिर क्यों ?"

"मेरे कबीले की इज्ज़त का सवाल है ।"

"यही तो पूछ रहा हूं जिन खां --" लेकरास ने कोमल स्वर में कहा।

"एक बार इसी कर्नल विनोद ने हमारे कबीले के कुछ आदमियों को एक मामिले में गिरफ़्तार कर लिया था। उनमें कबीले का सरदार भी था ..बस तभी से हमारे कबीले का बच्चा बच्चा कर्नल विनोद के खून का प्यासा हो गया है ..फिर तुम्ही बताओ कि।"

"बस बस ..मैं समझ गया -व लेकरास ने बात काट कर कहा "अब इस बात को यहीं समाप्त कर दो ...आज ठंड बहुत बढ़ गई है। आसमान का रंग बता रहा है कि शायद बर्फ भी गिरे ।"

दोनों फिर चल पड़े। दोनों ने ओवरकोट के कालर खड़े कर रखे थे।

हेली काप्टर के सामने उनका साथी खडा नजर आया।

"जिन खां ...कल सुबह हम देखेंगे कि क्या कर सकते हैं" लेकरास ने कहा और काक पेट में जा बैठा जिन खां और उसका साथी पिछली सीट पर बैठे और जिन अपने साथी को वह बातें बताने लगा जो उसके और लेकरास के मध्य हुई थी ।उसके चुप होते ही साथी ने खांसते हुए कहा।

"यह अच्छा नहीं हुआ।"

फिर जिन खां चोंक पड़ा, क्योंकि लेकरास ने अभी तक हेली काप्टर का इन्जिन चालू नहीं किया था। उसने लेकरास को आवाज़ दी ..मगर उत्तर नहीं मिला -फिर उठ कर देखा। वह काक पेट में नहीं था।

"इसका भी जवाब नहीं है--" वह बडबडाता हुआ बैठ गया, फिर बोला "अपने साये से भी भड़कता है—विनोद के नाम से सिट्टी गम हो गई है।"

फिर उसने अट्टहास भी किया। मगर उसका साथी मौन ही रहा, इतने में बाहर से लेकरास की आवाज़ आई।

"दोनों नीचे उतर आओ ।"

"चलो असलम खां ...नीचे उतरो -व जिन ठंडी साँस खींच कर बोला "सर्दी भी आज ही टूट पड़ेगी।"

दोनों नीचे उतर आये।

"क्या बात है मोसियो लेकरास ?" जिन खां ने पूछा।

"मेरे साथ आओ --" वह धीरे से बोला और दोनों चुपचाप उसके पीछे चल दिए। एक जगह रुक कर लेकरास ने कहा "वह ऊपर देखो।"

सामने वाली चट्टान के उपरी भाग पर मंद सा प्रकाश नजर आ रहा था। लेकरास बाई ओर मुडा और चट्टान पर चढ़ने लगा—फिर ऊपर पाहुन्छ कर तीनों ने रिवाल्वर निकाल लिए और बड़ी सावधानी से प्रकाश की ओर बढ़ाने लगे।

अन्त में वह एक पतली सी दराड़ के निकट जा पहुंचे और तब उस प्रकाश का भेद खुला। एक बड़ी सी जलती हुई टार्च पत्थर से टिकी खाड़ी थी पचहत्तर अंश का कोण बना रही थी। टार्च के पास ही कुछ और वस्तुएं भी मिलीं, जिसमें सुरक्षित की हुई खाद्य पदार्थ का एक डब्बा भी था।"मैं इस दराड़ में जाकर देखता हूं--" जिन खां ने कहा और उसने अपनी टार्च जला ली, फिर दरद नेब दाखिल हो गया।

"तुम उस रास्ते की निगरानी करो जिससे हम यहां तक आये हैं।" लेकरास ने जिन के साथी असलम खां से कहा और वह चला गया। लेकरास वहीँ खडा रहा।

कुछ देर बाद जिन खां को खजाने का प्रकाश दिखाई दिया और फिर वह बाहर निकाला। लेकरास निकट पहुंच कर बोला।

"वह बहुत जल्दी में यहाँ से भागा है।"

"दराड़ नेब तुम्हें क्या मिला ?" लेकरास ने कहा।

जिन खां ने एक हाथ की मुट्ठी खोल कर उस पर टार्च का प्रकाश डाला। ताज़ी जली हुई दिया सलाई की कुछ तीलियाँ और सिगार के कुछ टुकडे दिखाई दिये।

"ओ हो सिगार" लेकरास ने एक टुकडे को चुटकी से पकड़ कर उठाया। उसे ध्यान पूर्वक देखा, फिर बोला "यह विनोद के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता था बस चुपचाप निकल चलो।"

मोसियो लेकरास -प्लीज़!"

"यह बहस का समय नहीं है जिन खां -अंधेरा किसीको नहीं छोड़ता -हमें फौरन यहाँ से निकल जाना चाहिये, वर्ना बात बिगाड़ जायेगी—" लेकरास कहता हुआ आगे बढ़ा।

कुछ देर बाद उनका हेली काप्टर वायु मंडल में उड़ रहा था। जिन खां और असलम मौन थे। यात्रा लम्बी नहीं हुई। पाँच या छह मिनिट के बाद हेली काप्टर नीचे उतरने लगा। जब वह धरती पर उतरा तो लेकरास ने कहा।

"तुम दोनों नीचे उतर जाओ।"

मगर न दोनों नीचे उतरे और न कुछ बोले।

लेफरास ने इन्जिन बंद करके अंदर की रोशनी जलाई और उनकी ओर मुड़ कर कठोर स्वर में बोला।

"मैंने कहा था कि तुम दोनों नीचे उतर जाओ।"

part 7

रीगम बाला - 7

(2) 2.1k 5.2k

(7)

दुसरे ही क्षण जिन खां का रिवाल्वर होल्स्टर से निकाला और उसके साथी असलम खां की पस्ली से जा लगा, फिर उसने कहा।

"मोसियो! इसका कालर नीचे गिरा दीजिये और तुम अपने हाथ ऊपर उठाओ वर्ना शूट कर दूंगा।"

लेफरास के चेहरे पर परेशानी के लक्षण नजर आये। जिन खां फिर बोला।

"जल्दी कीजिये मोसियो लेफरास यह मेरा साथी असलम नहीं मालूम होता।"

लेफरास ने हाथ बढ़ा कर उसके ओवर कोट का कालर नीचे गिरा दिया और चकित रह गया।

"तुम कौन हो ?" जीन खां उसकी पसली पर रिवाल्वर की नाल गडाता हुआ गुर्राया।

"मैं गूंगा हूँ।" उस आदमी ने हँसकर कहा।

"मेरा साथी कहाँ है ?"

"तुम दरो नहीं - तुम्हारे साथी को मैंने अपने कपड़े पहना दिये है, वह भी बहुत गर्म थे। तुम्हारा साथी ठंड से सुरक्षित रहेगा।"

"ओहो - ठहरो।" लेफरास बोल पड़ा "तुम इसे कवर किये रहो! हम वीरान किले की ओर चलते है।"

"नहीं मोसियो।" जीन कठोर स्वर में बोला "पहले मेरे साथी का पता मालूम होना चाहिये।"

"मूर्खता की बातें न करो....वही चल कर मालूम का लेंगे।"

"नहीं मोसियो....मैं जान बूझ कर अपने साथी का जीवन खतरे में नहीं डाल सकता।" जीन बोला।

"अच्छी बात है, इसे नीचे उतारो....यही समझ लेते है।"

"नीचे उतरो।" जीन खां गुर्राया और साथी ही उसको रास्ता देने के लिये पोजीशन भी बदल ली।

वह आदमी चुपचाप नीचे उतर गया, फिर वह भी उतरा।

"तुम कौन हो ?" जीन ने स्थिति समझते हुये कोमल स्वर में पूछा।

"अगर मैं तुम्हें अपना नाम भी बता दूं तो तुम्हें क्या लाभ होगा....तुम्हें तो बस अपने साथी की चिंता होनी चाहिये।" उस आदमी ने कहा।

"यह क्या कह रहा है ?" लेफरास ने जीन से पूछा। वह भी उतर के वहीँ आ खड़ा हुआ था।

"तुम्हारी सरलता के लिये मैं तुम्हारी ही भाषा में बातें कर सकता हूँ।" उस आदमी ने कहा।

"तो बताओ....तुम कौन हो ?" लेफरास ने मुक्का तान कर पूछा।

"अशिष्टता नहीं।" वह आदमी गुर्राया "वर्ना तुम्हारे इसी साथी के रिवाल्वर की गोली तुम्हारे सीने के पार हो जायेगी।"

"अधिक बातें न बनाओ.....मेरी बात का जवाब दो ?" जीन खां क्रोध दबा कर बोला।

"मेरा नाम सुलतान खां है।" उस आदमी ने कहा।

"तुम ने मेरे साथी की जगह लेने की कोशिश क्यों की ?"

"अगर उसकी जेब से रक़म बरामद हो गई होती तो मैं अपनी राह लेता।"

"इधर के डाकूओं को मैं जानता हूँ।" जीन ने तेज लेह्जे में कहा "लेकिन उनमें से कोई भी तुम्हारी तरह इंग्लिश नहीं बोलता।"

"मैंने कब कहा है कि मैं पेशावर डाकू हूँ....बस अचानक कुछ रक़म की जरुरत पड़ गई है मुझे।"

"इसे नीचे ले चलो।" लेफरास ने धीरे से कहा "इसकी ओर से संतुष्ट हो जाने के बाद ही अब मैं कही जा सकूंगा।"

हेलीकाप्टर किसी इमारत की छत पर उतरा था।

"तुम मेरे साथ किसी प्रकार का बुरा व्यवहार नहीं कर सकते।" उस आदमी ने कहा।

"मोसियो - मुझे फौरन अपने साथी के बारे में मालूम होना चाहिये।"

"जीन खां - मुझे उसी का कोई कोई आदमी यह मालूम होता है।" लेफरास ने कहा और उसने भी रिवाल्वर निकाल लिया।

"ओह तो तुमने भी रिवाल्वर निकाल लिया।" उस आदमी ने हंस कर कहा "हाँ दोस्तों! मैं उसी का आदमी हूँ।"

"किसका?" जीन ने व्याकुलता के साथ पूछा।

"अपने मोसियो लेफरास से पूछो।"

"मैं गलत नहीं कह रहा हूँ जीन खां - इसे नीचे ले चलो।"

"मिस्टर लेफरास - मैं वास्तव में यह मालूम करना चाहता था कि तुम्हारी दूसरी पोज़ीशन क्या है।" उस आदमी ने गंभीरता के साथ कहा "यह मैं जानता हूँ कि यह इमारत जिया लोजिकल सर्वे के संबंध में हेड क्वार्टर के तौर पर काम देती है - हेली काप्टर भी सरकारी है - मेरा चीफ तुम्हारे विरुध्ध प्रमाण एकत्रित करने में दोड धूप कर रहा है।"

"देखा तुमने - यह कर्नल विनोद की बात कर रहा है।" लेफरास बोला।

"मेरा साथी।" जीन खां दांत पीस कर बोला।

"तुम्हारा साथी अब उसी रूप में तुम्हें वापस मिल सकता है जब कि मुझे किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाया जाये।"

"उससे पहले तुम मुझे यह बताओगे कि विनोद कहाँ है?" लेफरास पैर पटक कर बोला।

"मुझे नहीं मालूम - और अगर मालूम भी होता तब भी तुम मुझसे कुछ न उगलवा सकते।"

"जीन खां - इसे नीचे ले चलो।" लेफरास दहाड़ा।

"जितनी देर करोगे तुम्हारा साथी उतने ही अधिक कष्ट और पीड़ा में ग्रस्त होता जायेगा।"

"मैं कह रहा हूँ जीन खां कि इसे नीचे ले चलो।" लेफरास बोला।

"नीचे चलो।" जीन खां गरजा।

"क्यों बेकार गला फाड़ रहे हो।" वह आदमी हंस पड़ा "मुझे नीचे उतारने के लिये तुम्हें क्रेन का प्रबंध करना पड़ेगा - तुम जैसे तो शायद मुझे एक इंच भी न हटा सकें।"

"मोसियो - आप इसे कवर किये रहिये .....मैं देखता हूँ।" जीन ने अपना रिवाल्वर होल्स्टर में रखते हुये कठोर स्वर में कहा - फिर वह उस आदमी को आगे ढकेलने के लिये बढ़ा ही था कि उस आदमी ने बड़ी फुर्ती से नीचे झुक कर उसे ऊपर उठाया और लेफरास पर फेंक दिया।

दोनों साथ ही गिरे - फिर उस आदमी ने फौरन ही अपनी जेब से कोई वस्तु निकाल कर उनके निकट फेंकी - मंद सा धमाका हुआ और धुयें के बादल उठने लगे।

धुँआ - गहरा धुँआ - दोनों खांसते रहे और बेबसी से वह आवाज सुनते रहे जो हेली काप्टर का इन्जिन वायु मंडल में प्रसारित कर रहा था।

लेफरास ने खांसते हुये अपने रिवाल्वर के सारे चेम्बर खली कर दिये - मगर हेली केप्टर वायु मंडल में ऊपर उठता ही चला गया और फिर अनंत अंधकार में गम हो गया।

वह किसी प्रकार की शारीरिक पीड़ा ही थी जिससे हमीद को जगाया था - विचित्र प्रकार का शोर उसके कानों में गूंज रहा था और आंखों के सामने आग की ऊँची ऊँची लपटें थी।

धीरे धीरे जब पूर्ण रूप से उसका जागरण हुआ तो उसने देखा कि उसका शरीर रस्सियों से जकड़ा हुआ है - पास ही में अलाव जाल रहा है और जोर से ढोल पीटे जा रहे है - फिर उसे रीमा दिखाई पड़ी जो ढोल की आवाजों पर उछल कूद रही थी और उसके पास ही एक कवायली चमड़े का चाबुक लिये खड़ा था। जब भी रीमा के क़दम सुस्त पड़ने लगते - कबायली चाबुक फटकारता।

लेकिन यह हुआ कैसे....वह तो रीमा के साथ हेली काप्टर ही में सोया था और हेली काप्टर उसी गढ़े में था जहां तक नजर नहीं पहुंच सकती थी। दोनों ने डिब्बो में सुरक्षित की हुई खाध्य पदार्थों से पेट भरे थे। कुछ देर तक इधर उधर की बातें की थी - फिर हेली काप्टर ही में सो गये थे - फिर यह हुआ कैसे - क्या रीमा भी उसी के समान बेखबर सो गई थी।

रीमा ढोलकों की आवाजों पर नाचे जा रही थी। उसके चेहरे पर ऐसे भाव अंकित थे जैसे होश हो न हो। बस वह ढोलकों की "धमा धम" पर नाचे जा रही थी। वातावरण से बेखबर उसके होश में न रहने वाली बात इस प्रकार भी साबित हो गई कि अचानक एक कबायली ने उठ कर उसकी ओर रिवाल्वर से फायरिंग आरंभ कर दी - सारी गोलियां रीमा के निकट से निकली चली गई - मगर उसके चेहरे पर न तो फायरिंग की प्रति क्रिया आई और न ऐक्शन ही में किसी प्रकार का परिवर्तन हुआ!

फिर उस भीड़ से एक आदमी निकला। लिबास तो कबायलियों ही जैसा था,मगर ख़ुद कबायली नहीं था बल्कि गोर रंग का कोई विदेशी था—उसने अपना एक हाथ ऊपर उठाया और चारों ओर खामोशी छा दी। ढोलकों की धमाधम सन्नाटे में दफ़न हो गई। अलाव की लड़कियों के चीटीखने की आवाज के अतिरिक्त और किसी प्रकार की आवाज़ नहीं सुनाई देती थी।

रीमा के पैर भी थक गये थे और अब वह एक ही जगह खाड़ी झूमे जा रही थी।आंखें खुली हुई अवश्य थी, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे उसे कुछ दिखाई न दे रहा हो! हमीद आश्चर्य से आंखें फाडे उसे देख रहा था।

यह एक इतनी बड़ी गुफा थी किसैंकड़ो आदमी विश्राम कर सकते थे।

हमीद के शरीर पर रस्सी का बंधन सख्त था। उसे बांध कर जमीन पर डाल डिया गया था। वह अपने शरीर का कोई अंग हिला नहीं सकता था—मगर पूरे शरीर से जिधर चाहता लुढ़क सकता था।

अचानक विदेशी ने उसकी ओर देख कर कहा।

"कैप्टन हमीद ! मरने के लिये तैयार हो जाओ ।"

हमीद कुछ नहीं बोला। वह अब भी रीमा को घूरे जा रहा था।

"कैप्टन हमीद !" विदेशी ने फिर उसे संम्बोधित किया "यह लड़की ट्रान्स में है ! ईससे जो कुछ कहा जायेगा करेगी! इसी के हाथों तुम्हें क़त्ल होना है -वैसे यह तुम्हारे लिये मान भी सकती थी, मगर इस समय अपने हाथों से तुम्हें क़त्ल कर देगी—इसलिये कि इस समय पूरी तरह से मेरे अधीन है।"

वह मौन हो कर रीमा की ओर मुडा और बोला।

"लड़की! यद्यपि तुम्हारी आंखें खुली हुई है -मगर तुम सो रही हो -फिर भी मैं तुम्हें जो दिखाना चाहूंगा वह तुम देखोगी ! जो सुनाना चाहूंगा वह सुनोगी -तुम मुझसे सच बोलोगी—बोलोगी न सच—उत्तर दो ?"

"सच ही बोलूंगी --" रीमा के होंठ हिले मगर हमीद को ऐसा लगा जैसे वह किसी और की आवाज़ हो। रीमा की आवाज़ तो नहीं थी।

"कैप्टन हमीद से तुम्हारा क्या संबंध है?" विदेशी ने पूछा।

"अभी कोई कानूनी संबंध नहीं है--" रीमा ने उत्तर दियाज़

"उसके लिये किस प्रकार की भावनाएं रखती हो?"

"मैं उसे दिल से चाहती हूं—उसके बिना एक दिन भी जीवित नहीं रह सकती।"

"वह देखो...सामने एक कुत्ता बंधा पडा है --" विदेशी ने कहा।

वह बराबर रीमा की आंखों एन देखे जा रहा था! उसने पूछा"वैसे तुम क्या देख रही हो !"

"देख रही हूं की एक कुत्ता बंधा पड़ा है--" रीमा बोली।

"तुम्हें उस कुत्ते पर वाए करना है--"

हमीद को झुरझुरी सी आ गई, क्योंकि वह विदेशी को रीमा के हाथों में एक कटार थमाते हुए देख रहा था।

"उस कुत्ते को इस कटार से मार डालो--" विदेशी ने कहा।

रीमा आगे बढ़ी और झुक कर हमीद पर वार किया । हमीद ने बड़ी फुर्ती से करवट बदली और लुढ़कता हुआ उससे दूर निकल गया।

"लड़की ! ठहर जाओ --" विदेशी ने गरजदार आवाज में कहा।

रीमा सीधी खडी हो गई—फिर विदेशी ने हमीद से कहा।

"तुम अधिक देर तक अपने को न बचा सकोगे। उसकी कटार तुम्हारे सीने के पार हो ही जायेगी।"

"क्या तुम ख़ुद मुझे गोली नहीं मार सकते?" हमीद किसी ज़ख्मी हिंसक पशु के समान गुर्राया।

"कर्नल विनोद का पता बता कर तुम अपना जीवन पुरस्कार स्वरुप प्राप्त कर सकते हो ।" विदेशी ने मुस्कुराते हुए कोमल स्वर में कहा।

"बड़ी विचित्र बात है ।" हमीद ने जहरीले अवर में कहा।

"तुम कहना क्या चाहते हो?"

"तुम मुझे भी ट्रान्स में लाकर कर्नल विनोद का पता मुझसे पूछ सकते थे। आखिर इस षटराग फैलाने की क्यों आवश्यकता पड़ी?"

"तुम ट्रान्स में नहीं आओगे -लेकिन तुम्हारी संकल्प शक्ति बहुत तेज है।"

"ओह!"

"विश्वास करो कैप्टन -अगर तुम ने कर्नल विनोद का पता नहीं बताया तो इस लड़की की कटार से न बच सकोगे।"

हमीद ने सोचा कि अगर इस बार उसने रीमा के साथ ही साथ कुछ और आदमियों को भी इस काम पर लगा दिया तो वह सचमुच दुसरे दिन का सूरज न देख सकेगा - फिर क्या करना चाहिये - इस समय तो झूठ बोल कर जान बचा ही लेना चाहिये। जब तक वह उसकी बात की तस्दीक न कर लेंगे तब तक तो निश्चय ही उसे जिन्दा रखेंगे....हो सकता है इस मध्य छुटकारे की कोई सूरत निकल आये।

"बोलो....क्या कहते हो ?" विदेशी ने पूछा।

"अगर मैं उसका पता भी दूं तो तुम उस पर हाथ न डाल सकोगे।" हमीद ने कहा।

"तुम इसकी चिंता न करो।"

"लेकिन इसकी क्या जमानत है कि पता मालूम कर लेने के बाद तुम मुझे क़त्ल नहीं करोगे ?"

"मेरी बात पर विश्वास करो।"

---

part 8

रीगम बाला - 8

★★★★☆ (2) 1.9k 5.2k

(8)

"तुम झूठ बोल रहे हो।" हमीद ने कहा "मुझे हर हाल में मरना है - फिर मैं अपने चीफ का जीवन क्यों खतरें में डालूँ - नहीं नहीं मैं अपने चीफ का पता नहीं बता सकता - तुम शौक से मुझे मार डालो।"

विदेशी किसी सोच में पड़ गया, फिर कबालियों की ओर मुड़ कर किसी प्रकार का संकेत किया। दो आदमी आगे बढ़े और उन्होंने हमीद को खोलना आरंभ कर दिया।

पल भर में वह आजाद था, रीमा जहाँ रुकी थी वहीँ अब भी खाड़ी थी और कटार उसके हाथ में थी।

"लड़की! कटार धरती पर डाल दो।" विदेशी ने रीमा की आँखों में देखते हुये कहा।

कटार के गिरने की आवाज गुफा में गूंजी, फिर विदेशी ने हमीद से कहा।

"कैप्टन हमीद - अगर तुम ने इस गुफा से बाहर निकलने की कोशिश की तो तुम्हारा शरीर छलनी होकर रह जायेगा।"

"मैं समझता हूँ।" हमीद बोला।

"क्या तुम भी इस लड़की को चाहते हो?" विदेशी ने पूछा।

"मैं अभी निर्णय नहीं कर सका।"

"क्या मतलब?"

"मेरे साथ एक ट्रेजडी है।"

"पहेलियों में बातें न करो - मेरे पास समय कम है।"

"मैं लड़कियों को चाहने की कोशिश तो करता हूँ - मगर वह मेरे दिमाग से निकल जाती है।"

"तुम अब भी खुल कर बात नहीं कर रहे हो।"

"वह कुछ दिनों तक तो सचमुच मुझे चाहती है - फिर मूर्ख बनाने लगती है।"

"क्या तुमने इस लड़की के बारे में यही महसूस किया है?"

"कुछ कुछ!"

"तुम भ्रम में पड़े हो कैप्टन - इसने तुम्हारे प्रेम में संस्था से गद्दारी की है....और संस्था से द्रोह की सजा मौत है।"

"कुछ भी हो...मैं संसार की किसी भी लड़की पर विश्वास नहीं कर सकता।"

"यह ऐसी बनाई जा सकती है कि तुम इस पर विश्वास करने लगो।"

"वह किस प्रकार मेरे दोस्त!"

"यह मत पूछो - मैं पंद्रह दिन के अंदर इसे ऐसा बना सकता हूँ कि यह तुम्हारे लिये एक खरीदी हुई दासी साबित हो।"

"आखिर मैं क्या चाहता हूँ।" हमीद ने इस भाव मैं कहा जैसे अपने आप से पूछ रहा हो।

"मैं मालूम कर सकता हूँ।"

"मुझे खुशी होगी अगर तुम मेरी मानसिक स्थिति का अन्वेषण कर सको।"

"हो सकता है - लेकिन इसके लिये तुम्हें अपनी संकल्प शक्ति को मेरे अधीन करना होगा। मैं तुम्हें ट्रान्स में लाकर मालूम कर लूँगा।"

"मैं तैयार हूँ मेरे अपरिचित दोस्त।" हमीद ने कहा। वह दिल में खुश हो रहा था यह सोच कर कि चलो अच्छा है.....यह उसे ट्रान्स में लाकर विनोद का पता पूछेगा और फिर संतुष्ट हो जायेगा कि मैं सचमुच कर्नल विनोद का पता नहीं जानता - इस प्रकार कम से कम इनकी यातनाओं से तो बचा रहेगा। रही क़त्ल करने बात....तो यह उसे क़त्ल कर ही नहीं सकते।

फिर विदेशी ने उसे लेट जाने का परामर्श दिया और उसे ट्रान्स में लाने के लिये आदेश देने लगा। हमीद ने अपने मस्तिष्क को ढील दे दी और धीरे धीरे तन्द्रा का शिकार होता गया।

पता नहीं कितनी देर तक अचेत रहा था - दुबारा जागा तो सर रीमा की जांघ पर था और वह हृदय ग्राही मुस्कान के साथ उसकी आँखों में देख रही थी। अलाव पहले ही के समान जाल रहा था....मगर रीमा के अतिरिक्त अब वहाँ कोई भी नहीं था।

"सो जाओ।" वह उसका गाल सहलाती हुई भर्राई सी आवाज में बोली "मैं सारी रात इसी तरह बैठी रहूंगी।"

हमीद जल्दी से उठ बैठा और धीरे से पूछा।

"वह सब कहां गये?"

"कौन सब?" रीमा ने आश्चर्य के साथ पूछा।

"जिन्होंने हमें इस हाल को पहुँचाया है!"

रीमा कुछ सोचने लगी। उसकी आँखों में उलझन के लक्षण थे।

"तुम क्या सोचने लगी - मेरी बात का उत्तर दो?"

"मम....मैं यह सोच रही हूँ कि हम लोग कहाँ है?" रीमा ने कहा।

"तो क्या तुम ने यहां किसी को नहीं देखा?"

"नहीं।" रीता ने कहा "हम लोग तो हेली काप्टर में सोये थे.....फिर यहाँ कैसे?"

हमीद उसे चकित द्रष्टि से देखने लगा और रीमा भयभीत नजरों से चारों और देखने लगी। अलाव का प्रकाश फैला हुआ था - फिर उसने हमीद को पूछा।

"मम....मुझे डर लग रहा है।"

"दरो नहीं....पहले मैं मरूँगा.....फिर तुम पर कोई आँच आयेगी।"

"तुम अपने मरने की बात मत करो।" वह उसके गले में बाहें डाल कर रोने लगी।

हमीद उसकी पीठ थपकता हुआ तसल्ली देने लगा। उसे उस समय तक का होश था जब विदेशी उसे ट्रान्स में लाने के लिये आदेश दे रहा था....फिर नींद में क्या बीती थी....इसका उसे कोई पता नहीं था। उसने मस्तिष्क पर जोर देना आरंभ किया की शायद कुछ याद आ जाये - मगर कुछ याद नहीं आया।

कुछ देर बाद उन्होंने गुफा का मुख तलाश करना आरंभ किया और इसमें उन्हें सफलता मिल गई! हमीद ने घडी देखी। रात के तीन बजे थे। वह सोचने लगा कि अब वह लोग पूरी तौर पर उस पर नजर रखेंगे....और यही एक रास्ता विनोद तक पहुँचने में लाभ दायक सिध्ध हो सकता था। उसने लम्बी सांस खींची और रीमा को लिये हुये अलाव की ओर पलट आया।

"अब क्या होगा?" रीमा ने उदासीनता के साथ पुछा।

"देखा जायेगा।" हमीद ने झल्ला कर कहा।

रीमा ने उसे आश्चर्य से देखा, फिर उसकी आँखों में दुख की परछाई नजर आने लगी! उसने दर्द भरे स्वर में कहा।

"तुम तो ऐसा व्यहार करो....अब तुम्हारे अतिरिक्त और कौन है इस संसार में मेरा।"

"तुम गलत समझी।" हमीद ने कोमल स्वर में कहा "मैं वास्तव में इन परिस्थितियों से परेशान हो गया हूँ।"

"मगर इसमें मेरा क्या दोष है....मैं तो यथा शक्ति तुम्हारी सहायता ही करती रही हूँ....मैं ख़ुद भी नहीं जानती कि यहां तक कैसे पहुँची।"

"तुमने यहां किसी को भी नहीं देखा था?" हमीद ने पूछा।

"नहीं....मैं जागी थी तो तुम मेरे निकट ही सो रहे थे....मैंने तुम्हें उठाना चाहा था मगर तुम्हारी नींद तो बेहोशी मालूम हो रही थी फिर मैं तुम्हारी होश में आने की प्रतीक्षा करती रही थी।"

"अच्छा आओ बैठो।" हमीद ने कहा।

दोनों अलाव के पास ही बैठ गये। रीमा फिर हमीद की ओर देखने लगी।

"सवेरा होने तक हम यहीं ठहरेंगे।" हमीद ने कहा।

"यह सोचो कि हम यहां पहुंचे कैसे....हेली काप्टर कहां गया - यह वह गुफा नहीं है जहाँ हमने हेली काप्टर उतरा था।" रीमा बोली।

"इससे तुम किस नतीजे पर पहुँची ?"

"उन लोगों के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता मगर यहाँ इस प्रकार छोड़ देने का क्या ध्येय हो सकता है ?"

"हमारी निगरानी....उस समय ताज - जब तक कि मेरा चीफ उनके हाथ न लग जाये।"

"बिल्कुल यही बात है - वर्ना हमारे भाग निकलने पर वह हमें जीवित न छोड़ते।"

हमीद ने अपनी जेबें टटोली ! तमाखू की पाउच और पाइप मौजूद थे। उसने संतोष की सांस ली।

सवेरा होते ही दोनों गुफा से बाहर निकले। ठंडी हवा हड्डियों में घुसी जा रही थी।

"हम कहाँ जायेंगे—" रीमा ने पूछा और हमीद को फिर ताव आ गया। वह जैसे चीख पड़ा।

"जहन्नुम में -"

"तुम फिर मिझ पर नाराज होने लगे।"

"आखिर तुम इतनी निराश क्यों हो रही हो"

"मैं नहीं जानती---कुछ भी तो समझ में नहीं आता -पता नहीं क्यों दिल यह चाह रहा है कि तुम्हारे कदमों पर सर रख दूं।"

हमीद चलते चलते रुक कर उसे घूरने लगा और वह सचमुच उसके कदमों पर झुकती चली गई।

"यह क्या पागलपन है" वह उसकी भुजा पकड़ कर उठाता हुआ बोला।

"मैं कुछ नहीं जानती --" वह उसके सीने से सर टिका कर बच्चों के समान सिसकियाँ लेने लगी।

“अब क्या मैं गधे की बोली बोलना आरंभ कर दूं ...देखो औरतों को रोता देख कर मुझे बड़े जोर का गुस्सा आता है।”

“ऐसी बातें न करो कि मेरा दिल टुकडे टुकडे हो जाए।”

“हाय !” हमीद ने कहा और अचानक उसे यह याद आ गया कि उस विदेशी ने उसे इसी का तो विश्वास दिलाने की कोशिश की थी कि वह रीमा को ट्रान्स में ला कर इस प्रकार बना देगा कि उसकी वह दासी हो जाएगी—कहीं रीमा की इस बहकी हुई मानसिक स्थिति में उसी का हाथ तो नहीं है।”

“रीमा !” वह भर्राई हुई आवाज में बोला “मुझे अपने व्यवहार पर दुख है—आगे ऐसा नहीं होगा।”

“चुन कि मैंने ख़ुद तुमसे मुहब्बत की भीख मांगी थी -इसलिये तुम मुझे ठुकरा रहे हो।”

“अब ऐसे सस्ते डायलोग भी न बोलो ...मुहब्बत ...भीख ..ठुकराता हूं ...बकवास है।”

“चलो बकवास ही समझ करमेरी दशा पर दया करो--”

“कर दी दया -अब चुप रहो।”

“मै तुम्हारी ही जाती की किसी लड़की के समान तुम्हारे कदमो में पड़ी रहूंगी।”

“ओह ..” हमीद अपने कानों में उंगलियाँ ठूंस कर बोला “क्या तुम यह चाहती हो कि मैं किसी चट्टान से छलाँग लगा दूं।””मैं समझ गई ...”रीमा ने उसके हाथों को पकड़ कर कानों से अलग करते हुए कहा “बिलकुल यही बात है।”

“क्या बात है ?”

“इन्हों ने मेरे विरुद्ध भड़काने की कोशिश की है।”

“तुम बीबियों जैसी बातें करने लगी हो ..और मुझे इस भाव में की जाने वाली बातों से दिली नफ़रत है।”

“वह बर्बाद हो जाएंगे ...ख़ुदा उनको कहीं का न रखेगा--”रीमा बोली।

हमीद दांत पीस कर रह गया। ठंड इतनी थी कि क्रोध भी ठंडा हो गया। गुफा में तो अलाव की गर्मी थी ..फिर इतने सवेरे सर्दी में निकल आने की आवश्यकता ही क्या थी .आखिर वहाँ क्या मुसीबत थी।

“वापस चलो ...”उसने रीमा से कहा।

रीमा बिना कुछ पूछे गुफा की ओर मुड़ गई।

दोनों फिर अलाव के पास जा बैठे और अचानक हमीद फिर अपनी जेबें टटोलने लगाज़ उसके बाद लम्बी और ठंडी सांस खींची।

"क्या बात है?" रीमा ने पूछा। मेरा पर्स ग़ायब है।"हमीद बुरा सा मुंह बना कर बोला "अब हम शायद इन्हीं चट्टानों से टकराते फिरेंगे।"

"यह तो बहुत बुरा हुआ....मेरे पास भी कुछ नहीं है।" रीमा बोली।

"अगर इस बार इस चक्करों से निकल गया तो।"

"तो क्या करोगे ?"

"आवश्यक नहीं कि तुम्हें हर बात बताई जाये।"

"जो दिल चाहे करो...मैं तो अपने आपको तुम पर बलिदान ही कर चुकी।"

"फिर वहीँ घटिया बातें !"

"मैं निश्चय कर लिया है कि तुम्हारे दास दसियों का सा जीवन व्यतीत करूंगी।"

"कुछ देर मौन रहो...कुछ सोचने दो।"

"मेरे कारण तुम्हें कभी कोई कष्ट नहीं होगा।"

"अच्छा अच्छा कुछ देर मुंह बंद रखो।" हमीद ने कहा। उसे विश्वास हो गया कि विदेशी ने ट्रान्स में लाकर इसे कुछ इसी प्रकार का आदेश दिया है...मगर इसका ध्येय ? उसने संस्था से गद्दारी की थी। उसे तो मार ही डालना चाहिये था। प्रकट है कि विनोद की तलाश में वह किसी प्रकार की सहायता नहीं कर सकती थी.....फिर उसे जिन्दा क्यों रखा गया है...उसके सर पर क्यों सवार कराया गया है ?

वह सोचता रहा और अन्त में इसी निष्कर्ष पर पहुंचा कि इस प्रकार वह अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना चाहते है....यह समझाना चाहते है कि उन्होंने संस्था की एक विद्रोही सदस्य को खुल्लम खुल्ला छोड़ रखा है....लेकिन उसकी सहायता भी कर्नल विनोद के किसी काम नहीं आ सकती...बस इतना ही हो सकता है कि वह उन स्थानों को छोड़ दें जिनको रीमा जानती हो...बस।

उसने रीमा को देखा। वह अलाव कुरेद रही थी, फिर उसने उठ कर उसमें कुछ सूखी लकड़ियाँ डाल दीं। उसके भावों में इतना घरेलू पण नजर आ रहा था कि हमीद होठ सिकोड़े बिना न रह सका।

"मुझे भूख लग रही है।" हमीद ने उसे सम्बोधित कर के कहा।

"मेरी बेटियाँ काटो और भून कर खाओ...मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।" रीमा ने बिना उसकी ओर देखे हुये कहा।

"अच्छी बात है....अब मेरी किसी बात का उत्तर न देना।"

"बस नाराज हो गये।" वह उठती हुई बोली और उसके निकट आ बैठी। हमीद ने एक ओर खिसक जाना चाहता। लेकिन रीमा ने उसकी भुजा पकड़ कर कहा "जरा जरा सी बात पर रूठ जाते हो।"

"मैं रूठने की योग्यता नहीं रखता, मेरी भुजा छोडो।"

"नहीं छोडूंगी।" वह उसकी आँखों में देखती हुई मुस्कुराई।

"अगर पेट खाली हो तो मुझे लड़कियों की मुस्कुराहट जहर लगती है।"

---

part 9

रीगम बाला - 9

(1) 1.9k 4.5k

(9)

आज मौसम ऐसा था कि यात्री होटलों से बाहर निकल सकें। सुमन नागरकर की तबियत संभल तो गई थी मगर डाक्टर ने उसे आराम करने का परामर्श दिया था, इसलिये वह कमरे से बाहर नहीं निकलना था। नर्स अब भी उसकी देख भाल कर रही थी।

कासिम उसका नाश्ता कमरे में भिजवा कर ख़ुद डाइनिंग हाल में आ बैठा था। निलनी कारमाउन्ट अभी तक उससे संध्या ही को मिलती रही थी मगर आज उसने नाश्ता के बाद मिलने का वादा किया था। कासिम बड़ी बेचैनी से उसकी प्रतीक्षा करने लगा।

कासिम को उसकी यह बात बहुत पसंद थी कि वह किसी बात पर बहस नहीं करती थी और उसकी बातों में इस प्रकार को दिलचस्पी लेती थी जैसे वह किसी दूसरी दुनिया की बातें कर रहा हो।

कुछ देर बाद निलनी आ गई उसने एक योजना रखी कि कासिम को उछल पड़ने की इच्छा को दबाना पड़ा, उचल पड़ना उसके वश की बात थी भी नहीं। निलनी ने कहा था कि उसे अपनी स्वामिन की देख भाल तो करनी नहीं पड़ती....फिर क्यों न वह कहीं घुमने फिरने चलें....आखिर उसके यहाँ आने का ध्येय तो प्राचीन निर्माण ही देखना था ज़

"हाँ हाँ।" कासिम खुश होकर बोला "मेरे पास भी कुछ प्राचीन है।"

"प्राचीन...तुम्हारे पास....क्या मतलब ?" निलनी उसे विचित्र निगाहों से देखने लगी।

"मेरा बाप...उसका डंडा और दकैया नूसी बातें।"

"दकैया नूसी क्या ?"

"मुझे दकैया नूसी की अंग्रेजी नाहीं मालूम।" कासिम ने लज्जा कर कहा।

"क्या तुम अपने बाप से नफ़रत करते हो ?"

"बहुत जियादा....अगर मैं उसका बाप होता तो अब तक आफ क्र चुका होता।"

"आफ क्या ?"

"जो समझ में न आये उसे गोल पर जाया करो।"

"गोल क्या ?"

"राउण्ड।" कासिम ने ऊँगली नचा कर शून्य में चक्र बनाते हुये कहा।

"कभी काभी कुछ तो समझ में नहीं आता।"

"अंग्रेजी मेरी कौमीजवान नाही है।"

"खैर छोडो....बाहर चलने की क्या रही ?" निलनी ने पूछा।

"मैंने कहाँ देखा है कि लोग टट्टूओं पर्य घोड़ों पर बैठ कर वह सब देखते जाते जाते है....टट्टू पर मैं इसलिये नाहीं बैठ सकता कि कि ख़ुद टट्टू बैठ जायेगा या मैं खड़ा रह जाऊँगा और टट्टू मेरी टांगों के नीचे से निकल जायेगा।"

"हम घोड़े ले लेंगे।" निलनी हँसती हुई बोली।

"किराये पर कोई जीप कियुं नाही ले ली जाये ?"

"जीप हर जगह नहीं जा सकेगी।"

"जहाँ नाहीं जा सकेगी वहाँ नाही जायेगें।"

"बहुत काहिल आदमी मालूम होते हो।" निलनी हँसकर बोली औए कासिम को ताव आ गया। उसने कहा।

"मैं पैदल चल सकता हूँ, मगर घोड़े पर नाही बैठूंगा।"

"मगर क्यों ?"

"मुझे शरम लगती है...ही ही ही ही, भला घोडा क्या सोचेगा दिल में।"

"घोडा सोचेगा ?" निलनी ने कहा।

"हाँ हाँ बिलकुल सोचेगा।"

“बेकार बातें न करो, घोड़े सोचते नहीं है।”

“बात असल में यह है कि पिछले साल एक पहाड़ी स्टेशन पर मुझे शर्मिंदा होना पड़ा था।”

“पता नहीं क्या कह रहे हो।”

“ठीख कह रहा हूँ....वहाँ मैंने एक घोडा लेना चाहा था। घोड़े के मालिक ने कहा...मैं अपना घोडा किसी हाथी को किराये पर नाहीं दे सकता।”

“तो फिर अच्छा यही है कि तुम यहीं बैठे मसखरान करते रहो और मैं हँसती रहूँ।” निलनी ने कहा उसकी हँसी का गलत मतलब निकलते हुये कासिम ने सोचा कि अंग्रेजी में तो वह अच्छी खासी बात कर लेता है...फिर उर्दू में कियुं ड्यूट हो जाता है....ढंग की कोई बात मुंह से निकलती ही नाहीं।

“ठेंगे पर है उर्दू सुर्दू।” वह उर्दू में बडबडाया।

“क्या कह रहे हो ?”

“कुश नाही कुश नाही।” वह जल्दी से बोला और मूर्खो के समान हँसने लगा।

“तुम्हें घोड़े पर बैठना पड़ेगा....जीप का इन्तजार नहीं हो सकता समझे।” निलनी ने कहा “मैं यह निश्चय करके घर से चली थी कि आज आउटिंग होगी ?”

“जैसी आपकी मर्जी।” कासिम मुर्दा सी आवाज में बोला।

“तुम डरो नहीं....सुधाये हुये अच्छी नस्ल के घोड़े होते है। मैं तुम्हारे लिये कोई वेलर तलाश करूंगी।”

“बेलर किया ?” कासिम ने पूछा।

“आस्ट्रेलयी नस्ल का घोडा। बहुत शक्तिशाली औए मोटा ताजा होता है। तुम्हारा बोज सरलता पूर्वक संभाल सकता है।”

कासिम कुछ नहीं बोला। उसने होटल ही से लंच बक्स तैयार कराये औए दोनों निकल पड़े।

“तुम को मेरे साथ चलते हुये शरम तो नाही लगेगी ?” अचानक कासिम ने दुखी स्वर में पूछा।

“नहीं, मैं साढ़े चार फीट की तो हूँ नहीं।” निलनी हँसकर बोली।

“काश मेरा पीछा उससे छूट जाता।” कासिम का गला भर आया था।

“तुम सचमुच सर पोक हो...तलाक क्यों नहीं दे देते।”

“कहाँ जायेगी....लंगड़ी लूली है।”

“उसको खर्च देते रहना।”

“मेरा बाप इस पर तैयार नाही होता।”

“तुम अपने बाप से इतना डरते क्यों हो ?”

“उनसे नहीं बल्कि उनकी करोड़ों की जायद से डरता हूँ।”

“क्या मतलब ?”

“अब मुझे सब कुश बताना पड़ेगा---” कासिम ने कहा और हकला हकला कर अपनी कहानी सुनाने लगा! जब मौन हुआ तो निलनी हंसने लगी।

“तुम हंस क्यों रही हो ..क्या यह सब बेवकूफी की बातें है ?”

“हंसने की बात ही है .इतने रुपयों वाले होकर एक औरत की नौकरी करते हो।”

“तुम्हें जरुरत हो तो तुम नौकर रख लो। मैं सुमन नगरकर की नौकरी छोड़ दूंगा।”

“मैं इतनी दौलतमंद नहीं हूं किकिसीको नौकर रख़ सकूं।मैं ख़ुद ही यहाँ स्कालर शिप पर आई हूं।”

“वह वेलर घोड़े कहाँ मिलेंगे। अब मुझसे पैदल नाही चला जाता।”

“बस थोड़ी सी दूर और।”

फिर वह उस स्थान पर पहुंचे जहां घोड़े किराए पर मिलते थे, कासिम ने अपने लिये एक घोडा चुना और जिन से लटके हुए थैले में लंच बाक्स डाल दिया। फिर उस्जी लगाम थाम कर पैदल चलने लगा। निलनी जो अपने घोड़े पर बैठ चुकी थी -बोली।

“यह क्या ...तुम भी बैठ जाओ।”

“कोई ऊँची जगह मिले तब ना।”

“अरे, रकाब में पैर डाल कर चढ़ जाओ।”

“रकबा का तसमा टूट जायेगा। कई बार ऐसा हो चुका है।”

“तुम तो सचमुच मुसीबत ही हो।” निलनी हंस पड़ी।

“नहीं बदनसीब हूं।” कसीं चलते चलते रुक गया।

“ओह, अरे बाबा .मैंने तो वैसे ही कह डिया था।”

“अच्छा तो फिर देखो” कासिम ने रकाब में पैर डाल कर चढ़ने की कोशिश की और धडाम से दूसरी ओर उलट गया। सचमुच तस्मा टूट गया था।

सर में चोट आई थी, मगर वह चुपचाप सहन कर गया और इतनी देर तक अंग्रेजी में चलने वाली खोपड़ी में जो तेजी आ गयी थी उसने एक शरारत को जन्म दियाज़ उसने दांत मींच लिये और आंखें बंद कर लीं। निलनी पहले तो हंसी थी मगर जब देखा कि कासिम वैसे ही अहिथिल पडा हुआ है तो बौखला कर घोड़े से नीचे उतर गई।निकट आकर पहले तो आवाज़ें दी मगर जब कासिम नहीं बोला तो बैठ कर उसे झंझोड़ने लगी।

कासिम की मानसिक धारा बहक चुकी थी ! वह दम साधे पडा रहा। कभी कभी गहरी साँसें ले लेता।

जब निलनी उसे होश में लाने के सारे जतन करके हार चुकी तो बडबडाने लगी।

“अब क्या करूँ..आसपास कोई दिखाई भी नहीं देता कि उससे सहायता मांगूज़”

वह फिर उसे होश में लाने का उपाय करने लगी कि अचानक उसे पदचाप सुनाई पड़ी और फिर किसी को कहते सुना।

“क्या बात है ?”

निलनी ने मुड़ कर देखाज्ज़ सामने मैथूज़ खडा था।

“ओह मिस्टर मैथ्यूज़ ! यह घोड़े से गिर कर बेहोश हो चुका है ।”निलनी ने कहा और फिर मैथ्यूज़ को उसके गिरने का विवरण बताने लगी।

दोनों की बातों से कासिम जैसे मुर्ख ने भी यह अनुमान लगा लिया कि दोनों एक दुसरे की लिये अपरिचित नहीं है । बल्कि काफ़ी जान पहचान है । फिर उस्त्र मैथ्यूज़ की आवाज़ सुनी।

“कोई बात नहीं है । तुम घोड़े छोड़ दो । थोड़ी देर बाद एक जीप यहाँ पहुंच जाएगी।”

“लेकिम इन दोनों घोड़ों को इनके मालिक तक पहुंचाना मेरे वश से बाहर है” निलनी बोली।

“अच्छी बात है,तुम यहाँ ठहरो, मैं ख़ुद लिये जा रहा हूं।”

“तुम्हारा बहुत बहुत शुक्रिया बेटा।” कासिम ने दिल ही दिल में कहा। “जीप भिजवा दोगे तो और शुक्रिया अदा करूँगा।”

फिर अचानक उसके विवेक पर जमी हुई बर्फ पिघलने लगी,सोचने लगा, एक मर्द इस लड़की को मेरे साथ भेज रहा है—घोड़े पर नाही बैठ सकता तो जीप का इंतज़ाम किया जा रहा है—कोई बात है,कोई चक्कर ज़रूर है।

फिर उसे अपनी वर्तमान स्थिति याद आई।वह लोग याद आए जिन्होंने प्रोफ़ेसर नागरकर को मार डाला था। और प्रोफ़ेसर नागर की लड़की सुमन नागरकर अपने बाप के खून का बदला लेने के लिये कर्नल विनोद से मिल बैठी थी।

विनोद ही की स्कीम के अनुसार दोनों इस होटल में ठहरे थे ज़ कहीं यह वही मामिला न हो,वही लोग न हों।

इससे पहले भी कासिम ने कई बार ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था। हमीद की मित्रता के आधार पर कितनी ही बार अनोखे संसारों की सैर करनी पड़ी थी।

“तो फिर यह लड़की उसे कहाँ ले जाना चाहती हाई, ठेंगे से, देखा जाएगा। लड़की ही तो है,कोई शेर बब्बर तो नाही है।”

सुसने सोचा और उसी प्रकार आंखें बंद किये पडा रहा।

फिर उसने उस आदमी और दोनों घोड़ों के वापस जाने कि आवाज़ें सुनी और निलनी फिर उसे झंझोड़ झंझोड़ कर आवाज़ें देने लगी।

इस बार कासिम ने आंखें खोल दी, क्योंकि उसे वह दोनों लंच बाक्स यद् आ गये थे जो घोड़े की जिन से लटकते थैले में रखे गये थे और अब घोड़े वापस जा रहे थे। कहीं घोड़ों के साथ वह भी न जा रहे हो। इतनी दूर पैदल चलने के कारण उसे कुछ भूख लग आयी थी।

"क्या बात है, तुम कैसे हो ?" निलनी ने झुक कर अधीरता के साथ पूछा।

'घोड़ा कहाँ है -मेरा घोडा--" कासिम उठाने की कोशिश करता हुआ बोला।

"घोड़े गये -अब जीप जायेगी--" निलनी ने कहा।

"और दोनों लंच बक्स ?"

"मिझे क्या मालूम कि तुमने कहाँ रखे थे।"

"मेरे घोड़े के थैले में थे।"

निलनी हंस पड़ी,हसती रही कासिम झल्ला कर बोला।

"मेरा मज़ाक क्यों उड़ा रही हो।"

"घोड़े तो गये,अब तुम क्या खाओगे ?"

"मुझे खाने पीने के मामिले में मजाख वालेकुल पसंद नाही और जैसा मजाख चाहे करो।"

"मज़ाक नहीं मैं तो तुम्हारी बेहोशी के कारण इतनी परेशान हो गई थी कि....।"

"बस बस--" कासिम हाथ उठा कर बोला "मैं अगर मर भी जाऊं तो किसी को परेशानी नहीं हो सकती बस अब जियादा बेकूफ बनाने की कोशिश मत करो।"

"तुम सचमुच बदनसीब हो,मेरी मुहब्बत पर तुम्हें यकीन नहीं है।"

"महुबत साली पेट नहीं भरती--"कासिम चीन चिना कर बोला।

'साली क्या ?"

“होगा कुश -ठेंगे से--”

“अपनी भाषा के शब्द कम प्रयोग किया करो मेरी समझ में नहीं आते।”

“मैं भूखा मर जाउंगा तुम ठेंगा समझती रहना।”

“ठेंगा क्या ?”

कासिम ने अंगूठा दिखा दिया और वह आश्चर्य से पलकें झपकाने लगी।

इतने में एक जीप आ पहुँची, जिसे कोई स्थानीय आदमी ड्राइव कर रहा था। जीप खाड़ी कर के वह नीचे उतरा। कुंजी निलनी को थमाई और पैदल वापस जाने लगा।

“तुम्हें ड्राइविंग तो आती ही होगी--” निलनी ने कहा और आगे बढ़ कर जीप की अगली सीटों पर नजर डालती हुई बोली”खुश हो जाओ -दोनों लंच बक्स मौजूद है।”

“हां हां मं ड्राइव कर सकता हूं --” कासिम खुश हो कर उठाता हुआ बोला।

थोड़ी देर बाद वह निलनी के बताये हुए ऊँचे नीचे मार्गों पर जीप लिये जा रहा था।

आधे घंटे बाद वह एक बिलकुल सुनसान स्थान पर पहुंचे—कासिम ने उसके आदेश पर गाड़ी रोकी और लंच बक्स की ओर हाथ बढाया ही था कि उसके कण के निकट एक जाना पहचाना अट्टहास गूंज कर रह गया। कासिम के पैरों टेल जमीन नहीं थी ! इसलिये कैप्टन हमीद की शक्ल देख कर जीप हवा में तैरती हुई महसूस होने लगी।

******

part10

रीगम बाला - 10

2.1k 5k

(10)

कासिम कभी आश्चर्य से हमीद को देखता था और कभी बौखला कर निलनी की ओर देखने लगता था। अचानक हमीद झुक कर उसके कान में धीरे से बोला।

'मेरे साथ इससे भ ज्यादा पासिं लड़की है...तुम बिलकुल परवाह न करो। हम दोनों बहुत भूखे हैं, कुछ खाने को हो तो दो।"

"कहाँ है लड़की?" कासिम ने पूछा।

"उधर गुफा में --" हमीद बाईं ओर हाथ उठा कर बोला।

"देखे बिना यखीन नाही कर सकता समझे !"

"ठहरो ...मैं उसे यहीं लाता हूं।"

"जाओ ...ज़रूर ...लाओ।"

हमीद गुफा की ओर लपका

ज़

"यह कौन था ..क्या कह रहा था ?" निलनी ने पूछा।

"भूखा था ..खाना मांग रहा था।"

"फिर तुमने क्या कहा ?"

"अपनी उसको लेने गया है।"

"उसको से क्या मतलब ?"

"तुम से किया मतलब ?" कासिम झल्ला गया।

“तुम से किया मतलब ?” कासिम झल्ला गया।

“मैं निलनी हूं।”“वह भी होगी कोई ..मैं नाम नाही जानता।”

“ओहो ...तो उसके साथ कोई औरत है।””पता नाही किया ही ...देखे बिना यखीन नाही कर सकता!”

“क्या तुम दोनों एक दुसरे को जानते हो?”

“यह मेरी बदनसीबी है --” कासिम ने झल्ला कर कहा।

“तुम इतने बोर क्यों हो रहे हो ?”

“उन दोनों के लिये खाना कहाँ से लाऊंगा।”

“इतनी बातें न करो ..मैं अपना लंच बक्स उन्हें दे दूँगी।”

कासिम ठंडी सांस ले कर अपनी भाषा में बडबडाया।

“यह तो होना ही था...तुम उस साले के लिये पागल हो जाओगी, हमीद .पमिड .तमिद साला।”

“क्या बडबडा रहे हो ?”

“अपनी ऐसी की तैसी।”

“अंग्रेजी में कहो।”

इस पर कासिम ने झल्ला कर उर्दू ही में अंग्रेजी को एक गन्दी सी गारनी दे डाली।

“पता नहीं तुम क्या कह रहे हो ?”

कासिम कुछ नहीं बोला। ऊपर ही देखने लगा जिधर हमीद गया था।

थोड़ी ही देर बाद हमीद एक लड़की के साथ आता हुआ दिखाई दिया।

“ओहो ...कितनी सुंदर कडकी है .” निलनी ने कहा।

“हां ..है तो --” कासिम ने भर्राई हुई आवाज में कहा।

“मैं ज़रूर इनकी सहायता करूंगी।”

“नाही तुम कुश मत करना सब कुश मुझे करने देना, वह तुम्हारी आवाज भी न सुने तो अच्छा है।”

“तुम कहना क्या चाहते हो ?”

“अगर तुम्हारी आवाज उस लड़की की आवाज़ से जियादा सुरीली हुई तो मैं किया करूँगा !”

“पता नहीं क्या बक रहे हो –अच्छा अब चुप हो जाओ, वह निकट आ गये हैं।”

हमीद जीप की निकट पहुंच कर रुक गया और अपनी साथ वाली लड़की की ओर संकेत कर के कासिम से बोला।

“यह रीमा है।”

“बड़ी खख ..खुशी हुई --” कासिम बोला।

रीमा सर झुकाये खदी थी और निलनी उसे आश्चर्य से देखती रही फिर उसने कासिम से पूछा।

:क्या इसके साथ किसी प्रकार का बुरा व्यवहार किया गया है?”

“मैं क्या जणू ?” कासिम ने कहा।

“जी नहीं –इसकी शक्ल ही ऐसी है --” हमीद ने कहा।

इस पर रीमा ने किसी से नजरें नहीं मिलाएँ –निलनी ने एक लंच बक्स उठा कर हमीद की ओर बाधा दिया।

“बहुत बहुत शुक्रिया ऐ नेक दिल !”

“बस बस जियादा बातें नाही बनाओ” कासिम बिच ही में बोल पड़ा “जाकर जहर मार करो।”

हमीद जीप की पिछली सिट की ओर बाधा ही था कि कासिम ने ललकारा।

“नाही नाही ..खबर्दार, बस दूर दूर की साहब सलामत रखना चाहता हूं।”

हमीद रुक कर रीमा की ओर मुडा और मुस्कुरा कर बोला।

“रीमा स्वीट यह मेरा वही प्यारा दोस्त है जिसके बारें में मैंने तुमसे कहा था।”

“अच्छा --” रीमा ने अब सर उठा कर कासिम की ओर देखा जिसका चेहरा भावनाओं के संघर्ष के कारण बहुत अधिक परिहास जनक हो गया था। वह मुस्कुरा उठी।

“आओ ..पिछली सीट पर आ जाओ” हमीद ने रीमा का हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचा।

कसिम चौकड़ी भूल चुका था। रीमा की मुस्कराहट ही ऐसी थी। वह कुछ नहीं बोला और रीमा को लिये हुए पिछली सीट पर बैठ गया।

“क्या तुम लोगों की गाड़ी खराब हो गई है ?” निलनी ने उसने पूछा।

“पिछली रात कोई हमारे घोड़े चुरा ले गया।” हमीद ने उत्तर दिया।

“घोड़ों पर किया करने आये थे ?” कासिम ने क्रोध भरे स्वर में पूछा।

“हम बौध्ध यादगारें तलाश कर रहे है। मेरी साथी बौध्ध मत पर अथार्टी है।”

“ओहो।” निलनी ने दिलचस्पी प्रकट की और चंचल नजरों से रीमा को देखती रही।

हमीद ने लंच बक्स खोला और रीमा को भी खाने का संकेत करते हुये एक सैंडविच उठा लिया। उधर कासिम उर्दू में बडबडा रहा था।

“साले भूतों की तरह चिपट गये है - लानत है ऐसी जिन्दगी पर....कहां चला जाऊं - कहां मर जाऊं।”

“लड़की ज़ोरदार है प्यारे।” हमीद ने भी उर्दू ही मैं कहा।

“ख़बरदार !” कासिम गुर्रा कर पलटा। “एक लफ्ज भी जबान से नाही निकले....ज़ोरदार भी है तो तेरे बाप का किया ?”

“तुम्हें किस बात पर क्रोध आ गया।” निलनी ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा “मेरा विचार है कि अब तुम भी लंच बक्स खोल लो !”

“इस आदमी से बच कर रहना।” कासिम ने उसकी ओर झुक कर धीरे से कहा “बहुत खतरनाक... बहुत ही कमीना।”

“होगा मुझे क्या।” निलनी ने कहा।

"अबे क्यों शामत आई है।" हमीद ने उर्दू में कहा।

"अबे तबे से बात मत करना - समझे!"

"क्या उर्दू समझती है?"

"समझती होती तो मैं तुम्हारा गया न घूंट डालता।"

"चपाती बेगम।"

"नाहीं चलेगी बेटा - मैं उसे सब कुश बता चुका हूँ - समझे!"

"ख़ुद ही क्यों बता दिया - कुछ मेरे लिये भी छोड़ा होता।"

"कर्नल साहब से मेरी मुलाखात हो चुकी है। मैं जानता था कि कहीं न कहीं तूमसे भी ज़रूर मुलाखात होगी, बस इसीलिये बता दिया...देखना है तुम्हारी कासे चलती है।"

"वह कहाँ है?" हमीद ने पूछा।

"होंगे कहीं - किया मैं किसी के बाप का नौकर हूँ कि हर बात बताता फिरूं।"

अचानक निलनी बोल पड़ी।

"जब तुम दोनों अंग्रेजी में बात कर सकते हो तो फिर किसी दुसरे को उलझन में डालने से क्या लाभ!"

"कोई खास बात नहीं - बस रस्मी बातें थी।" हमीद ने कहा।

"मगर कासिम साहब तो गुस्से में मालूम होते है।"

"इस नस्ल का वैसे भी गुर्राता रहता है।"

"अबे ए - देखो, जबान संभल के....तुम होगे सेल कुत्ते - गुर्राने वाले...।" कासिम दहाड़ा।

"तो फिर मैं सब कुछ इसे बता दूँ?" हमीद ने कहा।

"ज़रूर बताओ।"

लेकिन हमीद पेट भरने में लगा रहा और रीमा तो इस प्रकार मौन थी जैसे यह आवाजें उसके लिये कोई अर्थ न रखती हो। चेहरे पर कुछ विचित्र से भाव अंकित थे।

लंच बक्स खाली हो चुका था। हमीद ने उसे उठा कर बाहर फेंक दिया, फिर कासिम से पूछा।

"कुछ काफ़ी वाफी भी है?"

"किया तुम मेरे मेहमान हो....जहन्नुम जाओ मेरी तरफ़ से - काफ़ी पीयेंगे साले....जान जला है।"

फिर हमीद ने यही सवाल निलनी से किया और वह हंस पड़ी। कुछ देर तक हँसते रहने के बाद बोली।

"मेरे दोस्त को खाने के अतिरिक्त और किसी बात की परवाह नहीं होती। पीने को कुछ मिले या न मिले।"

"प्राचीन यादगारों में से है।" हमीद ने कहा।

"तुम ख़ुद हो पाराचिन साले फटीचर।" कासिम दहाड़ा।

"फटीचर क्या?" निलनी ने पूछा।

"मैं फटीचर की अंग्रेजी नहीं जानता।" कासिम ने कहा और हमीद हँस पड़ा। निलनी भी हँस रही थी।

"मैं इनसे कहती हूँ कि....।" निलनी ने हँसीपर अधिकार प्राप्त करते हुये हमीद से कहा "इनके मुख से वह शब्द निकले ही क्यों....जिनकी अंग्रेजी यह नहीं जानते!"

"हज्जाम है....।" हमीद बोला।

"हज्जाम क्या?" निलनी ने पूछा।

और प्रथम इसके कि हमीद कुछ कहता...कासिम गाड़ी से नीचे उतर कर उसे भी खींच कर नीचे उतारने के लिये झपटा।

रीमा चौंक कर उसे घूरने लगी...और फिर जैसे ही दोनों की नजरें मिली...कासिम के बढ़े हुये हाथ रुक गये।

"तुम कैसे आदमी हो।" रीमा भर्राई हुई आवाज में बोली "दुखियों से हम दर्दी प्रकट करने के बजाय लड़ने मरने पर तैयार हो।"

"यह...यह...भी तो..." कासिम हकला कर रह गया।

"तुम्हें चाहिये कि हम लोगों को शहर तक पहुँचा दो। हमेशा एहसानमन्द रहेंगे।" रीमा ने कहा।

"आप मम...मेरी बात भी तो सुनिये।" कासिम खिसियाने भाव में बोला "यह पुराने दोस्तों में है - कभी कभी दोनों में जंग भी हो जाती है।"

"लेकिन इस समय तो हम हमदर्दी ही चाहते है।" रीमा ने कहा।

"जी हाँ जी हाँ।" कासिम बौखला कर बोला और अपनी जगह जा बैठा।

"अगर हम जल्द ही शहर न पहुंचे तो मेरी हालत खराब भी हो सकती है। सीने में दर्द हो रहा है।" रीमा ने निलनी से कहा।

"तुम चिंता न करो....हम आज की तफरीह कल पर उठा रखेंगे।" निलनी ने कहा, फिर कासिम की ओर मुड़ कर उससे वापसी के लिये कहा।

"अल्लाह मियाँ की मर्ज़ी....।" कासिम ने उर्दू में ठंडी सांस ली और इन्जिन स्टार्ट कर दिया। जीप आगे बढ़ी। हमीद बिलकुल मौन हो गया था।

"लेकिन हमारे पास तो कुछ भी नहीं है।" रीमा ने हमीद के कान में धीरे से कहा "हम जायेंगे कहाँ?"

"देखा जायेगा।" हमीद बोला।

"मुझे उलझन हो रही है। इतनी बेबसी से कभी पाला नहीं पड़ा था।" रीमा बोली।

"बेबसी का नाम न लो मेरे सामने।" हमीद ने पाइप में तमाखू भरते हुये कहा "इस शब्द से मुझे घृणा है।"

अचानक कासिम ने एक गन्दी सी गाली के साथ ब्रेक लगाये। जीप रुक गई! हमीद ने चौंक कर देखा।

एक आदमी जीप के सामने दोनों हाथ उठाये खड़ा था।

"कैप्टन हमीद प्लीज़।" उस आदमी ने ऊँची आवाज में कहा।

"क्या बात है.....तुम कौन हो?" हमीद जीप से उतर कर उसकी और बढ़ता हुआ बोला।

“मेरे साथ आइये...आपके लिये एक संदेश है।” उस आदमी ने कहा और मुड़ गया। हमीद उसके पीछे था।

फिर कासिम ने दोनों को एक चट्टान के पीछे गयाब होते देखा।

“इस लोगों से इसीलिये मुझे उलझन होती है।” उनसे निलनी से कहा।

“किन लोगों से ?” निलनी ने पूछा।

“यही साले.....सरकारी जासूस है....क़दम क़दम पर चार सौ बीस, पता नहीं साला यह काउन उल्लू का पठ्ठा था।”

“उल्लू का पठ्ठा क्या ?”

कासिम दोनों हाथों से सर पीट कर बोला।

“कितनी बार कहूं कि मैं उल्लू का पठ्ठा की अंग्रेजी नाहीं जानता।”

“तो मत बोला करो।” निलनी कह कर हँस पड़ी।

“मुझे डर लग रहा है।” रीमा ने कम्पित आवाज में कहा और निलनी चौंक कर उसकी ओर देखने लगी ! कासिम ने भी मुड़ कर उसकी ओर देखा ! उसके चेहरे पर कुछ ऐसी बेबसी नजर आई कि कासिम ख़ुद भी परेशान हो गया, फिर उसने तसल्ली देने के लिये कहने लगा।

“तूम फिकर नाहीं करो....यह आदमी कर्नल विनोद का आसिस्टेंट है। मार पीट में किसी से पीछे नाहीं रहेगा...मैं जानता हूँ।”

“कर्नल विनोद कौन है ?” निलनी ने धीरे से पूछा।

“बहुत खतरनाक आदमी है - हजरों का अकेला मुकाबिला कर सकता हाई - मुझ जैसे देवकी की भी कलाई इस तरह मोड़ सकता है जैसे बच्चे की।”

“मैंने तो आज तक कोई ऐसा आदमी नहीं देखा। बस कहानियों में ऐसे पात्रों के बारें में पढ़ती रही हूँ। मुझे तो यकीन नहीं हो रहा है।”

“तो किया मैं तुम से झूठ बोल रहा हूँ....यखीन करो - दुनिया के बहुत बड़े मुजरिम उसके नाम से कांपते है।”

"हमीद कहाँ रह गया....इतनी देर क्यों हुई, मैं भी जा रही हूँ।" रीमा व्याकुलता के साथ बोली।

"आ जायेगा...आ जायेगा - वह तुम्हें छोड़ कर कहीं नाही जा सकता...उसका बाप कहे तब भी।" कासिम उसे तसल्ली देने लगा।

"और अगर तुम्हारा बाप कहे कि मुझे छोड़ दो तो ?" निलनी ने मुस्कुरा कर कहा।

"कह कर तो देखे ! मैं किसी कुयें में छलाँग लगा दूँगा।"

"तब तो मैं अकेली रह जाऊँगी।"

"हाँ - यह तो है।" कासिम चिंता भरे स्वर में बोला "अच्छा तो फिर तुम्हारे साथ कहीं ग़ायब हो जाऊँगा।"

"आखिर तुम अपने बाप से इतना डरते क्यों हो ?"

"इसलिये कि उसे अंग्रेजी नहीं आती। जो कुश कहना होता है उर्दू में कहता है - और उर्दू की कुश गालियाँ....अरे बाप रे.....अगर पत्थर पर भी रख दी जायें तो वह टुकड़े टुकड़े हो जाये।"

part11

रीगम बाला - 11

2.1k 6.3k 1

(11)

"तुम्हें गालियाँ देता है ?"

"हाँ...उर्दू में।"

"मुझे भी सिखा दो उर्दू की गालियाँ।"

"अरे जियाओ....ही ही ही।" तुम से तो बनेगी भी नाहीं।"

"बताओ भी तो !"

"नाहीं - मुझे शरम लगती है।"

"तब तो सिखानी ही पड़ेगी नहीं दोस्ती ख़त्म।"

"अरे नाहीं नाहीं.....अच्छा।" एक हलकी सी गाली बताता हूँ - पता नाही कि कह भी सकोगी....सुनो, हराम जादा।"

"हराम जादा.....हराम जादा.....हराम जादा।" वह रटती रही और कासिम ही ही ही करता रहा।

"अब यह बताओ कि यह गाली किस वक्त दी जाती है ?" निलनी ने पूछा।

"जब भी.....जिस तरह चाहो - कोई पाबन्दी नाहीं है।"

"कासिम हराम जादा।" निलनी कह बैठी।

"देखो देखो - यह ठीक नाहीं है - वाह वाह....मुझे ही कह दिया।" कासिम बोला।

"यह गाली कहने और सुनने दोनों में मुझे अच्छी लगी है - इसलिये मैं प्यार से तुम्हें हराम जादा कहा करूंगी।"

"अच्छा अच्छा....कह लेना - मगर अकेले में।"

“वह उर्दू नहीं समझती प्यारे हराम जादा।”

“ही ही ही ही.....नाहीं - देखो यह नाहीं।”

“तो फिर हराम जादा का मतलब बताओ ?”

“मुझे हराम जादा की अंग्रेजी नाही मालुम।” कासिम भन्ना कर बोला।”

“अच्छा हराम जादा।”

“देखो....हमीद के सामने मुझे हराम जादा ना कहना ! अकेले में कोई हरज नाही।”

“मगर तुम ने तो कहा था कि यह हलकी सी गाली है।”

“इससे किया होता है - तुम तो बहुत परेशान करती हो।” कासिम ने नखरे के साथ लचक कर कहने की कोशिश की, मगर तत्काल ही उसे संभल जाना पड़ा, क्योंकि हमीद चट्टान की ओर से बाहर निकला था और सीधा जीप ही की ओर आ रहा था। अकेला था।

जब पिछली सीट पर बैठ गया तो निलनी ने कासिम के कंधे पर हाथ मार कर कहा।

“अच्छा....अब चलो हराम जादा!”

“क्या मतलब - अबे यह मैं क्या सुन रहा हूँ।” हमीद ने पीछे से कासिम की पीठ पर हाथ मार कर कहा ! कासिम ढिटाई से हँसकर बोला।

“मुझ से महुबत करती है ..सब चलता है।”

“तो तुम मुहब्बत में हराम जादा हो क्यूं ?”

“कुत्ते का पिल्ला भी हूं -तुम से मतलब--” कासिम झल्ला कर बोला।

“उस बाप को तो तुम छोड़ चुके हो अब मुझ से मतलब न होगा तो फिर !”

“बस अब बकवास बंद कर दीजिए वर्ना, मैं तो इन खातून की वजह से चुप हूं वर्ना कभी का आपको धक्का दे चुका होता” कासिम बोला।

“अच्छा अच्छा ...बड़े भाई --” हमीद जल्दी से बोल उठा “मैं आप की बहुत इज्ज़त करता हूं। अब जल्दी से हमें शहर पहुंचा दीजिए।”

“तो किया शहर चलें ?” कासिम ने निलनी से पूछा।

“हां तफरीह कल करेंगे ! आज यही जरुरी है।”

“जैसी तुम्हारी मर्जी” कासिम ने बड़े प्यार से कहा।

फिर जीप ने ऊँचे नीचे मार्गों पर हिचकोले खाना आरंभ किया, हमीद बिलकुल मौन हो गया था और रीमा उसके कंधे पर सर रखे शुन्य में घुर रही थी।

बड़ी उबड़ खाबड़ चट्टानें थीं मगर विनोद किसी अभ्यस्त पहाड़ी के समान तेजी से चला जा रहा था। उसके पीछे विमल था। वह बार बार रुकता और फिर गिरता पड़ता चलने लगता था !

एक जगह विनोद रुक कर उसकी प्रतीक्षा करने लगा! इस समय वह मेक अप में थाऔर विमल के लिये एक अपरिचित। अपने ठिकाने से रवाना होने से पहले उसने विमल से कहा था कि वह उसके एक खास आदमी के साथ वीरान किले तक जाए और फिर थोड़ी देर बाद ख़ुद ही उस खास आदमी के रूप में उसके साथ हो लिया था! विमल उसके निकट पहुंच कर हांफता हुआ बोला।

“भाई! मैं तुम्हारे समान पैदल चलने का आदी नहीं हूं और फिर वह भी पहाड़ी रास्तों पर -जरा धीरे धीरे चलो!”

“क्या तुम थक गये हो ?” विनोद ने कोमल स्वर में पूछा।“हां दिल चाहता है की कुछ देर बैठ कर दम ले लूं!”

"तो फिर बैठ जाओ -वास्तव में चीफ यह चाहता है कि एक बार तुम्हारे साथ भी कोई वीरान किले तक जाये! क्यों चाहता है, यह मैं नहीं जानता ! चलो बैठ जाओ।"

दोनों बैठ गये! कुछ देर बाद विमल ने पूछा।

"क्या तुम चीफ को पसंद करते हो ?"

"नौकरी ठहरी .पसंद या ना पसंद का क्या सवाल !"

"तुम ने कभी उससे घृणा नहीं महसूस की ?" विमल ने पूछा।

"घृणा?" विनोद ने कहा "जब कभी वह कारण बताए बिना कोई अनोखी आज्ञा देता है तो ज़रूर नफ़रत होती है।"

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"दारा खां ---" विनोद ने कहा।

"तुम बहुत अच्छे मालूम होते हो दारा खां-"

"पता नहीं --"

"क्या तुम कभी चीफ को धोखा दे सकते हो ?"

"क्या है तुम्हारे दिल में --" विनोद रिवाल्वर की मुठ पर हाथ रख कर गुर्राया "क्या उसने इसीलिये तुम्हें मेरे साथ भेजा है कि तुम मेरे दिल का भेद लो।"

"नहीं दारा खां --" विमल ने कहा, "ऐसी कोई बात नहीं वास्तव में उससे मुझे बड़ी नफ़रत है ।"

"तुम्हारा अपना मामिला है नफ़रत करो या मुहब्बत मुझसे क्या मतलब ।"

"मुझे एक हमदर्द चाहिये खान" विमल ने दर्दनाक स्वर में कहा "यहाँ सब मेरे शत्रु हैं यहाँ तक कि चीफ भी इतनी नफ़रत करता है कि किसी भी समय गोली मार सकता है"

"क्यों ?"

"मैं नहीं जानता लेकिन नहीं, मैं अच्छी तरह जानता हूं वह मेरी प्रेमिका का दुश्मन है हाय वह प्यारा चेहरा -उसकी याद अर्थी तक मेरे साथ जायेगी -धुँआ सुगन्धित धुँआ और वह प्यारा चेहरा।"

विमल मौन हो गया। आंखें खुली हुई थीं, मगर जगता हुआ, नहीं मालूम हो रहा था। कुछ देर बाद वह भर्राई हुई आवाज़ में कहने लगा।

"मैं देख रहा हूं कि मेरा चीफ घात लगाये बैठा है। उसके हाथ में तेज़ाब की बोतल है, वह सुंदर चेहरे को बिगाड़ देना चाहता है -हे भगवान,नहीं,नहीं मैं ऐसा नहीं होने दूंगा" बात समाप्त करते ही वह इस प्रकार उठ आकर झपटा जैसे किसी पर आक्रमण करना चाहता हो -मगर एक पत्थर से टकरा कर रह गया।

विनोद मौन बैठे उसे देखता रहा था।

विमल उसकी ओर मुडा। उसके चेहरे पर लज्जा के लक्षण थे। ऐसा लग रहा था जैसे अभी अभी जगा हो।

"चोट तो नहीं आई ?" विनोद ने अपने स्थान से उठते हुये कोमल स्वर में पूछा।

"नहीं कभी कभी यह घृणा इतना उग्र रूप धारण कर लेती है कि मैं सपना देखने लगता हूं - मैं उस सुंदर चेहरे को तलाश करना चाहता हूं मगर वह हंस कर टाल देता देता है, आज भी देख लो।ख़ुद साथ नहीं आया तुम्हें भेज दिया मगर मैं नहीं जानता।जब वह साथ होगा तभी जाऊँगा क्या विचार है तुम्हारा ?"

विनोद कुछ नहीं बोला। चुप चाप उसकी आंखों में देखता रहा।

"क्या तुम इतनी दया करोगे मुझ पर ?" विमल ने पूछा।

"क्या, कुछ कहो भी तो ?" विनोद ने पूछा।

'यहीं से वापस चलो और कर्नल से कह दो कि हम वीरान किले तक हो आये।"

"अच्छी बात है मैं तुम्हाऋ यह इच्छा पूरी करूँगा" विनोद ने कहा।

हमीद रीमा के साथ उसी होटल में ठहरा था जिसमे सुमन नागर कर औए कासिम ठहरे हुए थे। इस समय रीमा अग्नि कुंद के पास बैठी थी और चिंता भरी नज़रों से दहकते हुए कोयलों को घूरे जा रही थी। हमीद ड्रेसिंग टेबिल के सामने खडा अपने बाल ठीक कर रहा था।

अचानक रीमा उठ खाड़ी हुई और हमीद के निकट पहुंच कर बोली।

“तुम मुझे बताते क्यों नहीं कि वह आदमी कौन था जो तुम्हें चट्टान की ओर में ले गया था ?”

मेरे चीफ का एक आदमी था” हमीद ने कहा।

“तुम्हारे चीफ का आदमी?” रीमा ने चकित हो कर पूछा।

“हां तुम्हें संदेह क्यों हो रहा है --व हमीद ने कहा “अगर वह मेरे चीफ का आदमी न होता ओ इस समय हम इस होटल में ठहरने के बजाय

रीगम बाला की सड़कों पर भीख मांगते होते।”

“मुझे आश्चर्य है --”

“किस बात पर ?”

“अगर तुम्हारा चीफ इसी प्रकार तुम्हारी निगरानी कर रहा है तो फिर”

“हां हां -रुक क्यों गईं कहो क्या कहना चाहती हो ?”

“कुछ नहीं मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या कहना छः रही हूं—मष्तिस्क पर जोर देती हूं तो सर चकराने लगता है।”

“और मेरी अक्ल घास चरने गई है.”

“आखिर तुम इतने क्रोधी क्यों हो गये हो --” वह रोहांसी हो कर बोली।

“बस क्या बताऊँ उन शैतानों ने तुम्हें मेरे लिये एक मुसीबत बना कर रख दिया है -बिलकुल बीबियों के से भाव में बातें करने लगी हो।”

“क्या मतलब –उन अहैतानों की बात कर रहे हो ?”

“तुम्हारे साथियों की ।उन्हों ने तुम्हें ट्रान्स में ला कर तुम्हारा व्यक्तित्व ही बदल दिया है अब मैं तुम्हें शहद लगा कर चाटू या रद्दी की टोकरी में फेंक दूं।”

‘बेवकुफो की सी बातें न करो” वह रो पड़ी और हमीद उसे रोता छोड़ कर वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

रात के आठ बज रहे थे। डाइनिंग हाल में अधिक भीड़ नहीं थी। कासिम एक मेज पर अकेला था, हमीद को देखते ही उसने बुरा सा मुंह बनाया मगर कुछ बोला नहीं। हमीद ने भी कुछ नहीं कहा।चुप चाप कुर्सी खींच कर उसके सामने बैठ गया।

“जी ---फरमाइए ?” कासिम ने जहरीले स्वर में कहा।

“वह कहाँ गई?” हमीद ने मुस्कुरा कर पूछा।

“आप से मतलब ?”

“बड़े प्यारे लहेजे में हराम जादा कहती है”

“जी फिर आप भी सिखा दीजिए अपनी कट्टा को।”

“वह तो मेरी उस्तानी है --।”

“उस्तानी नहीं बताशा है”

“क्या तुमने पी रखी है ?”

“बोर मत करो बस यहाँ से चले जाओ” कासिम हाथ उठा कर बोला।

‘सुनने में आया है कि तुमने किसी मरीज़ औरत की नौकरी कर रखी ही ?”

“मैंने सब कुश कर रखी है ..आप से मतलब ?”

“अबे होश में है या नहीं ?”

“देखो देखो जबान संभाल के हां नाहीं तो।”

“आखिर किस बात का घमंड हो गया है तुम्हें ..पल भर में मुंह काला हो जायेगा तुम्हारा चट्टानों से फिर टकराते फिरोगे ..लम ढग कहीं के .तुम्हें इसकी भी फिक्र नहीं है कि तुम ख़ुद ही सब कुछ उसे बता चुके हो।”

कासिम ठुक निगल कर रह गया। धीरे धीरे बेबसी के लक्षण उसके चेहरे पर उभरते आ रहे थे।

इतने में रीमा दिखाई दी ..वह तीर के समान उनकी मेज पर आई।

“क्या है ?” हमीद ने झल्ला कर पूछा।

“मुझे अकेले में उलझन होती है ..” रीमा ने कहा।

“होनी ही चाहिये ..” कासिम बोल पड़ा।

हमीद मौन रहा ..न केवल मौन रहा, बल्कि दूसरी ओर मुंह फेर कर बैठ गया। अचानक कासिम को शरारत सूझी और उसने रीमा से कहा।

“बहुत बुरे आदमी को चाहने लगी हो तुम...”

हमीद के अधरों पर मंद सी मुस्कान नजर आई। उधर रीमा चकित द्रष्टि से कासिम को घूरने लगी।

“मैं गलत नाही कह रहा हूं ..दर्जनों औरतें इसके पीछे बर्बाद हो गई है .अच्छा आदमी नाही है”

“शट अप --” रीमा इतनी कोर से चीखी कि पूरा हाल गूंज उठा। लोग चोंक कर उनकी ओर देखने लगे।

कासिम के मुंह पर हवाइयां उड़ाने लगीं और उसने बौखला कर हमीद की ओर देखा। हमीद बायीं आंख दबा कर मुस्कुराया और रीमा का कंधा थापक कर बोला।

“चलो चलो इतना गुस्सा अच्छा नहीं यह बिलकुल बेवकूफ आदमी है, मेरा मेरा दोस्त भी है माफ़ कर दो।”

“इसे तुम दोस्त कहते हो जो तुम्हें बुरा कह रहा था..” रीमा बोली।

“इसको तो इसकी गर्ल फ्रेंड भी हराम जादा कह रही थी ...” हमीद बोला।

“हराम जादा क्या ?” रीमा ने पूछा।

“इसके सामने नहीं बताऊंगा --”

“बता कर देखो ..तोड़ मरोड़ कर रख दूंगा....”

“अब यह क्या कह रहा है?” रीमा ने हमीद से पूछा।

“अरे ख़त्म करो ..आओ चलें ..”

“ख़त्म करो ..आओ टलें..” कासिम मुंह चिडा कर बोला साले मेरी वाली होती तो पता चलता। खैर देखा जायेगा।”

“यह कुछ कह रहा है और इसका लहजा भी अच्छा नहीं है ...” रीमा ने हमीद से कहा और फिर कासिम को घूरने लगी।

कासिम बुरी प्रकार गड़बड़ा गया और फिर बौखला कर उठ गया अब्वः रहाइशी कमरों की ओर जा रहा था।

हमीद रीमा को अपने कमरे की ओर लाया और धीरे से बोला।

“मेरा ख़याल है कि कर्नल उससे मिल चुके हैं मैं उससे बातें करना चाहता हूं।”

“मुझे अपने और तुम्हारे अतिरिक्त अब किसी वस्तु से दिल चस्पी नहीं रही।” वह बुरा सा मुँह बना कर बोली।

रीगम बाला - 12

(1) 1.8k 4.7k

(12)

हमीद कुछ कहने ही जा रहा था वह फिर बोल पड़ी।

"तुम्हारे पास तो कुछ भी नहीं.....फिर तुम इस होटल के खर्च कैसे पूरा करोगे ?"

"मेरा चीफ मुझसे इतना बेखबर तो नहीं....।" हमीद मुस्कुरा पड़ा।

"क्या तुम ख़ुद चीफ से मिले थे ?"

"नहीं...!"

"क्या तुम उन तमाम लोगों को पहचानते हो जो उसके लिये काम कर रहे है !"

"नहीं...।"

"तब फिर तुम धोखा भी खां सकते हो।"

"वह किस प्रकार !" हमीद ने चौंक कर पूछा।

"क्या वह आदमी तुम्हारा जाना पहचाना था जो तुम्हें चट्टान की ओट में ले गया था !"

"नहीं।"

"फिर तुमने उस पर विश्वास कैसे कर लिया !"

"एक दुसरे को पहचानने के लिये हमारे पास कुछ निशानियाँ है।"

"दूसरे भी उन निशानियों से परिचित हो सकते है - क्या तुम्हें जीरो लेंड की निशानियों का पता नहीं है !"

"जानता हूँ।"

"तो क्या यह नहीं हो सकता कि मेरे साथियों ने उन्हीं तुम्हारी निशानियों की आड़ मे ही कोई नया जाल बिछाया हो !"

"जहन्नुम में जाये ।" हमीद झल्ला कर बोला "मैं अपने दिमाग को उलझाना नहीं चाहता और तुम भू ऐसा हु करो....वर्ना ।"

"वर्ना क्या होगा ?"

"कुछ भी नहीं ।" हमीद न जाने क्यों ढीला पड़ गया ।

"नहीं....धमकी दो कि मुझे छोड़कर चले जाओगे ।" रीमा ने कहा "मगर कान खोल कर सुन लो...अगर तुमने ऐसा किया तो मैं आत्म हत्या के लूंगी...मगर ढके छिपे नहीं....किसी उच्च अधिकारी को एक पत्र लिख जाऊँगी - अपनी मौत का जिम्मेदार तुम्हें ठहरा उंगी.....समझे !"

हमीद दोनों हाथों से सर थाम कर बैठ गया । वह शत प्रतिशत गंभीर लग रही थी । ऐसी विपत्ति से तो आज तक पाला नहीं पड़ा था - फिर वह उठता हुआ बोला ।

"मैं समझ गया कि तुम क्या कहना चाहती हो ?"

"क्या समझे ?"

"यही कि जिन लोगों ने तुम्हें हिप्नोटाइज किया था वह मेरे चीफ के आदमी नहीं थे, बल्कि तुम्हारी ही संस्था से संबंध रखते थे ।"

"हाँ....मैं यही कहना चाहती थी ।" रीमा ने कहा "मुझे तो होश ही नहीं था । तुम्हारे बयान से अंदाजा होता है कि उन्होंने तुम्हें यह विश्वास दिलाने की कोशिश की होगी कि वह तुम्हारे चीफ के आदमी है और उन्होंने मुझे ट्रान्स में लाकर मेरी सच्चाई मालूम कर ली है - कहीं मैं तुम्हें धोखा तो नहीं दे रही ।"

"हाँ - मेरा यहीं ख़याल है ।"

"मैं केवल यह चाहती हूँ कि तुम इस पर विश्वास न करो - यह विचार दिल से निकाल दो कि वह तुम्हारे चीफ के आदमी थे । जिस कुये में मैंने हेली काप्टर उतारा था.....वहाँ तक तुम्हारे चीफ का पहुँचना बिलकुल असंभव था ।"

हमीद सचमुच सोच में पड़ गया। कासिम की जीप रुकवाने वाले ने अपने आपको ब्लैक फ़ोर्स का आदमी प्रकट करके न केवल हमीद को एक बड़ी रक़म दी थी - बल्कि गुफा में होने वाली घटना का ध्येय भी बताया था। ध्येय यही था कि रीमा को हिप्नोटाइज करके उसकी असलियत मालूम की जाये - उसके इस बयान को परखा जाये कि वह संस्था से कट कर उसने आ मिली है.....कितना सच है। वह सोचता रहा, फिर बोला।

"अगर तुम कहती हो तो मान लेता हूँ....मगर इसका ध्येय उन्होंने एक बड़ी रक़म मेरे हवाले कर दी है। हम दोनों काफ़ी दिनों तक यहां लार्ड और लेडी के समान जीवन व्यतीत कर सकते है। एडल्फी यहाँ का सबसे बड़ा होटल है।"

"मैं नहीं जानती...मगर ठहरो....क्यों नहीं जानती।" वह मौन होकर कुछ सोचने लगी और हमीद ध्यानपूर्वक उसे देखने लगा। थोड़ी देर बाद बोली "अगर तुम्हारे चीफ को इस नये षड्यंत्र का पता चल जाये तो क्या होगा?"

"किस षड्यंत्र की बात कर रही हो?"

"क्या तुम ऊँघ रहे हो।" रीमा बोली "मैं यह कह रही थी कि अगर तुम्हारे चीफ को यह मालूम हो जाये कि वह लोग उसके आवरण में तुम्हारे निकट आने की कोशिश कर रहे है तो वह क्या करेगा?"

"खुदा जाने.....उसके बारे में कोई बात पूरे यकीन के साथ नहीं कही जा सकती.....हो सकता है कि उसे मेरी शादी की फ़िक्र हो जाये....या वह ख़ुद स्विटजरलैंड चला जाये।"

"गंभीरता धारण करो कैप्टन।"

"मैं गंभीर हूँ।"

"क्या वह तुम से निकट रह कर उन लोगों के इस नये षड्यंत्र को समझने की कोशिश नहीं करेगा?"

"रीमा डियर.....यकीन करो कि उसके बारे में कुछ भी यकीन के साथ नहीं कहा जा सकता, वह बहुत ही अनोखा और अजीब आदमी है, कभी कभी वह बहुत ही खास बातों को इस प्रकार उड़ा देता है जैसे नाक पर मख्खी उड़ाई जाती है और कभी कभी यह भी देखा गया है कि बहुत ही साधारण सी बात उसके लिये अत्यंत महत्वपूर्ण बन गई है।"

"कुछ भी हो...मै यह कहना चाहती हूँ कि सावधान रहो।"

"सावधान रहने का तरीका भी बता दो।"

“किसी पर विश्वास न करो ?”

“तुम पर भी नहीं ?”

“हाँ....मुझ पर भी विश्वास न करो...हो सकता है कि वह मेरी प्रवृत्ति भी बदल देने की चेष्टा करें - साइन्सी प्रगति में वह सारे संसार को पीछे छोड़ गये है ! चाँद पर जाकर कंकर पत्थर बटोर लाने से भी आगे है....उनके साधन असीमित है ।”

“कहीं इस मध्य उन्होंने तुम्हारी ब्रेन वाशिंग कर ही न डाली हो ।” हमीद उसकी आंखों में देखता हुआ मुस्कुराया ।

“अभी तक तो तुम्हारे विरुध्ध मैंने कुछ नहीं सोचा, मगर आगे के लिये सावधान रहना चाहती हूँ । तुम्हें हर प्रकार से मेरी निगरानी करनी चाहिये ! मुझे कभी अकेला न छोडो - वर्ना हो सकता है कि इस बार उनका वार खाली न जाये ।”

“अर्थात मैं चौबीस घंटे इसी प्रकार कमरें में बंद रहूँ ?”

“मैं यह तो नहीं कहती....बाहर जाओ तो मुझे भी साथ रखो ।”

“और तुम्हारी बीबियों जैसी बातें सुनता रहूँ - है ना ?”

रीमा कुछ नहीं बोली । ठीक उसी समय किसी ने दरवाज़े पर थपकी दी ।

“कौन है ?” हमीद ने ऊँची आवाज में पूछा ।

“रूम सर्विस सर ।” उत्तर मिला ।

“क्या तुमने कोई ऑर्डर दिया था ?” हमीद ने रीमा से पूछा ।

“नहीं तो ।” रीमा ने कहा ।

“मैंने भी नहीं दिता था, तो फिर ।” हमीद ने कहा और उठकर दरवाज़े के पास आया, फिर ऊँची आवाज में पूछा “क्या बात है ?”

“फोन चेक करना है सर -आपकी काल आई थी। आपरेटर कनेक्ट करने में सफल न हो सका--” उत्तर मिला हमीद ने बायें हाथ से हैंडल घुमा कर दरवाज़ा खोला। दाहिना हाथ रिवाल्वर की मुठ पर था।

इलेक्ट्रिशियन अंदर दाखिल हुआ! उसके शरीर पर होटल ही की वर्दी थी, वह सीधा फोन ही की ओर बढ़ता चला गया। उसने यह भी देखने का कष्ट नहीं उठाया कि कमरे में और कितने आदमी है।

फोन के निकट पहुंच कर उसने थैले से औज़ार निकाले और काम आरंभ कर दिया। रीमा और हमीद दोनों ही चुपचाप उसे देखे जा रहे थे और दोनों एक ही बात सोचे जा रहे थे कि ...काल किस की हो सकती है?

फोन ठीक करके मैकेनिक ने आपरेटर से बात की, फिर हमीद की ओर मुड़ कर बोला।

"ठीक हो गया सर!"

उसके जाने के बाद हमीद उठ कर फोन के निकट आया।

"ओ हो --" उसकी मुख से निकल गया।

"क्या बात है ?" रीमा उठाती हुई बोली।

लेकिन उसके निकट पहुँचने से पहले ही ब्लैक फ़ोर्स का कार्ड हमीद की जेब में पहुंच गया था। उसने रीमा की ओर मुड़ कर बोला।

"क्यों न आपरेटर से मालूम करूँ कि किस की काल थी ?"

"आवश्यक नहीं है कि .." वह कुछ कहते कहते रुक गई।

हमीद ने होटल के एक्सचेंज से संबंध स्थापित कर के रूम नंबर इक्कीस की किसी कल के बारे में पूछा।

"जी हां ! काल थी --" दूसरी ओर से उत्तर मिला।

"कोई औरत थी ?"

"जी नहीं मर्द।"

"धन्यवाद --" हमीद ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

"क्या औरतें भी तुम्हारे चीफ की पार्टी में हैं ?"

हमीद उत्तर नहीं दे पाया था कि फोन की घंटी बोल उठी।

"हेलो --" हमीद रिसीवर उठा कर बोला।

"हमीद साहब !" दूसरी ओर से किसी औरत की आवाज़ आई।

"हां अँ." हमीद बोला।

"रूम नंबर ग्यारह में आ जाइए -प्लीज़ --" आवाज आई और साथी सम्बन्ध भी कट गया।

"कौन था?" रीमा ने पूछा।

"पता नहीं" हमीद ने रिसीवर रखते हुए कहा।

"क्या कह रहा था?"

"कुछ समझ में नहीं आता।

"तुम्हारी समझ में नहीं आता तो मुझ पर और मेरी बुद्धि पर विश्वास करो।"

"अच्छी बात है -वह कोई औरत थी और उसने मुझे रूम नंबर ग्यारह में बुलाया है।"

"ओह !"

"अब अपनी बुद्धि का प्रयोग करो ..क्या करना चाहिए ?" हमीद ने पूछा।

"चलो!"

"चलो का मतलब तो यह हुआ कि तुम भी साथ चलोगी ?"

"हां, तुम मुझे अकेली नहीं छोड़ सकते--।"

हमीद पाइप में तमाखू भरने लगा। रूम नंबर ग्यारह में सुमन नागरकर ठहरी हुई थी। कासिम ने हमीद को उसके बारे में सब कुछ बता देने के बाद यह भी कहा था कि—यार ! मुझे तो एसा लगता है कि वह कर्नल साहब पर आशिक हो गई है।

"तुम क्या सोचने लगे?" रीमा ने उसे टोका।

"आंय ..कुछ नहीं ! चलो ..." हमीद ने कहा और जैसे ही दरवाजा खोला, कोई उसे धक्का देता हुआ अंदर घुस आया।

रीमा की कराट से घुटी घुटी सी चीख निकली थी और प्रथम इसके कि हमीद संभलता, आने वाले ने उन दोनों को रिवाल्वर से कवर करते हुए कहा।

"अपने हाथ ऊपर उठाओ और अबर अब किसी के मुंह से आवाज निकली तो फायर कर दूंगा।"

आने वाला कोई स्थानीय आदमी था मगर अंग्रेजी में बोल रहा था।

रीमा और हमीद ने हाथ उठा दिये। हमीद के चहरे पर झल्लाहट के लक्षण थे।

"तुम दोनों एक घंटा से पहले कमरे से बाहर नहीं निकालोगे --" आंव वाले ने कहा।

"क्या तुम अपनी इस असभ्यता का कारण बता सकोगे ?" हमीद गुर्राया।

"तुम सुमन नागरकर से नहीं मिल सकते।"

"तुम्हारा भ्रम है की तुम किसी काम से मुझे रोक दोगे।"

"अच्छा तो फिर कुछ कर के देखो - रिवाल्वर में लगा हुआ साइलेन्सर तो तुम्हें दिखाई दे रहा होगा।"

हमीद कुछ नहीं बोला ! वह अपरिचित को खूँखार नजरों से घूर रहा था। रीमा का चेहरा सफ़ेद पड़ गया था। वह कभी उस अपरिचित की ओर देखती कभी हमीद की ओर देखने लगती।

अचानक बात रूम का दरवाज़ा धीरे से खुला और एक आदमी दबे पांव बाहर निकला। अपरिचित की पीठ उसकी ओर थी रीमा कभी सामना नहीं पड़ा था, हमीद उसे देख चुका था मगर उसकी पोज़ीशन में कोई अंतर नहीं पड़ा था।

फिर बाथ रूम से बरामद होने वाले ने अपरिचित पर छलांग लगा दी। उसके हाथ से रिवाल्वर निकल कर दूर जा पड़ा। हमीद ने रिवाल्वर उठाने के लिये छलांग लगाईं.....और रिवाल्वर उठा लाया।

उधर उन दोनों में शक्ति संघर्ष आरंभ हो गया था। हमीद की समझ में नहीं आ रहा था कि अब उसे क्या करना चाहिये....प्रकट है कि बात रूम से बरामद होने वाला उसका कोई सहायक की रहा होगा और वह उस समय कमरे में दाखिल हुआ होगा जब वह रीमा के साथ डाइनिंग हाल में था।

अचानक उस बाथ रूम वाले ने अपरिचित को फर्श पर गिरा दिया और रीमा झपट कर हमीद की निकट पहुँची और धीरे से बोली।

"यह दूसरा कौन है ?"

मगर हमीद ने उसका उत्तर न देकर बाथ रूम वाले से कहा।

"इसे दबाये रखो...मैं इसके हाथ बांध दूँ।"

फिर हमीद ने रिवाल्वर मेज पर रखा और उसे बांधने के लिये अपनी टाई खोलने लगा।

फिर जो कुछ भी हुआ वह इतनी तेजी से हुआ कि हमीद को संभालने का अवसर ही न मिल सका। वह टाई खोल रहा था कि अपरिचित न जाने किस प्रकार उसके बंधन से निकल कर दरवाज़े की ओर झपटा था और फुर्ती से हैन्डिल घुमा कर दरवाज़ा खोलता हुआ बाहर निकला चला गया था फिर बात रूम वाला भी उसके पीछे बाहर निकला था - वह उसका पीछा करने गया था।

और अब हमीद तथा रीमा कमरे में खड़े एक दुसरे का मुंह देख रहे रहे।

"यह सब क्या था ?" रीमा फंसी फंसी सी आवाज में बोली।

"जहाँ तुम वहाँ मैं - भला मैं क्या बता सकता हूँ।" हमीद ने कहा।

"वह....वह....बाथ रूम में।"

part 13

रीगम बाला - 13

★★★☆☆ (2) 1.9k 5.1k

(13)

"हाँ – वह उसी समय कमरे में दाखिल हुआ होगा जब हम दोनों डाइनिंग हाल में थे।"

"एक बात समझ में नहीं आती।"

"और यहाँ तो कोई भी बात समझ में नहीं आती।" हमीद ने टालने वाले भाव में कहा।

इतने में दरवाज़ा फिर खुला और बाथ रूम वाला अंदर दाखिल हुआ।

"मुझे दुख हाई कैप्टन कि वह निकल गया – क्या आप मुझे कुछ समय दे सकते है ?" उसने कहा।

"हाँ हाँ।" हमीद उसे टटोलने वाली नजरों से देखता हुआ बोला।

"तो फिर जरा डाइनिंग हाल तक।"

हमीद ने रीमा की ओर देखा।

"क्या कह रहा है ?" रीमा ने पूछा।

"हम दोनों थोड़ी देर के लिये डाइनिंग हाल में जा रहे है।"

"यह असंभव है – तुम मुझे अकेली नहीं छोड़ सकते।" रीमा ने कहा।

"क्या यह हिंदुस्तानी समझ सकती है ?" उस आदमी ने हमीद से पूछा।

"नहीं।"

"तो फिर कहां जाने की आवश्यकता नहीं – हम यहीं बातें करेंगे।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा।"

"मैं रामगढ़ से तलब किया गया हूँ – नाम नामवर सिंह है।"

"ओह – अच्छा।"

"आप लोगों की देख भाल का काम मुझे सौंपा गया था।"

"सुमन नागरकर ने मुझे अपने कमरे में बुलाया था।" हमीद ने कहा।

"ओह – तो वह उसकी चाल थी।"

"हाँ...मगर तुम बाथ रूम में क्यों जा छिपे थे ?"

"मुझे पता था कि कोई यहाँ आकर आप लोगों को डिस्टर्ब करेगा।"

"अच्छा।" हमीद ने चुमते हुये स्वर में कहा।

"गलत न समजिये कैप्टन – उनके कई आदमी यहाँ ठहरे हुये है। मैंने उनकी बातें सुनी थी....और विश्वास कीजिये कि सुमन नागरकर की काल एक धोखा थी।"

"क्या तुम यह कहना चाहते हो कि उन्हीं लोगों ने सुमन की ओर से काल की थी ?" हमीद ने पूछा।

"जी हाँ - मैं यही कहना चाहता हूँ...." नामवर ने कहा "मेरे अतिरिक्त और किसी से भी सुमन संबंध स्थापित नहीं कर सकती - कर्नल साहब ने उसे यही आदेश दे रखा है।"

"अच्छी बात है - मैं देखता हूँ।" हमीद कहता हुआ फोन की ओर बढ़ा।

उसने फोन सुमन से कमरे से संबंध स्थापित किया। उत्तर फौरन मिला, मगर आवाज कासिम की थी। हमीद ने महसूस किया कि वह कुछ घबडाया हुआ है।

"क्या बात है कासिम...तुम कुछ परेशान मालूम होते हो...मैं हमीद हूँ।"

"ओह...हमीद भाई - वह मर गई....खुदा के लिये कुश करो।"

"कौन मर गई ?"

"सुमन नागरकर.....अभी नर्स ने मुझे बताया है।"

"क़त्ल ?"

"नाहीं - गर्दन वर्दन नाहीं कटी है...बस मर गई है।"

"तुम वहीँ ठहरो मैं आ रहा हूँ।" हमीद ने रिसीवर रख कर नामवर की ओर मुडा और कासिम से सुनी हुई बात उससे कही। नामवर का मुंह आश्चर्य से खुल गया।

सुमन की लाश बिस्तर पर पड़ी थी.....प्रकट में कोई ऐसा लक्षण नजर नहीं आया था जिसके आधार पर उसे क़त्ल समझा जा सकता। नर्स के बयान के अनुसार कुछ देर पहले उसने फोन पर किसी से बात की थी, फिर कासिम को उसे बुलाने के लिये भेजा था, क्योंकि कासिम के कमरे के फोन पर उससे संबंध स्थापित न हो सका था - और फिर जब वह कासिम को लेकर वापस आई तो सुमन मर चुकी थी।

हमीद ने कासिम के कमरे का फोन चेक किया। इक्स्चेंज से संबंध स्थापित न हो सका। लाइन सचमुच खराब थी।

नामवर उसके साथ ही था। खासा फुर्तीला और स्मार्ट आदमी था। उसने बताया कि वह रामगढ़ में ए. एस. आई. है और कर्नल विनोद को अपना गुरु मानता है। उसकी कार्य प्रणाली का अवलोकन ही उसे मार्ग दिखता है। उसने हमीद से कहा।

"कैप्टन साहब ! यह मालूम करना बहुत ही आवश्यक है कि नर्स को कासिम के पास भेजने से पहले सुमन के फोन पर किससे बात की थी।"

"मैं भी यही सोच रहा था।" हमीद ने कहा "चलो।"

दोनों होटल के इक्स्चेंज के आपरेटर से पूछ गच्छ करने गये। उसने कहा।

"रूम नंबर ग्यारह से कासिम के कमरे के आपरेटर के बारे में शिकायत की गई थी कि वहां से उत्तर नहीं मिल रहा है - इसके अतिरिक्त रूम नंबर ग्यारह से कोई काल नहीं हुई थी।"

फिर हमीद ने अपने फोन के बारे में पूछा।

"नहीं श्रीमान....आपके कमरे की लिये तो कोई काल ही नहीं हुई।" उत्तर मिला।

आपरेटर का बयान चकित कर देने वाला था। आश्चर्य इस पर था कि अगर वह काल होटल के अतिरिक्त कहीं और से आई थी तो उसका ध्येय क्या था, वह वापस लौटे।

"बड़ी विचित्र बात है।" हमीद ने नामवर से कहा "आपरेटर के बयान के अनुसार सुमन ने कासिम के लिये एक काम करनी चाही मगर उस कमरे का आपरेट्स ख़राब होने के कारण काल नहीं हो सकी थी काल न हो सकने के कारण ही सुमन ने कासिम को बुलाने के लिये नर्स को भेजा था....फिर जितनी देर में नर्स वापस आई सुमन की मौत हो चुकी थी।"

"प्रश्न यह है कि अगर आपकी काल कहीं बाहर से आयी थी, तब भी आपरेटर को मालूम होना चाहिए था। यहाँ तीन लाइने हैं और कोई भी डाईरेकट नहीं है...तीनों लाइनें इसी एक एक्सचेंज से सम्बन्ध रखती हैं --" नामवर ने कहा।

"यहाँ के बारे में बहुत कुछ जानते हो !" हमीद उसे घूरता हुआ बोला।

"आप अभ तक मेरी पोजीशन से संतुष्ट नहीं हुए --" नामवर ने अपनी कोट की भीतरी जेब से कुछ कागज़ निकालते हुए कहा "लीजिये -देखिए -यह मेरे कागजात।"

हमीद कागजों को देखता रहा, फिर बोला।

“प्रश्न तो यह है कि अगर वह सुमन को क़त्ल ही करना चाहते थे तो क़त्ल कर डालते .मुझे छेड़ने की क्या आवश्यकता थी ..चुपचाप उसे क़त्ल कर डालते। अगर मेरे लिये वह काल सुमन की नहीं थी तो फिर उन्ही लोगों में से किसी की रही होगी—फिर एक आदमी मुझे बाहर निकलने से रोकने को कोशिश करता है जरा ठहरो, क्या वह आदमी उन्हीं लोगों में से था जिनकी निगरानी तुम यहाँ करते रहे हो?”

“जी नहीं .वह मेरे लिये अपरिचित था ..उन लोगों में कभी नजर नहीं आया था जिनकी बातों से मुझे इस षडयन्त्र का पता चला थाकी आपके कमरे में कुछ होने वाला है।”

“और वह तुम्हें जुल देकर निकल गया।”

“मैं लज्जित हूं कैप्टन साहब।”

“क्या वह हवा में मिल गया होगा मिस्टर नामवर सिंह ?”

“विश्वास कीजिये -जब मैं बाहर निकला हूं तो कारीडर बिल्कुल् सुनसान पडा हुआ था ..फिर मैं दरवाजे तक दौड़ा चला गया था, मगर वह कहीं नजर नहीं आया।”

“खैर देखा जायेगा, अब हमें उस लाश के लिये कुछ करना चाहिये” हमीद ने कहा।

“मेरा विचार है कि डाक्टर उसके कमरे में पहुंच चुका होगा।”

नामवर का विचार सच निकला। होटल के मैनेजर के साथ वही डाक्टर सुमन के कमरे में मौजूद था जो सुमन का इलाज कर रहा था।

“हार्ट फेल्यर ही हो सकता है --” डाक्टर ने कहा।

कासिम की आँखे सूझी हुई नजर आई, शायद वह सुमन के लिये रोता रहा था और अब चुपचाप हमीद की ओर देख रहा था।

अचानक हमीद का वह कार्ड याद आया जो ब्लैक फ़ोर्स का आदमी उसके कमरे में फोन के निकट छोड़ गया था उसे देखने की लिये वह एकांत में चला गया और कार्ड निकाल कर देखा, लिखा था।

“इस आदमी के अतिरिक्त किसी पर भी विश्वास न करो।”

“यह क्या चक्कर है ..व वह धीरे से बडबडाया और कार्ड को जेब में रख कर कमरे की ओर बढा। नामवर को वही छोड़ दिया।

कमरे में आ कर कार्ड को अग्नि कुंड में डाल दिया रीमा इस समय बाथ रूम में थी ! अचानक कोई कमरे का दरवाजा पीटने लगा। धड़ा धड़ ।

“कौन है ?” हमीद झल्ला कर दरवाजे की ओर बढ़ा।

“मैं हूं –दरवाजा खोलो --” बाहर से कासिम की आवाज आई।

हमीद ने दरवाजा खोला ..सामने कासिम खडा था। वह बुरी प्रकार हांफ रहा थामगर उसकी आंखों में विचित्र सी चमक नजर आई दांत निकल पड़ रहे थे।

‘ज़िंदा हो गई ...वह ज़िंदा हो गई।”

“क्या बक रहे हो –कौन ज़िंदा हो गई?” हमीद ने पूछा ।

“अरे वही सुमन नागरकर ..कुर्सी पर बैठी हुकुम चला रही है –मुझको भेजा है कि तुमको बुलाऊं ।”

इतने में रीमा बात रूम से बाहर निकली।

“अमे तो किया –तुम दोनों एक ही कमरे में रहते हो ज़/व कासिम ने धीरे से पूछा।

“हां हां ..बको नहीं –पूरी बात बताओ।”

“मै उसके बिस्तर के पास खडा था कि अचानक वह उठ बैठी..कहने लगी कि तुम यहाँ किया कर रहे हो – निकल जाओ कमरे से औए कैप्टन हमीद को यहां भेज दो –बस मैं दौड़ा चला आया।”

अचानक कासिम के चहरे पर भय के लक्षण नजर आये और वह हकलाने लगा।

“यानी कि आगे बाप रे ...भ भ भूत ।”

और फिर हमीद ने देखा कि उसकी आंखें बंद होती जा रही हैं, मगर होंठ हिल रहे थे।

“हटो हटो” हमीद ने रीमा से कहा” पीछे हटो –यह बेहोश हो कर गिरने ही वाला है।”

रीमा बौखला कर पीछे हटी और हमीद कासिम को संभालने के लिये उसकी ओर झपटा ! इस प्रयास में बस इतना हुआ कि कासिम का सर नहीं फूटा ...हमीद ने बड़ी सावधानी से ढेर हो जाने में सहायता दी थी।

"यह कहने आया था कि सुमन फिर जिन्दा हो गई है ! उसका एक संदेश भी लाया था-" हमीद ने रीमा से कहा।

"पता नहीं यह सब क्या हो रहा है--" रीमा बडबडाई।

"मुझे सुमन के कमरे तक जाना पड़ेगा—तुम भी साथ चलो--" हमीद ने कहा।

"म म ..मैं अगर यह सच हुआ तो ?"

"तो मैं उससे पूछूंगा कि दूसरी दुनिया में प्रिन्स हेनरी का तमाखू मिलता है या नहीं --" हमीद ने झल्ला कर कहा।

कासिम को उसी दशा में छोड़ कर दोनों कमरे से निकले और जब सुमन के कमरे के निकट पहुंचे तो वहाँ फिर नामवर दिखाई पडा।

"तुम बाहर ही ठहरोगे --" हमीद ने उससे कहा।

"आप अंदर क्यों जा रहे हैं, कोई खास बात ?" नामवर ने पूछा।

"वापस आ कर बताउंगा --" उसने दरवाजे का हैन्डिल घुमाते हुए कहा।

दरवाजा खुल गया और दोनों अंदर दाखिल हुए! सुमन बिस्तर के निकट पड़ी हुई आराम कुर्सी पर पड़ी हुई थी, इनको देखते ही सीधी हो कर बैठती हुई बोली।

"तुम लोग बिना आज्ञा लिये अंदर कैसे आये?"

"मैं कैप्टन हमीद हूं --" हमीद बोला।

"ओह अच्छा--" वह उठाती हुई बोली "बैठिए-बैठिए।"

फिर वह बिस्तर पर जा बैठी, क्योंकि कमरे में दो ही कुर्सियां थी, हमीद ने रीमा की ओर देखा ! वह बुरी प्रकार भयभीत थी, हाथ काँप रहे थे।

"यह कौन है ?" सुमन ने रीमा को घूरते हुए पूछा।

"मेरी एक दोस्त --" हमीद बोला।

"जो भी हो ..कर्नल कहाँ है - मैं उनसे इसी समय मिलना चाहती हूं।"

हमीद उत्तर में कुछ कहने ही जा रहा था कि असिस्टेंट मैनेजर दरवाजा खोल कर कमरे में दाखिल हुआ। उसके पीछे कई आदमी और थे। स्ट्रेचर भी साथ था। शायद लाश को कमरे से हटाने के लिये आये थे। असिस्टेंट मैनेजर का मुंह खुल गया।

चीख मारने का विचार दिल से निकाल दो --" हमीद हाथ उठा कर बोला "यह भूत नहीं है ..शायद इनको अचेतना हो गई थी ..अब ठीक है।"

"अर्थात ...यानी कि --" वह और कुछ न कह सका।

"अब आप लोग बाहर जाइए औए केवल उस डाक्टर को अंदर भेज दीजिए जो इनका इलाज कर रहा था।"

वह सब बाहर निकल गये।

"मामिला क्या है ?" सुमन ने आश्चर्य से पूछा "कैसी अचेतना...कैसा भूत?"

"कुछ देर पहले हमने आपको मुर्दा हालत में देखा था। डाक्टर ने कहा कि हृदय की गति बंद हो चुकी है। यह लोग शायद अब लाश उठाने के लिये आये थे..कासिम मेरे कमरे में बेहोश पडा है।"

"आप पागल बना देने वाली बातें कर रहे हैं..." सुमन ने कहा।

" मैं ख़ुद नहीं समझ सकता कि यह सब क्या हो रहा है ..." हमीद उसकी आंखों में देखता हुआ बोला "लेकिन आपने मुझे क्यों बुलाया था?"

"मैं कर्नल से मिला चाहती हूं ..मगर उनका पता मुझे नहीं मालुम ." सुमन बोली।

"मिलना तो मैं भी चाहता हूं, मगर परेशानी यह है कि मुझे ख़ुद भी उनका पता नहीं मालूम।"

part14

रीगम बाला - 14

(2) 2k 4.8k

(14)

“सुनो कैप्टन ...मेरा बाप मार डाला गया और मैं प्रतिशोध की आग में जाल रही हूं ..कर्नल ने अभी तक मुझे रोके रखा है वर्ना कभी का वीरान किले में पहुंच गई होती।”

“वीरान किले में क्या है ?” हमीद ने पूछा।

“तुम नहीं जानते ?”

“नहीं ..” हमीद ने कहा।

इतने में दूसरा बखेड़ा खडा हो गया। असिस्टेंट मैनेजर एक स्थानीय पुलिस इन्स्पेक्टर के साथ कमरे में दाखिल हुआ। कमरे में क़दम रखते ही दहाड़ने लगा।

“यह है फ्राड लोग .पता नहीं क्या चाहते है। मैं अब इन्हें यहाँ नहीं ठहरने दूंगा।”

“क्या बात है ?” इन्स्पेक्टर ने पूछा।

“यही है वह मामिला जो थिदी देर पहले मर गई थी।” उसने सुमन की ओर संकेत करके कहा।

“बकवास मत करो ...” हमीद झल्ला कर बोला “उस डाक्टर को बुकाओ जिसने इनकी मौत का समर्थन किया था।”

फिर बात बढ़ गई ! पूरे होटल में चर्चा होने लगा! असिस्टेंट मैनेजर ने सिमित प्रवेश के अधिकार के अंतर्गत उन सब को अतिशीघ्र होटल खाली करने की नोटिस दे दी।

रात के नौ बजे थे कि अचानक किसी ने निलनी कार माऊंट के दरवाजे पर आवाज दी! वह अभी सोई नहीं थी ! उठ कर दरवाजा खोला ! लेकरास का असिस्टेंट मैथूज़ सामने खडा विसुर रहा था।

“आप इस समय ?” निलनी ने आश्चर्य से कहा।

“मैं क्षमा चाहता हूं मिस ...लेकिन !”

“अंदर आ जाइए ।”

“समय बहुत कम है ।” वह कमरे में दाखिल होता हुआ बोला “जो कुछ कहना है वह थोड़े शब्दों में कहूंगा! आपके नये दोस्त अड़ल्फी से निकाले जा रहे हैं ..अगर आप समय सर न पहुँची तो वह इधर उधर की ठोकरें खाते फिरेंगे।”

“क्यों निकाले जा रहे हैं ?”

“मैं नहीं जानता ।”

“लेकिन मैं इस संबंध में क्या कर सकती हूं?”

“उनकी सहायता कर सटी हैं -यह कार्ड लीजिए -इस पर जिस इमारत का पता लिखा है उसे आप प्रयोग कर सकती हैं ..अपने दोस्तों को वहाँ ले जाइए, जल्दी कीजिए ।”

निलनी इस समय बाहर नहीं जाना चाहती थी मगर यह काम तो उसे करना ही था। उसने कार्ड ले लिया।

“बाहर एक गाड़ी मौजूद है!”

“मोटे आदमी से आप मित्रता कर चुकी है ! इससे कहियेगा कि वह अपने मित्रों सहित आपके मकान में ठहर सकता है—इस प्रकार उन्हें उस इमारत में ले जाइएगा।”

“लेकिन मैं तो उनके साथ वहाँ न ठहर सकूंगी क्योंकि --।”

“चिंता न कीजिये --” उसने बात काट कर कहा “इसका प्रबंध कर दिया जायेगा कि आपके वहाँ ठहरने पर आपके पाठशाला को कोई आपत्ति नहीं होगी।”

निलनी विवश हो कर बाहर निकली। सचमुच एक बड़ी सी गाड़ी खाड़ी थी। ड्राइविंग सीट पर कोई बैठा था।

निलनी को पिछली सीट पर बैठाने के बाद मैथ्यूज़ ने खिड़की में सर डाल कर कहा।

“ड्राइवर आपको एडलफ़ी तक ले जाएगा और वहाँ से आपके मित्रों को उस इमारत तक पहुंचाएगा। इस संबंध में आपको किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी—मैं आपके साथ न जा सकूंगा।”

गाड़ी चल पड़ी और निलनी सोचने लगी कि अगर वह इस झमेले में न पड़ी होती तो अच्छा था -पता नहीं यह लोग क्या करना चाहते है—मगर अब तो तीर कमान से निकल चुका था..हर बात माननी थी...हर काम इस प्रकार करना था जैसे वह ख़ुद उसे खुशी से करना चाह रही हो।

थोड़ी देर बाद गाड़ी एडलफ़ी के सामने रुकी और ड्राइवर उन्हें समझाने की कोशिश कर रहा था कि वह होटल छोड़ दें।

"नाही --" कासिम पैर पटक कर बोला "इन सभों को तुम होटल से निकाल सकते हो ---मैं तो नाही जाऊँगी --"

कासिम की पीठ निलनी की ओर थी ..मगर रीमा और हमीद ने उसे देख लिया था और हमीद ने मुस्कुरा कर सर भी हिलाया था। निलनी ने हमीद के निकट पहुंच कर धीरे से कहा।

"क्या बात है -शायद किसी बात पर झगड़ा हो रहा है।"

"अस्ल बात तो मुझे भी नहीं मालूम ..चूंकि हम इसी के साथ यहाँ आये थे, इसलिये इसी के साथ साथ हमें भी होटल छोड़ देने की नोटिस मिल गई है" हमीद ने भी धीरे ही से कहा।

उधर पुलिस इन्स्पेक्टर से कासिम कह रहा था।

"पूछो इन सालों से कि अपने होटल का किया दाम लेंगे—मैं ख़रीद लूंगा..अपने को किया समझते हैं साले।"

अचानक निलनी ने कासिम की भुजा पकड़ कर अपनी ओर आकृष्ट कर लिया।

"तत ..तुम ..इस वख्त .." कासिम बौखला कर उर्दू ही में बोल पड़ा।

"क्या बात है -कैसा झगड़ा है?" निलनी ने अंग्रेजी में पूछा।

"यह चाहते है कि हम अभी होटल छोड़ दें --" कासिम बोला।

"मगर क्यों ?" निलनी ने पूछा।

"किया बताऊँ ..कुश समझ में नाही आ रहा है।"

"बताओ ..शायद मेरी समझ में आ जाए।"

“वह मर गई ...फिर जिन्दा हो गई --”

“कौन मर गई ?”

“जिसका मैं सेकरेटरा हूं।”

“तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आई।”

इतने में हमीद आगे बढ़ कर धीरे से बोला।

“मेरे दोस्त की मोटी सी अक्ल ...कभी कभी खुबसूरत शरारतें।”

“अमे तुम चुप रखो --” कासिम बीच ही में उर्दू में दहाड़ा।

“आप लोग कान खोल कर सुन लीजिए --” पुलिस इन्स्पेक्टर ऊँची आएअज में बोला “अगर आप लोगों ने पंद्रह मिनिट के अंदर अंदर होटल न छोड़ दिया हमें शक्ति प्रयोग करनी पड़ेगी।”

“यह क्या कह रहा है?” निलनी ने हमीद से पूछा।

“पंद्रह मिनिट के अंदर अंदर होटल छोड़ देने की नोटिस दे रहा है.” हमीद ने कहा।

“चिंता की कोई बात नहीं ..तुम लोग मेरे साथ चलो” निलनी ने कहा “यह तो बड़ा अच्छा हुआ कि इस समय मुझे पनीर की आवश्यकता आ पड़ी और मैं इधर आ निकली..बस उठाओ अपना! इन लोगों का अपमान जनक व्यवहार कम से कम मेरे लिये असहनीय है।”

“अच्छी बात है --” कासिम तड से बोला “तुम बस खाली मुझे ले चलो,,वह लोग अपनी अपनी मुसीबत आप भुगतेंगे।”

“यह तो इंसानियत नहीं होगी मिस्टर कासिम ?” हमीद बोला।

“अब मैं उस भूतनी के साथ नाही रह सकता ..” कासिम ने कहा।

“नहीं नहीं तुम चलो...” निलनी ने कहा।

“तब मैं कहीं ओर चला जाऊँगा ...” कासिम गुर्राया।

“दोस्तों से इतनी नफ़रत नहीं करनी चाहिये ..” निलनी ने उसका कंधा थापक कर कहा।

“तुम इस आदमी को नाही जानती..मुझे खुदखुशी पर मजबूर कर देगा।”

उधर इन्स्पेक्टर बराबर वार्निंग दिये जा रहा ...अन्त में उन्हें होटल छोड़ना ही पडा।

सुमन के साथ कासिम गाड़ी पर बैठने के लिये तैयार नहीं हो रहा था मगर उस समय कहाँ कोई टैक्सी भी नहीं थी इसलिये विवश हो कर उसी गाड़ी में बैठना पडा।

गाड़ी एक इमारत के सामने रुकी, यह चार कमरों वाली इमारत थी। निलनी कासिम को अलग ले गई, और उस से पूरी कहानी सुनने के बाद बोली।

“ऐसा हो सकता है .कभी कभी बड़े बड़े डाक्टर भी धोखा खा जाते हैं।”

“नाही ..याखिन करो ..वह भूत हो गई है ..मुझे उससे डर लगता है -” कासिम ने बड़ी विवशता के साथ कहा।

रीमा और हमीद को भी एक कमरा मिला था, मगर वो दोनों ही परेशान नजर आ रहे थे।

“तुम क्या सोच रहे हो ?” रीमा ने उसे सम्बोधित किया।

“मैं क्या सोच रहा हूं !” हमीद ने अपने आप से प्रश्न किया और रीमा की ओर देख कर मूर्खों के समान मुस्कुराने लगा।

“आखिर वह लड़की अचानक वहां किस प्रकार पहुंच गई थी?”रीमा ने पूछा।

“लड़की नहीं ...औरत कहो और औरत सब कुछ कर सकती है ..जिस समय जहां चाहे पहुंच सकती है ! कभी कभी तो वह कब्र में घुस कर मुर्दा भी उखाड़ लाती है और उससे इतनी बातें करती हैं कि वह भी बोल उठाता है ...अच्छा, अब बिलकुल चुप हो जाओ ..वर्ना मैं पागल हो कर जींदा हो जाऊँगा।”

“पता नहीं तुम कैसे होते जा रहे हो ...मैं तो केवल यह चाहती हूं कि किसी भी समय असावधान न रहो।”

“क्या मैं असावधान नजर आ रहा हूं ?” हमीद भन्ना कर बोला।

“अच्छा अब कुछ नहीं पूछूंगी।”

“बहुत बहुत शुक्रिया ..अब मैं जरा सुमन के पास जा रहा हूं।”

“मैं तुम्हें अकेली नहीं जाने दूँगी।”

हमीद भन्ना कर कुछ कहने ही वाला था कि किसी ने दरवाजे पर आवाज दी । हमीद ने आगे बढ़ कर बोल्ट गिरा दिया –फिर दरवाजा खुला और कासिम अंदर आया, पीछे निलनी भी थी।

“चलो देखो --” वह भर्राई हुई आवाज में बोला।

“का देखूं ?” हमीद ने झल्ला कर उसकी नक़ल उतारी।

“सुमन फिर मर गई है --” कासिम ने कहा।

“मरने दो –मुझे कोई दिलचश्पी नहीं है --” हमीद ने बुरा सा मुंह बना कर कहा।

“आखिर बात क्या है मिस्टर हमीद ?” निलनी ने पूछा ।

“मैं क्या जानू मुझसे तो कुछ देर पहले ही मुलाक़ात हुई थी ...उसके सेक्रेटरा से पूछो।”

“मिस्टर कासिम का विचार है कि आप ही इस मामिले पर प्रकाश डाल सकेंगे?”

“मिस्टर कासिम भी मर चुके हैं इसलिये उनकी बात की कोई कीमत नहीं !”

“अमे तुम साले ख़ुद मर गये हो ...बल्कि खुदा करे कि मर जाओ ..” कासिम ने उर्दू में कहा।

“तुम समझ ही नहीं सकते इस बात को मेरे दोस्त ! मुझे भूत अफ़सोस है --” हमीद ने दुखी स्वर में कहा।

“किया कहना चाहते हो ?” कासिम बोला।

“यही कि तुम्हारे कफ़न दफ़न का भी इंतज़ाम अब हो जाना चाहिए । एक बार मर कर फिर ज़िंदा हो जाने का यही मतलब है कि वह दूसरी दुनिया में भी अपने सेक्रेटरा को अपने साथ ही रखनाचाहती है, मतलब यह कि तुम्हारी मौत का इंतज़ाम करके वह फिर मर गई ..समझ गये ना?”

“ए -खुदा की कसम ...ऐसा नाही कहो ..” कासिम बोला।

“अगर ज़िंदा रहना चाहते हो तो इस लड़की को मेरे पास छोड़ कर बाहर चले जाओ।”

“नाही ...यह नाही हो सकता ...” कासिम फिर बिगड़ उठा।

“नाही हो सकता तो फिर जहन्नुम में जाओ ..मैं कुछ नहीं कर सकता।”

“द द ...देखो !”

“जिन्दगी प्यारी है या लड़की ?” हमीद ने पूछा।

“जिन ..जिन्दगी।”

“शाबाश मेरे दोस्त ...जाओ ?”

कासिम दरवाजे की ओर मुदा ही था कि निलनी तेजी से बाहर निकल गई! हमीद हँस पडा मगर बड़ी जहरीली हँसी थी।

उसके बाहर निकल जाने पर कासिम हमीद की ओर मुड़ कर बे बसी से जल्दी जल्दी पलकें झपकाने लगा।

हमीद निलनी के क़दमों की दूर होती हुई आवाज़ें सुन रहा था, उसने रीमा से पूछा।

“हम लोगों ने आपस में क्या बातें की थीं ?”

“पता नहीं...तुम लोग शायद अपनी भाषा में शायद बातें कर रहे थे और तुम्हारी भाषा मेरी समझ में नहीं आती - जानती ही नहीं तो समझ में क्या आयेगी !”

“मगर यह हमारी भाषा समझती है।” हमीद बोला।

“नाहीं नाहीं....।” कासिम बोल पड़ा “उसे उर्दू नाहीं आती।”

“उर्दू तो तुम्हें भी ठीक से नहीं आती - चले जाओ यहाँ से।”

“मुझे यहीं रहने दो हमीद भाई - मैं और उर्दू पढ़ लूँगा.....अच्छा कसम पियारे भाई, मुझ पर रहम करो।” कासिम धिधियाया।

“मैं कुछ नहीं समझ सकती, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है.....आखिर यह सब क्या हो रहा है।” रीमा हाथ मालती हुई बोली।

"समझाता हूँ।" हमीद ने कहा "इस प्रकार हमें एक जगह एकत्रित कर दिया गया है ताकि जिस समय भी चाहे हमें ख़त्म कर दें, होटल में उत्पात मचाना या हमें क़त्ल करना उन्होंने उचित न समझा होगा।"

"अगर वह तुम्हारी भाषा समझती है तो फिर इस दौड़ धूप और ड्रामे का यही मतलब हो सकता है।" रीमा ने बड़ी गंभीरता से कहा "संस्था के पास उच्च कोटि के मस्तिष्क मौजूद है। मेडिकल सायन्स भी आश्चर्य जनक रूप से प्रगति की ओर बढ़ती जा रही है, जिसके अंतर्गत इस प्रकार की मौत और जिन्दगी संभव है।"

अचानक कासिम "अरे बाप" का नारा लगा कर हमीद के पीछे छिपने की कोशिश करने लगा।

सुमन दरवाज़े में खाड़ी उन्हें घूरे जा रही थी।

"यह क्या भांड पना फैलाया है तुमने।" अचानक रीमा कासिम की ओर देख कर गरजी और हमीद को ऐसे लगा जैसे एकदम से रीमा के व्यक्तित्व ही बदल गया हो। विचित्र रूप था...हमीद के लिये बिलकुल नया। उसने यह भी देखा कि कासिम अब सुमन के बजाय रीमा को भयभीत नजरों से देखे जा रहा है।

इतनी देर में सुमन कमरे में दाखिल हो चुकी थी।

"तुम दोनों ही बाहर जाओ।" रीमा ने हमीद से कहा।

"चलो भाई.....।" हमीद ने मुड़ कर कासिम का हाथ पकड़ा और दरवाज़े की ओर बढ़ता चला गया।

जैसे ही वह कमरे से निकले, दरवाज़ा बंद कर दिया गया। हमीद ने बोल्ट चढाने की आवाज भी सुनी।

part15

रीगम बाला - 15

(2) 2k 4.9k

(15)

"यह सब किया हो रहा है हमीद भाई....।" कासिम कपकपाती हुई आवाज में बोला।

"अरे जहन्नुम में झोंको सबको - चलो अब तुम्हारी वाली को तलाश करें - सुमन भूत बन गई है और मेरी वाली तो पहले ही से चुड़ैल थी।"

"मैं कासी को नहीं तलाश करता - औरत है लानत पर।"

"औरत है लानत पर.....।" हमीद ने आश्चर्य से दुहराया "अबे यह क्या है।"

"ठेंगे से - मुझे इस वख्त गलत सही का होश नाहीं है.....अगे यह बाप गे- फिर जिन्दा हो गई।"

"अगर यहीं बात है तो चलो - इन सबसे पीछा छुड़ायें।"

"किया मतलब ?"

"यहां से निकल कर किसी दुसरे होटल चलें।"

"हाँ - पर ठीख है।" कासिम हर्षित होंकर बोला "तुम्हारी वाली भी मुझे जहर लगने लगी है - कितने जोर से डांटा था साली ने।"

इमारत से बाहर निकलने से पहले हमीद ने निलनी कारपाउन्ड को पूरी तरह तलाके किया मगर वह इमारत में नहीं मिली - फिर बाहर निकला तो वह गाड़ी भी ग़ायब थी जिस पर यहाँ आया था फिर बाहरी बरामदे से नीचे उतरा तो बाईं ओर से आवाज आई।

"ठहरिये.....?"

हमीद रुक गया.....फिर उसे इन्स्पेक्टर नामवर दिखाई पड़ा।

"आप कहाँ जा रहे है श्रीमान ?" उसने पूछा।

"दूध लेने।" हमीद ने लापरवाही से उत्तर दिया।

"मैं नहीं समझा श्रीमान ?"

"मिल्क - एम - आई - एल - के - मिल्क।"

"लेकिन.....अर्थात.....।"

"फिर किस भाषा में समझाऊ ?"

"दूध का प्रबंध कर दिया जायेगा.....आप अंदर ठहरिये।"

"मैं खुद ही जाना चाहता हूँ।" हमीद बोला।

"यह कर्नल साहब की स्कीम के अनुसार न होगा।"

हमीद ने कुछ कहे सुने बिना एक जंचा तुला हाथ उसकी कनपटी पर जमा दिया। वह चकरा कर गिरा और फिर न उठ सका।

हमीद ने कासिम का हाथ पकड़ा और तेजी से आगे बढ़ा।

अचानक कासिम ने ठोकर खाई और हमीद को भी अपने साथ लेता हुआ ढेर हो गया।

"अबे कमबख्त।" हमीद बड बड़ाया।

"किया करूँ.....साली जिन्दगी अजीरन हो गई है....अल्लाह मियाँ ने इतना बड़ा डील डौल दिया था तो लौंडियों के चक्कर में न डाला होता।"

"खामोश रहो - कुफ्र मत बको - बेहूदे कहीं के।" हमीद ने कहा "अल्लाह मियाँ ने नहीं...बल्कि तुम्हारे बाप ने लौंडियों के चक्कर ने डाला है - आओ चलो।"

कासिम भी किसी न किसी प्रकार उठ बैठा और हाँफते हुये पूछा।

"लेकिन हम जायेंगे कहा ?"

हमीद कुछ कहने ही वाला था कि अचानक उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी ने ठंडा पानी उसके चेहरे पर फेंक दिया हो - फिर चेहरे की वह ठंडक पूरे शरीर में फैलती चली गई....स्नायु शिथिल पड़ गये और फिर होश नहीं कि क्या हुआ।

निलनी कारमाउन्ट बाहर निकली थी तो उसे भी वह गाड़ी नजर नहीं आई थी जिस पर वह यहाँ तक आई थी – मगर वह इतनी भयभीत थी कि पैदल ही चल पड़ी थी और दिल ही दिल में मैथूज को भी बुरा भला कहती जा रही थी – सोच रही थी कि आखिर वह उन लोगों के साथ क्यों ठहरे। लेफरास ने उसे खरीद तो नहीं लिया था।

सड़क सुनसान पड़ी थी। ठंडक की तेजी से टांगें सुन होकर रह गई थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे ! बोर्डिंग हाउस यहां से निकट नहीं था। पछता रही थी कि अकारण उसने लेफरास की बात मान ली थी।

अचानक पीछे से किसी गाड़ी के हेड लैम्पस का प्रकाश दूर तक सड़क पर फैलता चला गया। वह जल्दी से सड़क छोड़ कर किनारे हो गई मगर रुकी नहीं – चलती ही रही।

कुछ ही देर बाद दाहिनी और ब्रेक चडचडाये। एक गाड़ी रुकी और किसी औरत ने उसे सम्बोधित करके कहा।

“अगर कहीं दूर जाना हो तो इस ओर आ जाओ।”

निलनी गाड़ी की ओर बढ़ गई। गाड़ी कोई औरत ही ड्राइव कर रही थी ! उसने बाईं ओर का दरवाज़ा खोल कर निलनी से कहा।

“बैठ जाओ।”

“धन्यवाद।” निलनी बैठती हुई बोली “में देर से किसी टैक्सी की प्रतीक्षा कर रही थी।”

“कहां जाना है ?” औरत ने पूछा। वह थी तो स्थानीय – मगर अभ्यास का प्रदर्शन करती हुई अंग्रेजी बोल रही थी।

निलनी ने बोर्डिंग हाउस का पता बता दिया।

“ओह – वह तो मेरे मार्ग ही में है।” औरत बोली।

निलनी ने संतोष की सांस ली।

मगर जब गाड़ी दूसरी सड़क पे मोड़ी गई तो उसने चौंक कर कहा।

“इधर कहां ?”

“चुप चाप बैठी रहो।” पिछली सीट के किसी मर्द की गुर्राहट सुनाई दी।

"कक...क्या.....मतलब ?" निलनी हकला उठी।

"मैंने कहा कि चुपचाप बैठी रहो....वर्ना गोली मार कर किसी खड में फेंक दूँगा....।"

निलनी की धिग्धी बध गई - सर चकराने लगा। इस प्रकार का स्वर सुनने का पहला संयोग था।

एक शांति प्रिय नथा शिष्ट कडकी थी। उसका दिल डूबने लगा। पता नहीं लेकरास ने क्या समझ कर उससे इस प्रकार का काम लेना चाहा था।

गाड़ी की स्पीड बडी तेज थी वह उडी चली जा रही थी। कुछ देर बाद निलनी ने महसूस किया कि जैसे वह किसी नये स्थान पर पहुंच गई हो -चारों ओर गहरा अन्धेरा फैला हुआ था। गाड़ी के हेड लाईट्स के प्रकाश के अतिरिक्त और कोई रोशनी कहीं नहीं दिखाई दे रही थी।

अन्त में यात्रा समाप्त हो गई और उससे नीचे उतरने को कहा गया। उसका शरीर कांप रहा था, मगर यह कम्पन ठंड से अधिक भय के कारण था। नीचे उतारी तो कंप उठाने के लिये सहारे की जरुरत महसूस कर रही थी।

औरत ने ठीक उसी समय उसकी भुजा पकड़ ली। मर्द उनके पीछे चल रहा था।

थोड़ी दूर तक पैदल चलने के बाद वह एक छोटे से काटेज में दाखिल हुए। कमरा गर्म था। अग्नि कुंड में कोयले दाहक रहे थे और चारों ओर पेट्रोमैक्स की तेज रोशनी फैली हुई थी ..इसी से निलनी ने अनुमान लगा लिया कि वह कोई वीरान स्थान है .नगर से दूर ..जहां बिजली की रोशनी का प्रबंध असंभव था।

निलनी को एक आराम कुर्सी पर बैठा दिया गया और उसके पैरों पर एक मोटा सा कम्बल डाल दिया गया।

मर्द कमरे से चला गया, केवल औरत रह गई।

निलनी बिलकुल बदहवास थी। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।वह रह रह कर उस औरत को देखे जा रही थी। जब जरा होश ठिकाने पर आया तो उसने औरत से पूछा।

"मैं यहाँ क्यों लाई गई हूं ?"

"मालूम हो जायेगा..." औरत ने लापरवाही में कहा "क्या पिओगी?"

“कुछ भी नहीं –मुझे मालूम होना चाहिए कि मैं यहाँ क्यों लाई गई हूं।”

“शराब या काफ़ी !” औरत ने फिर पूछा।

“बहकी हो क्या...” निलनी झल्ला उठी “मैंने कहा था कि मैं कुछ नहीं पीउंगी ...मेरे प्रश्न का उत्तर दो।”

“मैं यहां क्यों लाई गई हूं ...यह बड़ी ज्यादती है ..बहुत बड़ा कानूनी जुर्म है।”

ठीक उसी समय एक आदमी कमरे में दाखिल हुआ, मगर यह वह नहीं था जो गाड़ी पर यहाँ तक आया था, यह कोई दूसरा आदमी था।

निलनी ने आनेवाले की ओर देखा औए बौखला गई ..दुबारा नजर मिलाने का साहस न कर सकी। पता नहीं उसकी आँखों में क्या था?

आने वाला मौन खडा उसे देखता रहा, फिर औरत से बोला।

“इन्हें कुछ पीने को दो--”

“यह कुछ पीने के इन्कार कर चुकी हैं ---” औरत ने कहा।

“क्यों ?” मर्द ने निलनी से पूछा।“हां ...मैं पहले यह मालूम करना चाहती हूं कि आखिर इस हरकत का क्या मतलब है .मैं यहाँ क्यों लाई गई हूं ...” निलनी ए सर झुकाए हुये कहा।

“कारण बता दिया जायेगा..मगर क्या समझ भी सकोगी” मर्द ने कोमल स्वर में कहा।

“क्या मतलब ?”

तुम कोई अच्छा काम तो करती नहीं हो कि बताते ही समझ जाओ।”

“मैं क्या करती रही हूं ?”

“कुछ लोगों के गैर कानूनी काम में हाथ बटाती रही हो।”

“गैर कानूनी कार्य ?” निलनी ने दुहराया।

“हां इसे अपराध का जुर्म समझ लो।”

“जुर्म ...अपराध ?” निलनी चौंकती हुई बोली।

“और नहीं तो क्या,तुम जो कुछ करती रही हो उसे मनोरंजन समझती हो।” मर्द ने कहा। “यहां की पुलिस तुमको हिरासत में ले सकती है अच्छी लड़की।”

“प प ..पुलिस .।” निलनी हकला उठी।

“हां ..पुलिस !”

“ओह ..मगर मैंने तो आज तक किसी को कोई हानि नहीं पहुँचाई।”

“तब क्या करती रही हो।”

“कुछ लोगों की सहायता करती रही हूं .वह रक परेशानी में पड़ गये थे..मैंने कुछ देर पहले उनकी सहायता की है।”

“किसके संकेत पर ...कौन तुमसे काम ले रहा है।”

निलनी कुछ नहीं बोली। सोचने लगी कि कदाचित वह आरागान के आदमियों के हाथ लग गई है ...इस लिये उसे सावधान रहना चाहिए, यह हो सकता है कि यही आदमी कैप्टन हमीद का चीफ हो ..क्या नाम था ...कर्नल विनोद !

“तुम क्या सोचने लगी !” आदमी ने उसे टोका।

“कुछ नहीं ..यह बातें मेरी समझ में नहीं आ रही हैं।”

“तुम उन लोगों के लिये कब से काम कर रही हो।”

“मैं किसीके लिये कोई काम नहीं कर रही हूं ..मैं तो ..।”

“बेल्जियम से स्कालरशिप पर आई हो ..।” मर्द ने उसकी बात काट कर कहा “पुरातत्व पर रिसर्च कर रही हो और इसके अतिरिक्त वह काम जिसे केवल तुम जानती हो,वह लोग जानते है, जो तुमसे काम ले रहे है।”

“मैं ..मैं ?” निलनी कारमाउन्ट।” मर्द की आवाज कुछ तेज हो गयी “कल ही तुम्हारी वापसी भी हो सकती है और अपनी सरकार को मुंह दिखाने के योग्य न रहोगी ...।”

निलनी कुछ नहीं बोली। उस आदमी से आंख मिलाने का साहस तो पहेले ही समाप्त हो गया था अब जबान भी अधिकार में नहीं रही।

बेहोशी दूर होते ही हमीद पर झल्लाहट का दौरा पड़ गया क्योंकि सर रीमा की रान पर रखा हुआ था।

और यह कोई खुला हुआ स्थान भी नहीं था ..बल्कि उसी इमारत का ही एक भीतरी स्थान था।

"मुझे यहाँ कौन लाया है।" उसने झटके के साथ उठाते हुए पूछा।

"कैसी बातें कर रही हो ..तुम्हें क्या हो गया है ?।" रीमा ने दुखी स्वर में कहा।

कासिम अब भी बेहोश था और उससे थोड़ी ही ही दूरी पर था। सुमन उसके निकट बैठी उसे चिंता जनक द्रष्टि से देखे जा रही थी।

"वह कहाँ है।" हमीद ने रीमा से पूछा।

"कौन ?।" रीमा ने पूछा।

"जो आदमी हमारे कमरे के बात रूम से बरामद हुआ था और जिसने उस आदमी पर हमला किया था?"

"कैसी बहकी बहकी बातें कर रहे हो .. वह हमारे साथ कब आया था।"

"ठहरो .." हमीद कहता हुआ दरवाजे की ओर झपटा।

बरामदे में पहुंच कर उस स्थान पर रुका जहां उसने इन्स्पेक्टर नामवर सिंह को थप्पड़ मारा था। मगर वहाँ कोई नहीं दिखाई दिया, वह फिर अंदर आ गया।

"क्या मैं तुम्हें अंदर ही मिला था ?" उसने रीमा से पूछा।

"हां ! यहीं ...इसी जगह ..आखिर बताओ ना, क्या बात है ?"

"कुछ नहीं ...।" हमीद ने कहा और कासिम को होश में लाने का उपाय करने लगा। उसे अपने आप पर हँसी भी आ रही थी ! इस थोड़ी सी अवधि में कितनी बार बेहोश हो चुका है..जैसे उनके हाथों में बस खिलौना बन कर रह गया है, वह कासिम का कंधा झंझोड़ कर चीखने लगा।

“उठो ...कमबख्त ...उठो ! आखिर तुम इस तरह क्यों मेरी तक़दीर में लिख दिये गये हो ।”

“दिल का बुरा नहीं है कैप्टन ।” सुमन ने कहा ।

“जी...क्या कहा आप ने ?” हमीद भन्ना कर पलटा ।

“मैं कहा कि बेवकूफ तो ज़रूर है मगर दिल का बुरा नहीं है ।”

“तो क्या दिल में शहद लगा कर चाटूं या गुलदान में सजाऊँ ?”

“मैं आप दोनों की बेहोशी का कारण जानना चाहती हूँ ।”

“मैंने तो आप से आपकी मौत का कारण नहीं पूछा था ।”

“बस बहुत हो चुका ।” सुमन पैर पटक कर बोली “मैं इस प्रकार का मज़ाक पसंद नहीं करती ।”

“क्या तुम इसे किसी बात पट क्रोध दिलाने की चेष्टा कर रहे हो ?” रीमा ने हमीद के कंधे पर हाथ रखकर कोमल स्वर में पूछा “मुझे बताओ कि क्या बात है - यह नहीं जानती कि इस पर क्या बीत रही है - यह हमारे वैज्ञानिको के चमत्कार है ।”

part16

रीगम बाला - 16

(4) 1.9k 4.5k

(16)

"मैं इसे जल्द से जल्द होश में लाना चाहता हूँ।" हमीद ने कासिम की ओर संकेत कर के कहा।

"बेहोशी का कारण मालूम हुये बिना मैं क्या कर सकूँगी।"

"किसी ने मेरे चेहरे पर कोई तरल पदार्थ फेंका था।" हमीद ने कहा और मैं बेहोश हो गया।

"मैं इसकी बेहोशी का कारण पूछ रही थी ?"

"इसके साथ भी वही किया गया होगा।"

रीमा के चेहरे पर चिंता के लक्षण और गहरे हो गये।

"क्या सोचने लगी ?" हमीद ने टोका।

"अब मेरी भी बुध्धि भी काम नहीं कर रही है - मैं नहीं समझ रहीं हूँ कि वह क्या करना चाहते है।"

अचानक किसी ने बाहर से काल वेल का बटन दबाया।

हमीद ने आगे बढ़ना चाहा।

"ठहरो।" रीमा ने उसे रोका "मैं देखती हूँ।"

फिर जब उसने दरवाज़ा खोला तो चौंक पड़ी, सामने वही ड्राइवर खड़ा था जो उन्हें यहाँ लाया था! वह रीमा के संकेत पर अंदर आ गया, हमीद ने उसे घूर कर देखा, फिर पूछा।

"क्या बात है ?"

"मेम साहब किदर ए ?" उसने पूछा।

“कौन मेम साहब ?”

“जो तुम को इदर लाया।”

“यहाँ तो नहीं है।”

“फिर किदर ए ?”

“शायद पैदल चली गई....क्या तुम उसे नहीं ले गये थे ?”

“अम दूसरा काम को गया था !”

“तुम किस के ड्राइवर हो ?”

“मेम साहब का।”

“हो सकता है कि वह किसी दूसरी गाड़ी से चली गई हो।”

ड्राइवर कुछ नहीं बोला।

“मैं तुम्हारी मेम साहब से मिलना चाहता हूँ।” हमीद बोला।

“अम बोल देगा।”

“गाड़ी लाये हो ?”

“हाँ !”

“क्या तुम मुझे अपने साथ नहीं ले चल सकते।”

“नहीं साब....अम पहले मेम साहब से पूछे....फिर ले जाये।”

इतने में कासिम कराह कर उठ बैठा और सब उसकी ओर देखने लगे। ड्राइवर बाहर चला गया।

“हांय...फिर वहीँ।” कासिम बौखला कर चारों ओर देखता हुआ बोला।

फिर जैसे ही सुमन पर नजर पड़ी – वह उठकर दरवाज़े की ओर भागा।

"ठहरो।" हमीद ने उसे ललकारा।

"नाहीं।" कासिम भागता गया।

"बाहर निकले तो जान से हाथ धोना पड़ेगा....।" हमीद चीखा।

इस बार कासिम रुक गया और उसकी ओर मुडा।

"इस बार तुम भी मर कर जिन्दा हुये हो।" हमीद उसकी आँखों में देखता हुआ बोला!

"अल्ला कसम ?" कासिम ने घुटी घुटी सी आवाज में पूछा।

"हां बे।" हमीद ने कहा "और यूँ कि अब थोड़ी थोड़ी देर बाद मरते ही रहोगे और फिर जिन्दा भी होते रहोगे.....इसलिये मरने से डरने की जरुरत नहीं है।"

"देखो! मुझे डराओ नाहीं।"

"शठ अप....।" हमीद कंठ फाड़ कर दहाड़ा।

"इससे क्या लाभ....वह भयभीत मालूम होता है।" रीमा ने आगे बढ़कर उसका कंधा थपकते हुये कहा।

मगर हमीद ने बड़ी निर्दयता से उसका हाथ झटक दिया और कासिम को घूँसा दिखा कर बोला।

"तू औरतों के चक्कर में मरेगा।"

"तत.....तुम भी तो मरोगे।"

"अबे तो क्या मैं औरतों से डरता हूँ.....औरत चाहे मुर्दा हो चाहे जिन्दा...हर हाल में औरत है।" हमीद ने कहा "लेकिन यह तो मानने के लिये तैयार ही नहीं कि यह मर गई थी – उल्लू के पठ्ठे।"

"ए....गलियाँ नाहीं दो।" कासिम आँखें निकल कर बोला।

सुमन खिलखिला कर हँस पड़ी और रीमा मूर्खों के समान एक एक का मुँह देखने लगी।

किसी ने फिर दरवाज़े पर आवाज दी !

"जाकर देखो....कौन है ।" हमीद ने कासिम से कहा ।

कासिम भयभीत नजरों से सुमन की ओर देखता हुआ दर्वे की ओर बढ़ा ।

दरवाज़ा खोलते ही बौखला कर पीछे हट आया, दो आदमी अंदर दाखिल हुये ! दोनों में से एक के हाथ में टामी गन थी ।

"तुम दोनों ।" उनमे से एक ने हमीद और रीमा की ओर संकेत कर के कहा "हमारे साथ चलोगे ।"

"इन दोनों को ले जाओ ।" हमीद ने कासिम और सुमन की ओर संकेत कर के कहा "हम दोनों को यहाँ कोई कष्ट नहीं है ।"

"चलो ।" टामी गन वाला गुर्राया ।

"चलो भाई ।" हमीद लम्बी सांस लेकर रीमा से बोला ।

"अरे तो फिर मुझे भी लेते चलो....मैं अकेले यहाँ नाहीं रहूँगा ।" कासिम भर्राई हुई आवाज में बोला ।

"नाहीं ।" हमीद कंठ फाड़ कर उसी के भाव में बोला "तुम नाहीं जा सकते ।"

"मैं यहाँ नाहीं रहूँगा ।" कासिम उससे भी तेज आवाज में चीखा....आवाज क्या थी....पूरा मेघ नाद था - पूरी इमारत झनझना कर रह गई ।

ठीक उसी समय हमीद ने झुक कर कासिम के पेट पर टक्कर मारी और वह "अरे बाप रे" कह कर उस आदमी से जा टकराया जो खली हाथ था ।

कासिम की टक्कर थी इसलिये खाली हाथ नहीं गई - वह आदमी उछल कर दीवार से जा टकराया ।

यह सब इतनी जल्दी हुआ था कि टामी गन वाला बौखला गया । उसने सोचा था कि हमीद ने जिद के कारण कासिम पर वार किया था...और जब उसका साथी उछल कर दीवार से टकराया तो उसकी नजर उधर ही उठ गई थी ।

इस अवसर से लाभ उठा कर हमीद ने उसके टामी गन पर हाथ डाल दिया ।

उसी समय दरवाज़े की ओर से एक फायर हुआ और गोली उन दोनों के सरों पर से होती हुई सामने वाली दीवार से टकराई - साथ ही किसी ने कहा ।

“खबर्दार – कैप्टन हमीद – पीछे हटो – हट जाओ।”

तीसरा आदमी दरवाज़े में नजर आया। उसके हाथ में दश्मलव चार पांच का रिवाल्वर था।

हमीद गड बड़ा गया, क्योंकि उसी समय कासिम ने भी उसे झंझोड़ कर रख दिया।

“बताओ – मेरा कसूर बताओ – साले तुमने टक्कर कियुं मारी ?”

सारांश यह कि हमीद की चेष्टा निष्फल हो गई। उसे और रीमा को बाहर निकलना पड़ा। कासिम और सुमन इमारत ही में रह गये।

बाहर एक बड़ी सी बंद वान खड़ी थी।

तीनों में से एक उनके साथ बैठा और वान चल पड़ी! अंदर अंधेरा था।

“रीमा ?” हमीद बोला।

“हां।” रीमा ने उत्तर दिया।

“अगर उत्तर देना पसंद करो तो एक प्रश्न करूँ ?”

“कहो!”

“तुम्हें अपनी जन्म तिथि याद है ?”

“क्यों....इसकी क्यों आवश्यकता पड़ी ?”

“अंधेरे में तुम दिखाई नहीं दे रही हो।”

“मैं पूछ रही हूँ कि तुमने जन्म तिथि के बारे में क्यों पूछा ?” रीमा के स्वर में झल्लाहट थी।

“अरे...ती इसमें बिगड़ने की क्या बात है ?”

“यह लोग हमें कहाँ ले जा रहे है ?” रीमा ने पूछा।

“तुम दोनों मौन रहो तो अच्छा है।” अंधेरे में तीसरी आवाज गूंजी।

"यही मालूम करना था कि तुम मर गये या जिन्दा हो।" हमीद ने कहा।

"मैं कहता हूँ कि खामोश रहो।"

"अधिक देर तक चुप रहना मेरे लिये कठिन कार्य है - खोपड़ी में औरत का भेजा रखता हूँ।"

"क्या बात है ?"

"यह कह रहा है कि तुम दोनों शादी क्यों नहीं कर लेते।" हमीद ने कहा।

"ठीक तो कह रहा है।" रीमा ने झट से कहा।

हमीद ने ठंडी सांस ली और उर्दू में अपनी और उसकी शादी के बारे में विचार प्रकट करने लगा।

"क्या कह रहे हो ?" रीमा ने पूछा।

"तुम्हारे कान बज रहे होंगे.....मैं तो बहुत देर से खामोश हूँ।"

"कहीं इस मर्माघात से तुम्हारा दिमाग तो नहीं उलट गया।"

"मेरा दिमाग उलटने से क्या होता है - यह गाड़ी उल्टे तो एक बात भी हो।"

"शट अप।" तीसरी आवाज फिर गूंजी।

और ठीक उसी समय एक जबरदस्त धमाका हुआ - गाड़ी उछलने कूदने लगी - फिर उसके ब्रेक चड चडाये।

"क्या बात है ?" उनके निकट बैठे हुये आदमी ने ऊँची आवाज में पूछा।

"टायर ब्रस्ट हुआ है।" ड्राइवर की सीट से आवाज आई "सावधान हो जाओ।"

"क्यों ?"

"टायर यूँ ही ब्रस्ट नहीं हुआ है - किसी ने फायर किया था।"

गाड़ी तो रुक ही चुकी थी - इंजिन भी बंद कर दिया गया।

फिरर अचानक टामी गन अट्टहास लगाने लगी....मगर आवाज़ कुछ दूर की थी। शायद अगली सीट वालों ने गाड़ी से उतर कर कहीं और पोजीशन ले ली थी।

"यह क्या हो रहा है दोस्त ?" हमीद ने तीसरे आदमी को सम्बोधित किया जो उनके साथ ही पिछले भाग में बैठा था। अंधेरा होने के कारण वह हमीद को दिखाई नहीं दे रहा था।

मगर हमीद को उत्तर नहीं मिला।

"क्या सो गये दोस्त - यह क्या हो रहा है ?"

"धीरे बोलो।" रीमा की आवाज सुनाई दी मगर उस तीसरे की आवाज़ इस बार भी सुनाई नहीं दी।

हमीद का रिवाल्वर पहले ही छीना जा चुका था - और वह सोच रहा था कि उसके साथ बैठने वाला भी अवश्य सशस्त्र होगा....मगर अंधकार में वह किसी प्रकार का ख़तरा मोल लेने को तैयार नहीं था।

अब टामी गन की फायरिंग की आवाज भी बंद हो चुकी थी और गहरा सन्नाटा छा गया था।

थोड़ी देर बाद वान का पिछला दरवाज़ा खोला गया।

"चलो - नीचे उतरो।" तीसरे आदमी ने कहा और दोनों से पहले ख़ुद ही नीचे उतरा।

जब वह दोनों भी नीचे उतर गये तो एक आदमी बोला।

"कैप्टन हमीद। अगर तुमने तनिक भी चालाक बनने की कोशिश की तो तुम्हारा शरीर छलनी हो जायेगा - बाईं ओर मुड़ कर ढलान में उतर चलो।"

सर्दी से दांत बज रहे थे। रीमा से आगे चलने को कहा गया और उसने चुपचाप आज्ञा का पालन किया। हमीद उसके पीछे था।

ढलान से इस प्रकार उतरना खतरे से खली नहीं था, हमीद की नजर रीमा पर थी। अचानक वह चलते चलते रुक गया।

"आगे बढ़ो।" टामीगन की नाल उसकी कमर से लगा कर कहा गया।

"मैं उसका हाथ पकड़ लूं - कहीं गिर न जाये।" हमीद ने अपनी आवाज में गुर्राहट पैदा कर के कहा।

"तुम उसे सहारा दे सकते हो।" ऊँची आवाज़ में कहा गया, यह सबके पीछे चलने वाले की आवाज थी - और यह वही आदमी था जिसने इमारत में फायर करके हमीद को संघर्ष करने से रोका था, वह हमीद को कोई कबायली लगा था।

फिर उन्हें रुकने को कहा गया, यह दो चट्टानों के मध्य एक संकुचित स्थान था।

"तुम लोग आखिर चाहते क्या हो?" हमीद ने उन्हें सम्बोधित किया।

"कैप्टन हमीद.....मैं तुम्हें अपने अधिकार में रखना चाहता हूँ।" एक आदमी बोला "कर्नल विनोद ने मेरे एक साथी को पकड़ लिया है....जब तक वह मुझे वापस नहीं मिलेगा तब तक तुम्हें भी छोड़ा नहीं जा सकता।"

"यह तो हुई बदले की बात।" हमीद ने कहा, फिर रीमा की ओर संकेत कर के बोला "इस बेचारी को किस के बदले में रखोगे?"

"किसी के बदले नहीं....बस तुम्हारे साथ है, इसलिये तुम्हारे ही पास रहेगी।"

"क्या तुम इसे पहचानते हो?"

"हाँ - तुम्हारे ही साथ देखी जाती रही है।"

"यह निर्दोष है - कर्नल विनोद से इसका कोई संबंध नहीं है।"

"अच्छी बात है....तुम जहाँ कहोगे इसे वहाँ पहुँचा दिया जायेगा।"

"शुक्रिया...।" हमीद ने कहा "और मुझे कहाँ ले जाओगे?"

"आजाद इलाके में....मेरा साथी मुझे मिलना ही चाहिये।"

"ठीक है.....अवश्य मिलना चाहिये।" हमीद ने कहा, फिर पूछा "क्या तुम्हारा संबंध आजाद इलाके से है?"

"हाँ!"

"तुम्हारा कबीला कौन सा है?"

"यह नहीं बताऊंगा।"

"न बताओ....लेकिन यह तो बताना ही पड़ेगा कि क्या हमें यहीं रहना होगा?"

“नहीं.....मगर आप अब बातें बंद करो।”

“यह भी मंजूर ...मगर अपनी साथी से तो बात कर ही सकता हूं।”

“कर सकते हो ...मगर आवाज ऊँची नहीं होनी चाहिए।”

“फिर शुक्रिया --” हमीद ने कहा,फिर धीरे से रीमा से पूछा “तुम्हें नींद तो नहीं आ रही है?”

“नींद ---तुम्हारा तो नहीं चला गया ---” रीमा बोली।

“वह तो चलता ही रहता है ..चिंता न करो!” हमीद ने कहा।

“यह लोग क्या चाहते हैं ?” रीमा ने पूछा।

“यह कोई कबायली है और इसके किसी साथी को मेरे चीफ ने पकड़ रखा है।”

“फिर ?”

“जब तक इसका साथी इसे वापस नहीं मिलेगा तब तक यह मुझे अपनी कैद में रखेगा।”

“मुझे भी ?”

“यह तुम्हारी इच्छा पर है।”

“क्या मतलब ?”

“अगर तुम चाहो तो वापस जा सकती हो!”

“कहाँ ?”

“जहां कहोगी तुम्हें पहुंचा दिया जायेगा ..यह तो यही कह रहा था।”

“मगर मैं जाऊँगी कहां ?”

“सोचो!”

“मैं क्या सोचूं..मैं तो तुम्हारी दया पर हूं।”

“और मैं इसकी दया पर हूं।”

“तो क्या तुम्हारा चीफ इसके साथी को वापस कर देगा?”

“मैं क्या बता सकता हूं ...”

“क्यों ..क्या तुम्हारा चीफ तुम्हें बचाना नहीं चाहेगा ?”

हमीद कुछ कहने ही जा रहा था कि किसी ओर से आवाज आई।

---

part17

रीगम बाला - 17

(1) 1.9k 5k

(17)

"तुम सब लोग गोलियों के निशाने पर हो ..अपने हथियार जमीन पर डाल दो ..चारों ओर से घेरे जा चुके हो ."

कबायली के कराठ से गुर्राहट निकलने लगी।

आवाज फिर आयी।

"तुम सब की पोज़ीशन मेरी नज़रों में है ..जो अपने स्थान से हिला ..मारा गया।"

"तुम कौन हो और क्या चाहते हो ?" कबायली गुर्राया।

"सड़क की ओर मुंह करके खड़े हो जाओ .." आवाज आई।

"यह नहीं हो सकता ..जो चाहे करो"

"नहीं ..नहीं .." उस कबायली के दोनों साथियों की आवाज़ें सुनाई दी।"

"अरे चुप रहो ...नामर्दों .." कबायली दहाड़ा।

फिर हमीद ने तारों की छाँव में देखा कि वह कबायली पहले तो दुहरा हुआ ..फिर गठरी सी बन कर ऊपर उठाता चला गया। चीख रहा था ..दहाड़ रहा था और बड़ी बड़ी कसमें खाता हुआ नज़रों से ओझल हो गया।

"यह क्या हो रहा है ..किसकी आवाज है ?" रीमा ने अधीरता के साथ पूछा।

"पता नहीं" हमीद ने उत्तर दिया। हालांकि उसने विनोद की आवाज़ साफ़ पहचान ली थी।

फिर उसने कबायली के दोनों साथियों को उसी प्रकार ऊपर उठाते हुए देखा।

हमीद कुछ कहने ही वाला था कि आवाज़ फिर आई।

"कैप्टन हमीद - तुम जहां जाना चाहो जा सकते हो ?"

हमीद समझ गया कि विनोद उसे अपने साथ नहीं रखना चाहता वर्ना इस प्रकार का आदेश क्यों देता, मगर प्रश्न तो यह था कि वह जायें कहाँ ! ठंड के कारण दांत बाद रहे थे - मगर उसे रीमा पर आश्चर्य था कि आखिर वह इस प्रकार के कष्ट कैसे सहन कर रही है ।

"अब तुम क्या सोच रहे हो ?"

"दिमाग पर बर्फ जम रही है - सोचूंगा क्या ?" हमीद बोला।

"आखिर वह कौन था....आवाज किसकी थी ?"

"मैं नहीं जानता....लेकिन इसका विश्वास हो गया है कि मेरा चीफ मेरी ओर से गाफिल नहीं है - मेरे बारे में उसे सब कुछ मालूम होता रहता है - प्रकट है कि यह उसी का कोई आदमी रहा होगा।"

"उसका कोई आदमी था तो तुम्हें उसे जानना चाहिये।" रीमा ने कहा।

"आवश्यक नहीं है।"

"क्या मतलब ?"

"वह मेरा चीफ है - मैं हर वक्त उसके साथ रहता हूँ - लेकिन आज तक न जान सका कि वास्तव में वह है क्या - आदमी है - शैतान है - जादूगर है या कुछ और - फिर उससे संबंध रखने वाली दूसरी बातों को कैसे जान सकता हूँ।"

अचानक रीमा हंस पड़ी। हंसने का भाव खिल्ली उड़ाने वाला था।

"क्यों - तुम इस प्रकार क्यों हंस रही हो ?" हमीद ने पूछा।

"मैं यह सोच कर हँस पड़ी थी कि आखिर तुम कब मुझे विश्वास के योग्य समझोगे।"

"क्या मतलब ?" हमीद चौंका।

"कर्नल विनोद की आवाज हमें दिन में कई बार सुनाई जाती थी।" रीमा ने कहा और फिर हँसने लगी।

"ओहो।" हमीद ने कहा।

"यूं कि हमारा चीफ मेक अप का विशेषज्ञ है.....इसलिये उसकी आवाज के टेप हमारे पास है।"

"शायद तुम्हें यह नहीं मालूम कि मेरा चीफ आवाज बदलने का भी विशेषज्ञ है।"

"मगर इस समय तो उसकी आवाज़ बदली हुई नहीं थी।"

"आवश्यकता न समझी होगी।" हमीद ने लापरवाही से कहा।

"जो भी हो....मैं तो केवल यह चाहती हूँ कि तुम्हारा चीफ विमल के खतरे से अवगत हो जाये।"

"कैसा ख़तरा ?" हमीद चौंका।

"शायद मैं तुम्हें बता चुकी हूँ - लेकिन फिर से सुन लो।" रीमा ने कहा "तुम्हारा चीफ उसी की स्मरण शक्ति के सहारे हमारे स्थानीय केंद्र तक पहुँचने की कोशिश करेगा....लेकिन विमल उसे किसी अंधे कुंये में गिरा देगा - समझने की कोशिश करो - यह भी बता चुकी हूँ कि हम लोग मेडिकल सायन्स को बहुत आगे ले जा चुके है।"

"मगर मैं कर ही क्या सकता हूँ....जानता ही नहीं कि वह कहाँ मिल सकता है...दुसरे उस तक सूचना भेजने के लिये मेरे पास कोई साधन भी नहीं है।"

"तुम जानो.....मुझे क्या....मगर अब हम जायें कहाँ ?"

"मेरा विचार तो यह है कि रात यहीं व्यतीत की जाये।"

"तुम मुझे पागल कर दोगे।" वह भल्ला कर बोली।

"मेरे पास किसी को पागल कर देने वाला इंजेक्शन नहीं।" हमीद भी झल्ला गया।

"मैं सोचती हूँ कि अब जिन्दा रह कर क्या करूंगी - संस्था में मेरे लिये कोई स्थान नहीं रहा और तुम मुझे धोखे बाज समझते हो।"

अपनी बात समाप्त कर के वह उठी और तेजी से दराड़ से निकली चली गई। हमीद ने उसके पीछे झपटा था....लेकिन रीमा की चल बहुत तेज थी - बिलकुल ऐसा ही लगता था जैसे वह किसी ऊँची चट्टान से छलाँग लगा देने का इरादा रखती हो।

हमीद आवाज़ें देता हुआ उसके पीछे दौड़ रहा था।

काफ़ी दूर तक वह उसके पीछे दौड़ता रहा था और फिर ठीक उस समय जबकि वह एक जगह से नीचे छलांग लगाने जा रही थी.....उसने उसे जा लिया।

"छोड़ दो - मुझे छोड़ दो।" वह हाँफती हुई चीखने लगी "तुम सब हिंसक हो....नीच हो, किसी की वफ़ादारी, प्रेम और सहयोग का सम्मान नहीं कर सकते।"

"मैंने क्या किया है....ख़ुद ही प्रश्न करती हो और ख़ुद ही उत्तर दे देती हो, भ्रम में पड़ी रहती हो। मैं तो तुम्हारा बहुत सम्मान करता हूँ।"

"सम्मान....केवल सम्मान।"

"अच्छा....अब बैठ जाओ - तुम्हारी सांस फूल रही है।"

वह निढाल हो कर बैठ गई। बुरी प्रकार हांफ रही थी।

अचानक उन पर टार्च का प्रकाश पड़ा और किसी ने गरज कर कहा।

"सावधान! अपने स्थान से हिलना नहीं - वर्ना गोली मार दूँगा।"

"कोई और विपत्ति।" हमीद ने बडबडा कर अपने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये।

भारी क़दमों की आवाज निकट आती जा रही थी।

"यहाँ क्या हो रहा है?" आने वाले ने गरज कर पूछा और टार्च का प्रकाश फिर उनके चेहरे पर पड़ा।

हमीद ने ध्यान पूर्वक उस आदमी को देखा। वह पुलिस की वर्दी में था।

“जवाब दो।” आने वाला फिर गरजा।

“बैठे हुये है भाई।” हमीद कराह कर बोला।

“यहाँ....इतनी रात को।”

“प्राचीन इमारतों को देखने निकले थे.....घोड़े भाग गये।”

“तुम्हें मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलना होगा।”

“क्यों ?”

“वहीँ चल कर पूछना।”

“चलो.....मगर उस से पहले हमें घर जाना होगा।”

“क्यों ?”

“हम अपने कागजात ले लें वर्ना तुम्हारे आफिसर को संतुष्ट कैसे कर सकेंगे।”

“कहाँ से आये हो ?”

“रंगून से !”

“चलो.....मगर यह ख्याल रखना कि मैं सशस्त्र हूँ।”

“चलो भाई.....।” हमीद ने रीमा से कहा।

रीमा उठी और दोनों चलने लगे। पुलिस वाला उनके पीछे चल रहा था और टार्च के प्रकाश मर उन्हें माग दिखा रहा था।

फिर जब वह सड़क पर आये तो हमीद सोचने लगा किकहीं यह उसी ओर न ले जाये जहां एक बेकार वान खाड़ी मिलेगी। उसे पहले ध्यान ही नहीं आया था वर्ना घोड़ों के भाग जाने वाली बात न कह कर वह टायर के ब्रस्ट होने ही की बात करता।

मगर ऐसा हुआ नहीं। पुलिस वाला किसी दूसरी ओर ले आया यहाँ पुलिस की एक पेट्रोल कार नजर आई।

कार के निकट पहुंचे तो एक बार फिर उनके चेहरों पर टार्च का प्रकाश पडा। यह कर के अंदर से डाली गई थी।

"ओ हो" किसीकी आवाज आई "यह तो कैप्टन हमीद है।"

फिर अगली सीट का दरवाजा खुला और एक आदमी नीचे उतरा।

"आप यहाँ कहाँ श्रीमान ?" उसने पूछा।

"तुम कौन हो ?" हमीद ने पूछा।

"क्राइम ब्रांच का एक सब इन्स्पेक्टर ....!"

"अच्छा, तो सुनो ..." हमीद ने कहा " मुझे एडलफ़ी तक ले चलो, फी वहाँ से मैं तुम्हें उस स्थान पर ले जाऊँगा ...जहां ठहरा हूं।"

"अच्छी बात है, बैठिये .." उसने उनके लिये पिछली सीट का दरवाजा खोलते हुए कहा।

हमीद रीमा के साथ बैठ गया। वह उस सब इन्स्पेक्टर को पहचानता नहीं था फिर भी उसने उससे यह नहीं पूछा कि आखिर उसे कैसे पहचाना था कि वह कैप्टन हमीद है।

एडलफ़ी के निकट पहुंच कर उसने ड्राइवर को मार्ग बताना आरंभ किया और अन्त में उसी इमारत तक आया जहां से वह कबायली उन्हें ले गया था।

पुलिस वाले उन्हें उतार कर पल भर के लिये भी वहाँ नहीं ठहरे थे बरामदे में पहुंच कर हमीद ने काल वेल का बटन दबाया।

"काउन है .."दरवाजे की निकट ही से कासिम की आवाज आई। ऐसा लगा था जैसे वह पहले ही से वहाँ खडा रहा हो।

"दरवाजा खोलो .." हमीद ने कहा।

"काउन है ?" कासिम ने फिर पूछा।

"अबे लम्धाग ..आवाज भी नहीं पहचानता ..मैं हमीद हूं।"

बोल्ट गिरने की आवाज आई ..फिर दरवाजा खुला और कासिम पलकें झपकाता हुआ नजर आया।

“वापस आ गये ..” कासिम ने कहा।

“हर जगह से वापस आ जाना मेरी किस्मत में लिखा हुआ है .” हमीद ने कहा और उसे एक ओर हटाता हुआ आगे बढ़ने ही जा रहा था कि कासिम ने बौखलाए हुये स्वर में कहा।

“अमे ठहरो ..सुनो ..आगे नाही जाना।”

“क्यों ?”

“मैं तुमको अंदर नाही जाने ढूंगा ..”

“काहे ?” हमीद ने उसके स्वर की नकल की।

“मैंने उसे बंद कर दिया है ..”

“किसको ?”

“उसी भूतनी सुमन को .”

“तुम इतने डरपोक क्यों हो गये हो कासिम ...” हमीद ने कहा।

“मेरी बात समझने की कोशिश करो ...” कासिम ने आगे झुक कर धीरे से कहा “ सिरिफ भूतनी ही होती तो कोई बात नाही थी ..मगर अब वह पागल भी हो गई है”

“क्या मतलब ?” हमीद ने आंखें निकालीं।

“अपने कपडे चिद फाड़ डाले हैं ..”

“तो क्या ?”

“हां ..हां ..उसके जिस्म पर कपडे नाहीं है।”

“क्या बात है ...”रीमा आगे बढ़ कर बोली “ मुझे भी तो बताओ ?”

हमीद ने कासिम से मिली हुई सूचना दुहरा दी।

“ओह ..” रीमा ने लम्बी सांस खींच कर कहा “अगर उस पर पागल पन का दौरा पडा है तो समझ लो कि उस इंजेक्शन का प्रभाव समाप्त हो रहा है।”

“क्या मतलब ?” हमीद ने आश्चर्य से पूछा।

“जब दिल की धड़कन बंद हो जाने के बाद पागल पन का दौरा पड़े तो ..उसके बाद गहरी नींद आती है।”

“उसके बाद ?”

“पहले इससे पूछो कि इसने कितनी देर से उसकी आवाज़ नहीं सुनी।"

हमीद के पूछने पर कासिम ने बताया की आधा घंटा पहले तक वह अंदर चीखती रही थी, उसके बाद से उसने उसकी आवाज़ नहीं सुनी।

“अच्छा, तुम दोनों यहाँ ठहरो मैं अंदर जाकर देखती हूं .”रीमा ने कहा।

“अमे, रोको उसे नाही तो नोच खसोट डालेगी ..” कासिम ने हमीद से कहा।

“तुम चुप रहो ..” हमीद ने कहा।

“मुझे किया ...” कासिम ने कन्धे हिलाए और मुंह बना कर दूसरी ओर देखने लगा।

फिर रीमा दरवाज़ा खोल कर अंदर चली गई।

“तुम बहुत बदनसीब आदमी हो कासिम ...” हमीद ने कहा।

“ठेंगे से ..” झल्लाहट भरे स्वर में उत्तर मिला।

“लेकिन मेरी तक़दीर में क्यों हो ?” हमीद अपनी जांघ पर हाथ मार कर चीखा।

“किया मतलब ?”

“क्या जरुरी है कि जिन्दगी के हर मोड़ पर तुम शैतानों की तरह खड़े मिलो ?”

“तुम साले ख़ुद शैतान ..” कासिम चीखा “इस बार तुम साले मेरे ठेंगे के मोड़ पर खड़े हुए हो . किया मैं तुमको तुम्हारे घर से बुला लाया हूं।”

“जी नहीं जनाब, आप तो एक पागल औरत का सेक्रेटरा बन कर यहाँ तशरीफ़ लाये थे और अब जहन्नुम में तशरीफ़ ले जाइए --”

“मैं कहता हूं कि खामोश राहो नाही तो तोड़ मरोड़ क्र रख दूंगा।”

“अच्छा जनाब आली ..पागल ही के सेक्रेटरा ठहरे ..”

“मैं कहता हूं चुप हो जाओ ...” कासिम खडा हो कर दहाड़ा फिर अचानक मानसिक धारा बदल गई। चेहरे पर कोमलता छा गई और वह सब कुछ भूल कर धीरे से बोला “अमे यार ..वह इंजेक्शन के बारे में किया कह रही थी ?”

part18

रीगम बाला - 18

★★★☆☆ (3) 1.8k 4.3k

(18)

"मैं नहीं जानता ..उसकी अंग्रेजी मेरी समझ में नहीं आती।"

"अमे जियाओ .." कासिम हाथ नाचा कर बोला "उल्लू मत बनाओ।मैं सब समझता हूं।"

"चुप चाप समझते रहो बकवास की जरुरत नहीं है .."

कासिम बैठ कर उसे घूरने लगा।

कुछ देर बाद सीमा वापस आई। कुछ क्षण मौन खाड़ी रही फिर बोली।

"वह गहरी नींद सो रही है, इतनी गहरी नींद कि कपड़ा पहनाते समय भी नहीं जागी।"

"और अब मुझे भी नींद लग रही है ..सुबह के चार बज रहे है .." हमीद ने कहा।

"जाओ ...सो जाओ ..." रीमा ने प्यार भरे स्वर में कहा।

कासिम ने उसे आश्चर्य से देखा, फिर ठंडी सांस ले कर मुंह चलाने लगा।

"और तुम ...व रीमा ने कासिम से कहा "तुम भी सोना चाहो तो जा सकते हो।"

"और ...और ..तुम ?" कासिम ने पूछा।

"मेरी चिंता न करो ...मुझे तो जागना ही है"

"क्यूं..तुम्हें काहे जागना है ?"

"तुम सब की रक्षा करूंगी .."

"नाही नाही ..तुम भी जा कर सो जाओ ..हिफाजत करने के लिये मैं काफ़ी मोटा हूं..भूतों के अलावा किसी से भी नाही डरता .."कासिम ने अकड़ कर कहा, फिर ढीला होता हुआ बोला "मम.मगर...तुम लोग छुते कासे ..तुम दोनों को तो वह साले पकड़ ले गये थे?"

"तुम्हारा दोस्त बहुत बहादुर है" रीमा मुस्कुरा कर बोली।

कासिम ने बहुत ही बुरा सा मुंह बना कर हमीद की ओर देखा और हमीद को हंसी आ गई।

"हँस लो साले हँस लो" वह दांत पीस कर बोला "कभी अल्लाह भी मुझे हंसने का मौक़ा देगा।"

हमीद उठ कर कमरे में गया और लेट गया, फिर पंद्रह मिनिट के अंदर ही अंदर गहरी नींद सो गया।उसने इस बात की तनिक भी चिंता नहीं की कि रीमा जागती रहेगी।

फिर अगर झिंझोड़ झिंझोड़ कर न जगाया गया होता तो पता नहीं कब तक खर्राटे लेता रहता ..जगाने वाला कासिम था और दिन के दस बज रहे थे।

मगर कमरा तो वह नहीं था जिसमें वह पहली रात सोया था ..उसने आंखें खोल कर फिर बंद कर लीं।

"अमे - ए - होश करो।" कासिम ने फिर उसका कंधा झंझोड़ा "यह मकान वह नाहीं है जिसमे रात को हम एलपीजी सोये थे।"

"अगर नहीं है तब भी चुप रहो - मैं बहुत थक गया हूँ। ख़ुद से चल फिर नहीं सकता। यह तो उन लोगों का एहसास है कि ख़ुद ही हमें उठाये उठाये फिर रहे है।"

"अमें ए - बहुत न इतराओ बेटा.....तुम्हारी वाली कट्टो भी गायब है।" कासिम ने जले कटे लेह्जे में कहा।

"सब को जहन्नुम में झोंको - क्या वक्त हुआ है ?"

"दस।"

"नाश्ते की क्या रही !"

"भूख के बारे दम निकाला जा रहा है।"

"शायद इस बार कंजूसो से पाला पड़ा है।"

"मैं कहता हूँ - होश में आओ - आँखें खोलो - यह साला तहखाना मालूम होता है।"

"अगर कब्र भी हो तो मुझे परवाह नहीं हो सकती।"

"देखो दोस्त - डराने वाली बातें नाहीं करो।"

हमीद ने आँखें खोली - चारों और देखा, फिर कासिम की ओर गर्दन मोड़ी।

"अबे - राह.....कहीं हम भी तो मर मर कर जिन्दा नाहीं हो रहे है ?" कासिम ने अत्यंत भय पूर्ण स्वर में कहा।

"फ़िक्र न करो - मालूम हो जायेगा।"

यहाँ इस दोनों के अतिरिक्त और कोई नहीं था।

"अमे..काहे न फिकिर करूँ.....नाश्ता - खाना - अरे बाप रे - भूख लग रही है.....।" कासिम ने कहा और पेट पर हाथ फेरने लगा।

हमीद ने कुछ नहीं कहा। चुपचाप बिस्तर से उठा और ऐसी हरकतें आरंभ कर दीं जैसे व्यायाम कर रहा हो।

"यह किया कर रहे हो ?" कासिम ने पूछा।

"देख नहीं रहे हो - कसरत कर रहा हूँ।"

"अमे और भूख चमक उटेगी ?" कासिम ने कहा।

"तुम अपनी जबान बंद कर रखो।"

"काहे ?"

“बस मैं कह रहा हूँ।”

“अमे काहे बोर कर रहे हो!”

“बोर तो यह साले मुझे कर रहे है।”

“यह कासे?”

“आखिर तुम्हें अलग क्यों नहीं बाँधा?”

“देखो देखो ऐसी बातेब न करो हमीद भाई....।” कासिम गिड़गिडा उठा “हम लोगों में कोई झगड़ा तो हुआ नाहीं....वालेकुल नाहीं हुआ – फिर ऐसी बात कियुं कह रहे हो।”

अचानक कुछ आहट सुनाई पड़ी और दोनों चौंक पडे – फिर सीढ़ियों की ओर देखने लगे, क्योंकि आवाज उसी ओर से आ रही थी।

फिर उन्हें रीमा दिखाई दी जो सीढ़ियों तै करती हुई नीचे आ रही थी।

“तुम दोनों जाग पड़े?” उसने निकट पहुँच कर पूछा।

“पहले यह बताओ कि अब हम कहाँ है?” हमीद ने बुरा सा मुँह बना कर प्रश्न किया।

“थोड़ी देर को पलक झपकी थी – फिर पता नहीं क्या हुआ।” रीमा ने कहा।

“अब तक तुम कहाँ थे?”

“ऊपर के कमरें में – तहखाने का दरवाज़ा खुला था....इधर आ निकली।”

“मगर यह है कौन सी जगह?”

“यह वही इमारत है जहाँ से हम हेकी काप्टर लेकर भाग निकले थे।”

“तब तो ठीक है....तुम इस इमारत के बारे में सब कुछ जानती हो – मगर क्या इस बार वह लोग हमें भूखा ही मारेंगे।”

“नहीं तो....।” रीमा हँस पड़ी।

“मैंने तुमसे कहा था ना कि जब मेरे पेट खली रहता है तो सुंदर से सुंदर औरतों की भी हँसी मुझे जहर लगती है।” हमीद भन्ना कर बोला।

“गुस्से में और प्यारे लगने लगते हो...।” रीमा फिर हँस पड़ी।

हमीद कुछ नहीं बोला। मुँह घुमा कर दूसरी ओर देखने लगा।

रीमा बढ़ी। उसके चेहरे के सामने पहुँच कर दोनों हाथों से उसकी ठुड्डी पकड़ कर चेहरा ऊपर उठाया। कुछ क्षण तक उसकी आँखों में देखती रही बोली।

“सुनो - मेज पर बहुत अधिक नाश्ता का समान देख कर ही मैंने अनुमान लगाया था कि तुम लोग कहीं आस ही पास हो।”

“शुक्र है अल्लाह मियाँ....।” कासिम बीच में नारा लगा बैठा।

“वह लड़की कहाँ है.....सुमन.....?” रीमा ने हमीद से पूछा।

“आप बस मेज पर नाश्ता के सामान की बातें करें....किया किया है ?” कासिम मुँह चला कर बोला।

रीमा भल्ला कर कासिम की ओर मुड़ी। कुछ क्षण तक उसे घूरती रही, फिर तेज आवाज में बोली।

“मैं पूछ रही हूँ कि वह लड़की सुमन कहाँ है ?”

“होगी कही...मुझसे किया मतलब मैं उसकी नौकरी छोड़ चुका हूँ।” कासिम ने कहा “वह मेज कहाँ है...मुझे यहाँ तक ले चलो...बहुत भूख लग रही है।”

“इस आदमी से कहो कि चुप रहे....।” रीमा ने हमीद से कहा।

कासिम शायद समझ गया। उसने ख़ुद ही मुँह दूसरी ओर फेर लिया। कुछ बडबडा भी रहा था, मगर आवाज नहीं निकल रही थी।

“वह लड़की ?” रीमा ने फिर हमीद से पूछा।

“पता नहीं - जब हमें होश आया तो वहाँ हम हो दोनों थे।” हमीद बोला।

“हूँ - अच्छा - ऊपर चलो।”

वह सीढ़ियाँ तै करके उस कमरे में दाखिल हुये जहाँ एक बड़ी सी मेज पर नाश्ते का सामान चुना हुआ था।

"इससे कहो कि खाये।" रीमा ने हमीद से कहा।

हमीद ने मुड़ कर कासिम से कहना चाहा, मगर मुँह से आवाज़ निकलने के बदले होठों पर मुस्कुराहट नाच उठी क्योंकि कासिम नाश्ते पर टूट पड़ा था।

फिर वह दोनों भी नाश्ता करने लगे। बीच बीच में इधर उधर की बातें भी हो रही थी।

नाश्ता करने के बाद हमीद ने रीमा से कहा।

"समझ में नहीं आता कि उन लोगों की स्कीम क्या है - कभी आजाद छोड़ देते हैं और कभी जकड़ लेटे हैं आखिर चाहते क्या है।"

"सब तुम्हारे चीफ को फांसने के उपाय हैं ..कभी तो ऐसी स्थिति में पीछा करेगा और पकड़ा जाएगा।"

हमीद खिलखिला कर हँस पड़ा और हँसता ही चला गया, क्रम टूटा -रीमा के टोकने पर।"

"इस हँसी का कारण ?" रीमा ने पूछा।

"उन लोगों के बचपना पर हँसी आ गई थी ..." हमीद ने कहा।

"क्या मतलब ?"

"ऐसे खेल हम लोग अनेकों बार खेल चुके हैं ..इस प्रकार उस पर हाथ नहीं डाला जा सकता।"

"तो फिर उठो ..यहाँ से निकल चलने का उपाय करें" रीमा ने कहा।

"तुम ही करो कोई उपाय ..." हमीद ने लापरवाही से कहा "मैं इस समय पाईप पीने के मुड़ में हूं।"

अचानक दो आदमी कमरे में दाखिल हुए। दोनों के हाथों में दश्मलव चार पाँच के भारी भरकम रिवाल्वर थे।

"हमारे साथ चलो" एक ने कहा।

“फौरन ?” हमीद ने हँसी उड़ाने वाले भाव में कहा।

“हां ...अभी...?”

“मगर मैं पाइप पीना चाहता हूं।”

“उठो ..” वह पैर पटक कर बोला।

“बात न बढाओ कैप्टन ..” हमीद से रीमा ने धीरे से कहा “इन पर यहीं प्रकट करो कि तुम एक चूहे से भी गये गुजरे हो।”

“तुम कहती हो तो चूहा बना जाता हूं ..” हमीद ने कहा “उठो भाई,पहाड़ खां ..अब खाया पीया निकलेगा।”

“ठेंगे से ...” कासिम भन्ना कर बोला “मैं मर्दों से नाही डरता।”

फिर वह सब बाही निकले। सशस्त आदमी उनके पीछे चल रहे थे, यह भी कबायली ही थे।

फिर एक बड़े कमरे में पाँव रखते ही हमीद बौखला गया और कासिम चीख पडा।

“अरे बाप रे...!”

विनोद सामने कुर्सी पर जकड़ा नजर आया। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। नेत्रों में ऐसी जड़ता थी जो मौत को निश्चित समझ कर बेबसी के रूप में पूरे अस्तित्व पर छा जाती है।

उसकी कुर्सी के पास ही एक लगडा सा विदेशी खडा था जिसके चेहरे पर चमड़े की जैकेट थी और हाथों में चमड़े के दस्ताने थे।

अचानक उसने विनोद को सम्बोधित किया।

“अब तुम्हें मुंह खोलना ही पडेगा कर्नल विनोद। देखो ...तुम्हारा असिस्टेंट भी आ गया है जिसे तुम भाई के समान प्यार करते हो।”

विनोद पर उसकी बात का कोई प्रभाव नहीं पडा। पहले ही के समान शैथिल्य छाया रहा।

“अगर तुमने नातुना का पता नहीं बताया तो तुम्हारा असिस्टेंट तुम्हारी आंखों के सामने ख़त्म कर डिया जाएगा।” विदेशी फिर दहाड़ा।

विनोद की दशा अब भी नहीं बदली।

“यह कौन है ?” हमीद ने धीरे से रीमा से पूछा।

“लेकरास ...” रीमा ने उत्तर दिया।

“त त तुम तो कह रही थी कि वह औरत है ...” हमीद ने कहा और रीमा खिल खिला कर हँस पड़ी। हँसती रही, फिर बोली।

“मुर्ख आदमी के भोले असिस्टेंट ...तीसरी नागिन मैं ख़ुद हूं, जीरो लैंड की तीसरी बड़ी औरत ...”

हमीद उसे विचित्र निगाहों से देखने लगा।

“लेकरास ?” रीमा ने आवाज दी।

“येस मादाम ...” लेकरास कुछ झुक कर बोला।

“कैप्टन हमीद तुम्हें औरत समझता है।”

“मैं क्या कह सकता हूं मादाम ...”

“विमल की बुलवाओ ?” रीमा ने कहा।

“बहुत अच्छा ...” लेकरास ने कह कर एक आदमी को संकेत किया और वह चला गया।

रीमा इतनी देर में हमीद और कासिम के पास से हट कर कमरे के बीच में आ खाड़ी हुई थी।

“तो क्या सचमुच तुम औरत नहीं हो ?’ हमीद ने लेकरास से पूछा।

“शट अप ...” लेकरास गरजा।

“नहीं लेकरास ...इससे इस प्रकार का व्यवहार न करो ..यह मेरा शिकार है” रीमा ने कहा।

“बहुत बहुत शुक्रिया मादाम ...” हमीद ने जहरीले स्वर में कहा।

“तुम मुझे रीमा ही कह सकते हो कैप्टन ...व रीमा ने मुस्कुरा कर कहा।

“एक बार फिर शुक्रिया मादाम ..”

“अबे अब किया होगा ..कर्नल साहब तो बंधे पड़े हैं ...व कार्सी धीरे से बडबडाया “तुम साले हमेशा औरतों के चक्कर में मारे जाते हो ..कल तक साली भीगी बिल्ली बनी हुई थी और अब मदाम हो गई है ..”

इतने में हमीद ने विमल को कमरे में दाखिल होते हुए देखा। रीमा गर्दन मोड़ कर उसी की ओर देखने लगी।

फिर जैसे ही विमल की नजर रीमा पर पड़ी . जहां था वहीँ रुक गया। पलकें झपकाये बिना उसे घूरता रहा फिर घुटनों के बल इस प्रकार बैठ गया जैसे किसी देवी की पूजा कर रहा हो।

“विमल !” अचानक रीमा की अवा गूंजी “तुम अभी मुझे नहीं पा सकते ..उधर देखो वह आदमी जो कुर्सी से जकड़ा हुआ है ..क्या तुम उसे पहचानते हो ?”

विमल ने मुड़ कर विनोद की ओर देखा..फिर हमीद ने उसकी आंखों में गहरी घृणा देखी। फिर वह उठ गया और घृणा के स्वर में बोला।स”हां ..मैं इसे जानता हूं ...यह कर्नल विनोद है।”

part19

रीगम बाला - 19

(5) 1.9k 4.6k

(19)

“मेरी बहन इसकी कैद में है ..मगर इसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता की वह कहाँ कैद है,,” रीमा ने रुक रुक कर कहा “मैं चाहती हूं कि तुम इससे मालुम करो ..यह लो कटार ..।”

उसने आगे बढ़ कर एक चमचमाती हुई कटार उसके हाथों में थमा दी और बोली।

“इसके शरीर में चुभो चुभो कर पूछो कि नातुना कहाँ है ..यह मुंह खोलने पर विवश हो जाएगा।”

हमीद ने बौखला कर विनोद की ओर देखा, मगर अब भी उसके चेहरे पर किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं था,,उसी प्रकार की जड़ता छाई थी ..ऐसा लग रहा था जैसे सोचने और समझने की शक्ति से वंचित हो।

“यह नहीं हो सकता ..” अचानक वह विमल की ओर झपटा, मगर उसके पीछे खड़े हुए कबालियों ने उसे पकड़ लिया और फिर वह चीखता ही चला गया।

“कासिम ...बेशर्म ..तुन खड़े देख रहे हो ...डूब मरो चुल्लू भर पानी में ...अगर ऐसा हुआ तो ..ऐसा हुआ तो ..”

उसकी आवाज कंठ में डूब कर रह गई।

“इसे भी कुर्सी से जकड़ दो ...” रीमा बोली।

“यह नाही हो सकता ..” अचानक कासिम गुर्रा कर आगे बाधा, मगर यह नहीं देख सका कि लेकरास की टांग भी चली है ..वह लडखडा कर मुंह के बल फर्श पर आ रहा।

लेकरास ने बड़ी फुर्ती से झुक कर कोई वस्तु उसके मुंह पर मल दी और वह “अरे,अरे” कहाता हुआ शिथिल पड़ गया।

दूसरी ओर हमीद उन दोनों कबालियों से गुथा हुआ था। अन्त में वह हमीद को बेबस करके कुर्सी से जकड़ने लगे। मगर इसमें भी उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पडा।

रीमा और लेकरास दोनों ही बड़ी दिलचश्पी से यह द्रश्य देखते रहे थे।

जब हमीद भी कुर्सी से जकड़ लिया गया तो वह विनोद को ललकारने लगा।

“कहाँ गई वह शक्ति जो पत्थर को टुकडे टुकडे कर दिया करती थी ..कहाँ गया स्वाभिमान ..जिसने लोहे की मोटी सलाखों को भी कभी कभी पतले तारों के समान मोड़ दिया था होश में आइए ... आपको क्या हो गया है ..वह जो अकेला सैंकड़ों पर भारी पड़ता रहा वह इस प्रकार बेबस हो जाये ...लानत है।”

मगर सब बेकार ..वह चीख कर निढाल हो गया मगर विनोद की दशा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

रीमा और लेकरास इस मध्य अट्टहास लगाते रहे।

“विमल !” रीमा बोली “चलो अपना काम आरंभ करो।”

हमीद ने विवशता से कासिम की ओर देखा जो अब भी फर्श पर बेहोश पडा हुआ था।

विमल विनोद की ओर बढ़ा और उसकी भुजा में कटार की नोंक चुभो कर पूछा।

“बताओ नातुना कहाँ है ?”

विनोद की काक से विचित्र आवाज निकाली और हमीद ने आंखें बंद कर लीं।

फिर विमल पर जैसे दौरा सा पड़ गया था। वह बड़ी तेजी से विनोद के शरीर के विभिन्न अंगों में कटार की नोंक घंसा घंसा कर अपना प्रश्न दुहराए जा रहा था।

“ठहरो ..ठहरो ..” लेकरास ने हाथ उठा कर कहा मागे विमल का हाथ नहीं रुका।

“इसे रोकिये मादाम कहीं विनोद मर ही न जाये” लेकरास ने रीमा से कहा।

फिर रीमा के कहने पर विमल ने हाथ रोक लिया और रीमा की ओर मुड़ा।

“इसे जरा दम लेने दो ..” रीमा ने उससे कहा “कुछ देर बाद जब यह जख्म इसको तडपाना आरंभ करेंगे तो ख़ुद ही मुंह खोलेगा।”

विनोद के होंठ मींचे हुये थे और नाक से कराहें निकल रहीं थीं। हमीद ने आंखें नहीं खोलीं।

फिर लेकरास ने उस आदमी को संकेत किया जो विमल को यहाँ लाया था। वह विमल को वापस ले जाने के लिये आगे बढ़ा और रीमा ने विमल से कहा।

"अब तुम मुझसे प्रति दिन्मिल सकोगे, जा कर आराम करो।"

विमल किसी आज्ञाकारी दास के से भाव में चलता हुआ कमरे से निकल गया।

अब कमरे में दो सशस्त्र कबायली ही रह गये थे।

"बड़े कायर हो कैप्टन हमीद ..आंखें खोलो" रीमा ने चुटकी ली।

"मैं कायर नहीं हूं .." हमीद चीख पडा "इस आदमी की बेबसी मुझसे नहीं देखी जाती।मैं द्दावे के साथ जह सकता हूं कि इस पर तुम्हारी मेडिकल सायन्स ने कोई जुल्म धाया है वर्ना अब तक उस कुर्सी की लकडियाँ टुकडे टुकडे हो कर इस कमरे में बिखर गई होती, किससे तुमने उसे जकड़ रखा है।"

"तुम ठीक कह रहे हो कैप्टन .." लेकरास हँसकर बोला" इसकी समस्त शक्तियां जवाब दे चुकीं हैं और अब हम इसे बोलने पर विवश कर देंगे,तुम शौक से अपनी आंखें बंद रखो।"

हमीद कुछ नहीं बोला। वातावरण पर विचित्र सा सन्नाटा छा गया था। हमीद को ऐसा महसूस हो रहा था जैसे दिल खोपसी में धड़क रहा हो।

"अब मेरी कहानी सुनिये मदाम .." उसने लेकरास की आवा सुनी।

"हां ..मैं सोच रही थी कि यह कहानी कैप्टन हमीद ही के सामने सुनी जाये ताकि उस पर उसके चीफ की और दूसरी महानता भी प्रकट हो सके।"

"आपने बड़ी सुंदर बात कही है मादाम .." लेकरास हँस कर बोला "इसे इसका अवसर अवश्य मिलना चाहिये इस बेचारे ने भी बड़े दुख उठाये हैं. तो मदाम ! जब यह साबित हो गया कि लेकरास औरत नहीं है तो फिर मुझे आपकी याद आई और मुझे विश्वास हो गया कि तीसरी नागिन अप ही हैं।"

"तुमने यह क्या बकवास आरंभ कर दी .." रीमा ने तेज आवाज़ में कहा।

"मैंने बात का ढंग बदल डिया है मादाम ..अभी असली बात की ओर आता हूं ..जरा ठहरिये।"

हमीद ने बौखला कर आंखें खोल दी,क्योंकि यह तो लेकरास की आवाज नहीं थी ..उसने रीमा को भी चोंकते हुये देखा! लेकरास हँस रहा था।

और प्रहतम इसके कि रीमा अपने स्थान से हिलती लेकरास ने उसके बाल मुट्ठी में पकडे और हाथ उंचा कर दिया। वह उसी प्रकार लटकी हुई हाथ पैर मारती रही।

फिर उसने अपने हाथ को घुमाना आरंभ कर दिया और रीमा गला फाड़ कर चीखने लगी।

दोनों कबायली हँस रहे थे।

"देखो ...देखो" हमीद न रुकने वाले अटटहासों के बीच कहता रहा "देखो ..यह मेरा चीफ ..देख लो इसकी महानता ..हा हां हां और यह ज़ख्मी बुद्धू ..निश्चय ही लेकरास होगा।हां हां हां यह है मेरा चीफ कर्नल विनोद ..हा हां हां।"

फिर रीमा के बाल छोड़ दिये गये और वह चकरा कर गिरी।

फिर वह दोनों सशस्त्र कबायली आगे बढ़े और उन्हों ने रीमा के हाथ उसकी पीठ पर बांध दिये।

"कैप्टन हमीद!" रीमा बोली "तुम वह पहले आदमी हो जिसे मैंने चाहा है।"

"चाहती रहो ..मैं मना नहीं करता .." हमीद ने कहा।

अब कबायली उसे कुर्सी से खेल रहे थे।

मुक्ति पाने के बाद हमीद कासिम के निकट पहुंचा।

"इसे अभी लेटा रहने दो हमीद" विनोद ने कहा और रीमा की ओर देख कर बोला "अभी तुमने जीरो लैंड की मेडिकल सायन्स के बारे में कुछ कहा था।"

रीमा कुछ नहीं बोली -विनोद ने फिर कहा।

"अगर मेरे अतिरिक्त और कोई भी कासिम को होश में ला सके तो मैं वचन देता हूं कि लेकरस की जबान खोल दूंगा ---"

"तो क्या वह सचमुच लेकरास है ?" हमीद ने विनोद के हमशक्ल की ओर हाथ उठा कर पूछा।

“हां ..यह वही औरत है ...और यह सच है कि इस पर हाथ डालने के बाद ही अनुमान हो सका था कि इस टीम की अध्यक्षता कौन कर रहा है।”

“कैप्टन हमीद ...मैंने सचमुच तुम्हें चाहा है ..व रीमा फिर बोली। उसके चेहरे पर भय के तनिक भी लक्षण नहीं थे। चेहरा खिला हुआ था। यह मालुम ही नहीं हो रहा था कि थोड़ी देर पहले वह किसी कष्ट में रही थी ...यातना भुगत रही थी।

“मैं अच्छी तरह जानती हूं कि अब आसपास मेरा कोई आदमी आज़ाद न होगा। मैं लेकरास को इतना मूर्ख नहीं समझती थी।”

“लेकिन मुझे तुम अवश्य मूर्ख समझती रही थी .” विनोद हँस कर बोला “मगर तुम तो नातुना का शतम भाग भी साबित न हो सकीं।”

“लेकिन यह सच है कि अब इस संस्था से दिल भर गया है ..” रीमा ने कहा, फिर मुस्कुरा कर बोली “तुम्हारी कैद में रहना वहीँ अच्छा रहेगा।”

“और कुछ ?” हमीद बोल उठा।

“यह भी चाहूंगी कि तुम दोनों मेरी इस बात पर भी विश्वास कर लो कि उन्हों ने मेरे पंगुल बाप को मार डाला था।”

“मुझे विश्वास है।” हमीद ने कहा।

“और कुछ ?” विनोद ने पूछा।

“मैं ज़िंदा रहना चाहती हूं ..” रीमा ने कहा।

“नातुना भी ज़िंदा है ...” विनोद बोला।

“बस ...अब और कुछ न कहूंगी।”

“आखिर वह कब तक इसी प्रकार पडा रहेगा ?” हमीद ने कासिम की ओर संकेत करके पूछा।

“घबड़ाने की कोई बात नहीं है ..जब चाहूँगा ..इसे होश आ जायेगा...” विनोद ने कहा।

“लेकिन ...मैं अभी चाहता हूं ...” हमीद ने कहा “दिल खोल कर हंसना चाहता हूं ..और यह उसी समय हो सकता है जब कासिम साथ में हो ..”

“अच्छी बात है ...इसे यहाँ से ले जाओ ...” विनोद ने रीमा की ओर संकेत कर के कहा।

“क्यों ?” हमीद ने पूछा।

“मैं नहीं चाहता की यह तीसरी नागिन देख सके कि मैं किस विधि से इसे होश में लाता हूं..।”

“और यह ?” हमीद ने लेकरास कि ओर संकेत किया।

“यह ?” विनोद हँसा “यह बुद्धू है ..इसकी चिंता न करो।”

“चलिए मादाम ?” हमीद ने परिहास जनक स्वर में रीमा से कहा।

“मेरी हँसी उड़ा सकते हो कैप्टन मगर मेरे प्यार की नहीं, चलो ...” रीमा ने कहा और दरवाजे की ओर बढ़ गई।

उसी दिन लगभग तीन बजे हमीद ने विनोद को विचित्र दशा में देखा।

विनोद लेकरस ही के मेकअप में था और एक उद्दंड घोड़े पर सवार था।घोड़ा इस प्रकार उछल रहा था और बार बार अलफ हो रहा था जैसे अपनी पीठ से गिरा कर रौंद डालना चाहता हो!

थोड़ी देर बाद वह घोड़े से नीचे उतर गया और अपने आदमियों से कहा।

“इसकी जिन उतार डालो”

आदमियों ने उस घोड़े की जिन उतार ली। पास ही में दो घोड़े और थे, मगर उनकी जिने नहीं उतारी गईं।

“क्या प्रोग्राम है ?” हमीद ने पूछा।

“कुछ देर हम घोड़ों की सवारी करेंगे ...” विनोद ने कहा।

“हमसे क्या मतलब ?” हमीद ने पूछा।

“मैं ..तुम और बिमल।”

“यह घोड़ा किस के लिये है ?” हमीद ने उस घोड़े की ओर संकेत किया जिस पर से जिन उतारी गई थी।

“|बिमल के लिये ?”

“बिमल के लिये ?” हमीद ने आश्चर्य से दुहराया।

“हां ..”

“यह तो बहुत सरकश मालुम होता है .. क्या विमल की हड्डियां तुडवाना चाहते हैं आप !”

“नहीं हमीद ...यह तुम्हारा भ्रम है ..” विनोद ने मुस्कुरा कर कहा। “बिमल इस पर बैठ कर वह वह करतब दिखाएगा कि तुम दांग रह जाओगे।”

“मगर आपके इस पर से जिन क्यों उतरवा दी ?”

“अभी लगाम भी निकलवा दूंगा ...” विनोद मुस्कुराया।

“अब मैं पागल हो जाउंगा।”

“क्यों ?”

“घोड़ा सरकश ..लगाम भी नहीं और जिन भी नहीं.. सवारी करेगा बिमल जैसा पागल आदमी ..आखिर आप करना चाहते है ...”

“बस देखते रहो !”

“और हम लोग ?” हमीद ने पूछा।

“हम लोग भी अपने अपने घोड़ों पर उसके साथ ही रहेंगे।”

“मेरा घोड़ा कौन सा है ..जरा मैं उसे पहले ही से देख लूं।”

“चिंता न करो ..तुम्हारा घोड़ा तुम्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाएगा।”

“आखिर कुछ तो बताइये ?” हमीद झल्ला गया।

“मेरी वास्तविक समस्या बिमल था।”

“क्या मतलब !”

“फिर बताऊंगा ..” विनोद ने कहा, फिर अपने आदमियों से कहा “ विमल को लाओ।”

तीन आदमी वहां से चले गये।

थोड़ी देर बाद वह विमल को पकडे हुए वापस आये।

“इस घोड़े पर बैठा दो ...”

---

part20

रीगम बाला - 20 - अंतिम भाग

★★★★★ (8) 2k 7.3k

(20)

अंतिम भाग

विमल चीखता चिल्लाता ही रह गया, मगर उसे उसी सरकश घोड़े की पीठ पर बैठा दिया गया।

"यह क्या हो रहा है .यह क्या हो रहा है ..." वह पागलों के समान चीख रहा था।

मगर उसकी चीख पुकार पर किसी ने कुछ ध्यान नहीं दिया, फिर विमल के दोनों हाथ घोड़े की गर्दन से बांध दिये गये। इसमें बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा था, अगर ख़ुद विनोद ने भी उन आदमियों का हाथ न बटाया होता तो शायद यह काम पूरा न हो सकता ..।

फिर विनोद ने एक घोड़े पर हमीद को बैठने का संकेत किया और दुसरे घोड़े पर ख़ुद बैठा।

जब हमीद भी बैठ गया तो विनोद ने उससे कहा।

"सावधान रहना ..?"

इतने में एक आदमी ने विमल के घोड़े की पिछली टांगों पर एक डंडा जमा दिया।

अब जो घोड़ा भागा है तो विमल की चीखों के अतिरिक्त और कुछ सुनाई नहीं दे रहा था।

उसके पीछे विनोद और हमीद के घोड़े थे!

विमल का घोड़ा वीरान किले की ओर भागा जा रहा था, यहाँ से वीरान किले तक की धरती समतल थी।

विनोद और हमीद के घोड़े भी अपनी पूरी शक्ति और गति से दौड़ रहे थे, मगर विमल के घोड़े से आगे नहीं निकल सके।

हमीद की समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है, बार बार ऐसा लग रहा था जैसे विमल अपने घोड़े की गर्दन में झूलता घसीटता चला जाएगा ...लेकिन वह अपनी चीखों के साथ ही साथ इस बात की भी कोशिश करता रहा था कि घोड़े की पीठ ही पर जमा रहे।

उधर हमीद सोच रहा था कि आखिर यह सरकश घोड़ा अब हाथ कैसे आयेगा। कहीं किसी चट्टान की ओर न मुड़ जाये और अपने सवार सहित लय हो जाये।

मगर वीरान किले के निकट पहुंच कर उसने विमल के घोड़े को रुकते हुए देखा और जब ख़ुद उसका घोडा उसके निकट पहुंचा तब उसे पता चला कि ..विमल का घोडा सवार सहित एक बहुत बड़े जाल में फँस चुका है ...न आगे बढ़ सकता है और न पीछे लौट सकता है।

कुछ लोग जो वहाँ पहले ही से मौजूद थे ..आगे बढ़ कर विमल को घोड़े से उतारने लगे। वह उखड़ी उखड़ी साँसें ले रहा था और आंखें बंद थीं।

उसे उतार कर एक जगह लिटा दिया गया ...और विनोद उस पर झुक पड़ा।

लगभग एक घंटा बाद वह फिर उसी इमारत में वापस आये जहां रीमा कैद थी, विमल भी उनके साथ था। उसकी दशा अच्छी थी...और मानसिक स्थिति के विचार से नार्मल नजर आ रहा था।

फिर उसे रीमा के पास ले जाया गया, हमीद और विनोद भी उसके साथ थे।

रीमा के सामने पहुंच कर उसने उस पर ऐसे ही भाव में नजर डाली थी ..जैसे पहली बार देखा हो?

विनोद ने रीमा को सम्बोधित करके कहा।

“तुमने कैप्टन हमीद से यह कहा था ना कि विमल जीवन भर अपनी असली मानसिक स्थिति पर वापस न आ सकेगा ?”

“हां ...कहा तो था .” रीमा ने लापरवाही से कहा।

“अब जरा विमल की ओर देखो !”

“क्यों ?” रीमा बोली।

“देख कर बताओ कि इसमें तुम्हें कोई परिवर्तन नजर आ रहा है या नहीं ?”

रीमा ने चोंक कर विमल की ओर देखा .. कुछ क्षण तक देखती रही, फिर उसकी आंखों में चिंता के लक्षण नजर आने लगे।

“तुम इसे पहचानते हो ?” विनोद ने रीमा की ओर हाथ उठाते हुए विमल से पूछा।

“नहीं तो ...यह कौन है ?” विमल ने पलकें झपकाते हुये पूछा।

“मैं कौन हूं ?” विनोद ने पूछा।

“आप कर्नल विनोद हैं” विमल ने उत्तर दिया।

“और यह ?” विनोद हमीद की ओर संकेत कर के पूछा।

“यह आपके असिस्टेंट कैप्टन हमीद है।”

“मेरी एक बात मानोगे”

“मानने का क्या सवाल ..आपके लिये तो जान भी दे सकता हूं... आज्ञा दीजिये।”

“इस लड़की को एक थप्पड़ मारो।”

विमल आगे बाधा और रीमा के गाल पर इतने जोर का थप्पड़ मरा कि पूरा कमरा थप्पड़ की आवाज से गूंज उठा।

रीमा लड़खडा कर गिरी थी।

फिर उठी और भूखी शेरनी के समान विनोद पर टूट पड़ी।

“मुझे निष्पक्ष समझना ..” हमीद ने रूखे स्वर में कहा।

फिर विमल ही ने उसे पकड़ कर विनोद से अलग किया और बिस्तर पर ढकेलते हुये कहा।

“चुपचाप पड़ी रहना ..मेरी प्रकृति में दया नहीं है ..समझी।”

“तुमने देख लिया ..” विनोद ने रीमा से कहा।

मगर रीमा कुछ नहीं बोली मौन व्रत उसे घूरती रही।

“सुनो ..मैं बताता हूं ..” विनोद ने कहा। “किसी प्रकार की भी ब्रेन वाशिंग हो ..उसके शिकार को मेरे पास लाओ ..एक सप्ताह में उसे ठीक कर दूंगा. यह तो रही एक साधारण बात, अब विमल के बारे में सुनो ..विमल की ब्रेन वाशिंग में स्नायविक उत्पीडन भी सम्मिलित था अतः मैंने उसे मृत्यु के भय में ग्रस्त कर के केवल आधे घंटे के अंदर ठीक कर लिया ..तुमने मेरी कार्य प्रणाली इस खिड़की से देखी ही होगी।”

रीमा ने कुछ नहीं कहा और विनोद दरवाजे की ओर मुड़ गया, विमल और हमीद भी उसके पीछे पीछे दरवाजे से बाहर निकले थे।

“अब तुम जा कर आराम करो” विनोद ने विमल से कहा।

“धन्यवाद ..” विमल ने कहा और एक ओर मुड़ गया।

“क्या विमल को याद है कि आपने उसे एक सरकश घोड़े पर सवार कराया था?” हमीद ने पूछा।

“नहीं उस समय तो वह ब्रेन वाशिंग वाली स्थिति में था ..फिर उसे यह बात कैसे याद रहती..मगर अब बिलकुल ठीक दशा में है ..जानते हो उसने रीमा को क्यों नहीं पहचाना था?”

“बताइये ?”

“ब्रेन वाशिंग के बाद ही उसे रीमा दिखाई गई थी इसलिये जब तक वह उस दशा में रहा, रीमा की बातें करता रहा..उस दशा में जब भी उसे रीमा दिखाई जाती वह पहचान लेता जैसे तुम ने अपनी आंखों से भी देखा है कि दोनों घुटनों के बल बैठ गया था ..पूजा करने वाले भाव में और रीमा के कहने पर लेकरास पर कटार से हमले कर रहा थामगर जब ब्रेन वाशिंग वाली स्थिति समाप्त हो गयी तो वह रीमा को नहीं पहचान सका ..सारांश यह कि उस दशा में यह रीमा का दास था और हमें नहीं पहचानता था और उस स्थिति से निकल जाने के बाद हमें पहचानने लगा और रीमा को नहीं पहचान सका।”

“मगर ब्रेन वाशिंग वाली स्थिति में भी तो उसने कई बार हमें पहचाना था ?” हमीद ने कहा।

“हां ...और केवल इसलिये कि उसकी ब्रेन वाशिंग पुरना रूप से नहीं की गई थी ..अपूर्ण ब्रेन वाशिंग इसलिये की गई थी कि वह कभी कभी मुझे पहचानता रहे ..कभी कभी भूली बिसरी बातें उसे याद आती रहें और मैं उसी चक्कर में पड़ कर निकलूं और वह लोग मुझे फाँस लें।”

“ओह”.. हमीद लम्बी सांस खींच कर रह गया।

“मगर हमीद साहब ! रीमा ग्रूप के लोग बहुत ही मूर्ख साबित हुये और लेकरास तो बिलकुल ही डफर निकला। इन लोगों ने स्थानीय शिकारियों और कुछ कबालियों की खजाने के चक्कर में उलझाया था और उन्हें यह विश्वास दिलाने की कोशिश की थी कि मैं उन्हेंसमाधिस्थ खजाना निकालने से रोकना चाहता हूं।दो एक जगह की खोदाई में उन्हों ने आरंभ में ही सफलता प्राप्त कर ली थी ..अर्थात उन्हों ने सोने के पुराने सिक्के बरामद कर लिये थे मगर वह सिक्के खजाने के नहीं थे बल्कि लेकरास ने ख़ुद ही दो एक जगह गाड दिये थे ताकि वह लोग और साहस और और विश्वास के साथ उसके लिये काम करते रहें ।यह सारा षटराग इस लिये फैलाया गया था कि मुझ पर हाथ डाल कर नातुना का पता मालुम कर सके । कासिम भी घसीटा गया था ..ध्येय यह था कि मुझे चारों ओर से घेरा जा सके ..मैं भी उन्हीं की प्रणाली से काम लेता रहा और अन्त में वह ख़ुद अपने ही जाल में फँस गये।

हमीद ने उस गुफा वाली कहानी सुनाई जब रीमा ने एक हिप्नोटाइज्ड की हैसियत से उस पर कटार से वार किया था।

“मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता” विनोद बोला। “वह उन्हीं का कोई आदमी रहा होगा जिस से तुम्हें राकम मिली थी। निलनी ने अपने बयान में कहा है कि उसे और कासिम को उन गुहाओं की ओर जाने का आदेश मैथुज़ से मिला था। उन लोगों ने तुम चारों को एक जगह एकत्रित करना चाहा था और स्थिति ऐसी उत्पन्न की तुम उसे बस एक संयोग समझो ! फिर उन्हों ने सुमन नागरकर पर मौत और जिन्दगी वाला इंजेक्शन प्रयोग किया और एक आदमी इस प्रकार पीछे लगा दिया कि तुम उसे अपना ही आदमी समझो, मेरा संकेत इन्स्पेक्टर नामवर की ओर है । केवल वह आदमी ब्लैक फ़ोर्स से संबंध रखता था जिसने तुम्हारे कमरे का फोन ठीक किया था और उनका अंतिम शस्त्र जिन खां जो अपने साथी को प्राप्त करने के लिये तुम्हें अपने साथ आजाद इलाके की ओर ले जा रहा था।

जब लेकरास को सूचना मिली कि मैं ख़ुद जिन खां का पीछा कर रहा हूं तो वह मुझे घेरने के लिये निकल पडा ।उसे पता नहीं था कि ब्लैक फ़ोर्स की दो टोलियाँ उसके पीछे लगी हुई है ..अगर जिन खां के पीछे मैं न लगा होता तो लेकरास भी इस प्रकार न दौड़ पड़ता ..सारांश यह कि उधर जब मैंने जिन खां और उसके साथियों पर चट्टानों में जाल फैंकवाये थे तो इधर ब्लैक फ़ोर्स की उन दोनों टोलियों ने लेकरास और उसके साथियों को जकड़ लिया था ।मैंने लेकरास पर अपना तैयार किया हुआ एक जहर प्रयोग किया था जिससे जबड़े मींच जाते हैं इसी कारण वश उसके कंठ से उस समय आवाज नहीं निकल रही थी जब विमल उसके शरीर में कटार की नोंक चुभा रहा था।"

हमीद ने लम्बी साँस खींची और अंतरिक्ष में घूरने लगा। पता नहीं क्यों उसे रीमा पर तरस आ रहा था।

** समाप्त **

समाप्त

End